अहार क्षेत्र के अभिलेख

सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'

प्रभारी

जैन विद्या सस्थान

श्री महावीरजी (सवाईमाधोपुर) राजस्थान

प्रकाशक

डॉ० कपूरचन्द्र जैन, पठा

मत्री—श्री दि० जैन सिद्धक्षेत्र

अहारजी, टीकमगढ (म० प्र०)

प्रकाशक ·
डॉ० कपूरचन्द्र जैन पठा
मत्री-श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र
अहारजी, टीकमगढ (म०प्र०)

सपादक ·
डा० कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'
प्रभारी—जैन विद्या सस्थान,
श्री महावीरजी

प्राप्ति स्थान
मत्री कार्यालय अहार क्षेत्रीय भवन
१ किले का मैदान, टीकमगढ (म०प्र०)
२. मैनेजर दि० जैन सिद्धक्षेत्र अहारजी
टीकमगढ (म०प्र०)

सस्करण · प्रथम

ईसवी १९९५

प्रतियाँ ११००

मूल्य ४०) रुपये

मुद्रक
महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी-१०

परम श्रद्धेय पिता
स्वर्गीय श्रीमान् सेठ छोटेलाल जैन वैद्य
एव
मातेश्वरी
स्वर्गीया सुमन्त्रादेवी
को
उनकी पावन स्मृति मे
सश्रद्ध-परोक्ष
समर्पण

– **कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'**

परमपूज्य युवाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज के शुभाशीर्वचन

"शिला लेख" एक धरोहर है अतीत की वर्तमान के लिये अनागत के लिये एक साक्ष्य है प्राचीन सस्कृति का वह इतिहास है, पुरातत्त्वीय प्राण है। राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिकता का एक प्रतीक चिन्ह है। श्रद्धा और भक्ति प्रेरित करने वाली भव्य कलात्मक प्रतिभाओ का मूर्त रूप है। आराधना और साधनादायनी मूर्तियो का परिचय है मूर्तिकारक, प्रतिष्ठापक और सस्थापको का दीर्घ काल तक के लिए जनमानस मे जुडी सुख, शाति और वात्सल्यता की अनगणित एक पंक्ति है।

यदि ऐसा है तो आये हम इनके माध्यम से उन्हे देखे जिन्हे देखा नही था। उनसे अपने आपको मिलाये और फिर देखे कही अतर तो नही है यदि है तो वह क्यो, कुछ सोचे, उपाय खोजे वैसा ही बनने का साहस जुटाएँ और तदनुरूप अपने कदम उठाये।

इनकी कीमत रुपया सोना या चाँदी से नहीं की जा सकती है क्योकि वे मिटकर फिर भी पाये जा सकते है किन्तु ये अमूल्य है क्योकि मिटकर फिर नही बनाये जा सकते है। अत इस परिवर्तनीय युग मे जीर्णोद्धार के नाम पर नाम और प्रतिष्ठा के लिये प्राचीनताओ मे भी हो रहे परिवर्तन से सुरक्षा रखना अत्यत कठिन है अत उनको पुस्तकीय रूप मे प्रकाशित कर हजारो स्थानो मे या हाथो मे सौपी गयी उनकी एक सुरक्षा है।

एतदर्थ सपादक एव प्रकाशको के श्रम और विवेक के लिये मेरा शुभाशीष।

मुनिसुव्रत निर्वाण दिवस

अहार जी

फा० कृ० १२ वि० स० २०५१

२६.२ ६५

प्रकाशकीय

बुन्देलखण्ड मे द्रोणगिर, नैनागिर, कुण्डलपुर, खजुराहो, देवगढ, अहार, पपौरा, थूबौन, चन्देरी, सेरोन, बधा, वानपुर, कोनी, बहोरीबन्द, पटनागज, पटैरिया आदि अनेक तीर्थ होने से यहा की भूमि का कण-कण पवित्र है, इनमे से कुछ तीर्थ तो पर्वतो पर स्थित है एव कुछ धरातल पर।

इन पावन भूमियो पर स्थित विशाल जैनमन्दिरो और उनमे विराजमान खण्डित-अखण्डित जिनबिम्बो के अभिलेखो से ज्ञात होता है कि अतीत मे बुन्देलभूमि जैनियो की केन्द्रस्थली रही होगी।

इतिहास के क्षेत्र मे अभिलेखो का बहुत महत्त्व है। अहार तीर्थ मे उपलब्ध खण्डित एव अखण्डित मूर्तियो के लेखो मे सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा भौगोलिक आदि सामग्री समाहित होने से उन अभिलेखो को श्री प० गोविन्ददास जी कोठिया अहार द्वारा सकलन कराकर वि० स० २०१४ मे प्रकाशित कराये थे, जिसका द्वितीय सस्करण भी पुन वि० स० २०१६ मे प्रकाशित कराया गया था लेकिन वह प्रकाशन भी समाप्त हो गया था।

इसी अन्तराल मे खण्डित एव अखण्डित प्रतिमाओ की सख्या मे वृद्धि होने से व्यवस्था की दृष्टि से उन्हे विभिन्न स्थानीय मन्दिरो और श्री शान्तिनाथ सग्रहालय मे स्थ नान्तरित करना पडा। फलस्वरूप सकलन के अभिलेख के अनुसार उन्हे व्यवस्थित न रख पाने से उन प्रतिमाओ के जानने एव पहिचानने मे कठिनाइयॉ आने से प्रतिमाओ की स्थिति के अनुसार अभिलेख सकलन की आवश्यकता प्रतीत हुई।

इस कार्य के लिये सर्वप्रथम श्री बाबूलाल जी फागुल्ल वाराणसी द्वारा श्री खुशालचन्द्र जी गोरावाला वाराणसी के पास सकलन करने हेतु सामग्री भेजी गयी लेकिन उनके द्वारा सकलन तैयार न हो पाने से पुरातत्वविद् श्री नीरज जी सतना के पास भेजा गया। लेकिन उनकी अस्वस्थता के कारण सकलन न हो पाने से श्री डॉ० दरबारीलाल जी कोठिया से सम्पर्क स्थापित करने पर उन्होने इस कार्य के लिये श्री डॉ० कस्तूरचन्द्र जी "सुमन" प्रभारी जैन विद्या सस्थान श्रीमहावीर जी का नाम प्रस्तावित किया। सम्पर्क स्थापित करने पर उन्होने अपनी स्वीकृति प्रदान की एव वहॉ रहकर यह कार्य सम्पन्न किया। आदरणीय "सुमन" जी को अहार जी तीन बार आना पडा एव वहा रुककर सभी

प्रतिमाओ के अभिलेखो को पढकर सामग्री एकत्रित की, पश्चात् पूर्णविवरण सहित मन्दिरो के अनुसार सकलित किया।

अभिलेखो के मूल पाठो को प्रकाशन के पूर्व एक बार पुन पढकर मिलान कर लेना आवश्यक होने से श्री डॉ० सुमन जी के साथ श्री आदरणीय डॉ० दरबारीलाल जी कोठिया जी भी अहार जी पधारे, साथ मे श्री प० गुलाबचन्द्र जी "पुष्प" एव प० कमलकुमार जी भी पधारे। इन सभी की उपस्थिति मे प्रतिमाओ से अभिलेखो को मिलान कर पुनर्वाचना हुई जिससे यथावश्यक मूलपाठो मे परिवर्तन परिवर्द्धन किये गये। मूलपाठो के पढने मे जहा भेद प्राप्त हुआ वह भी दर्शाया गया।

डॉ० "सुमन" जी को प्रेस कापी पुन तैयार करनी पडी एव प्रस्तावना भी पुन लिखनी पडी जिससे निरतर अतिपरिश्रम कर जो यह साहित्य एव तीर्थ की सेवा की है उनका मै बहुत ही आभारी हूँ। इस प्रकाशन से पाठको को क्षेत्रीय इतिहास, जातीय इतिहास और प्रतिमाओ की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

मै आदरणीय डॉ० कोठिया जी, आदरणीय पुष्प जी एव प० कमल कुमार जी का आभारी हूँ जिन्होने अपना अमूल्य समय निकालकर इस कार्य को पूरा करने मे अपना सहयोग प्रदान किया, तथा जैन विद्या सस्थान श्री महावीर जी के अध्यक्ष एव मत्री जी और सभी पदाधिकारियो का भी आभारी हूँ, जिन्होने श्री डॉ० "सुमन" जी को इस कार्य के लिये अपने कार्य से मुक्त करके हमे सहयोग प्रदान किया। श्री बाबूलाल जी फागुल्ल वाराणसी का भी आभारी हूँ जिन्होने इस पुस्तक के सुन्दर प्रकाशन मे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

२८ ३ ९५ **कपूरचन्द्र जैन**

प्रस्तावना

चन्देलकालीन शिल्प और स्थापत्य कला की केन्द्रस्थली—अहार मध्यकाल मे जैनधर्म के उपासको का केन्द्र रही है। यहाँ उपासक प्रतिमाओ की प्रतिष्ठाये कराकर नित्य उनकी अर्चना वन्दना करके अपने धन और जीवन को सफल करते रहे हैं।

आचार्य पद्मनन्दि ने श्रावक के छह कर्तव्य बताये है, उनमे उन्होने देव-पूजा को प्रथम स्थान दिया है।[1] आचार्य कुन्दकुन्द ने दान और पूजा को छहो कर्तव्यो मे मुख्य माना है। उन्होने इन मुख्य दो कर्तव्यो का निर्वाह करने वालो को ही श्रावक सज्ञा दी है।[2] 'आचार्य जिनसेन ने भी गृहस्थो के चार धर्मो मे सत् पात्र को दान देने और प्रीतिपूर्वक अर्हन्तो (अर्हन्त-प्रतिमा) की पूजा करने को प्राथमिकता दी है।[3] चक्रवर्ती भरत ने गृहस्थो के कुल धर्मो का गृहस्थो को उपदेश दिया था, उनमे उन्होने पूजाकर्म को ही सर्वप्रथम समझाया था। पूजा के उन्होने चार भेद बताये थे। सदार्चन, चतुर्मुख, कल्पद्रुम और आष्टाह्निक।'[4]

गन्ध, अक्षत, आदि अष्ट द्रव्य अपने घर से जिन-मन्दिर ले जाकर नित्य अर्हत्-पूजा करना सदार्चन पूजा है। भक्तिपूर्वक अर्हन्त प्रतिमाओ और मन्दिरो के निर्माण तथा ग्राम आदि के दान को भी पुराणो मे सदार्चन-पूजा की सज्ञा दी है।[5] अर्हन्त-प्रतिमाये और मन्दिर पुण्य के कारण माने गये है। बताया गया है कि पुण्य बन्ध परिणामो की उत्पत्ति मे अर्हन्त प्रतिमाये और मन्दिर कारण होते है।[6]

---

१ देवपूजा, गुरुपास्ति स्वाध्याय सयमस्तप ।
दान चेति गृहास्थाना षट्कर्माणि दिने दिने पद्मनदि—पचविशतिका अधिकार ६ श्लोक ७, जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश-भाग ४ भारतीय ज्ञानपीठ ई सन् १६७३ प्रकाशन, पृ ५१।

२ दान पूजा मुक्ख सावयधम्मोण सावया तेण विणा। रयणसार गाथा ११

३ महापुराण भाग १ भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ई १६४४ पर्व ८ श्लोक १७८

४ वही भाग २, पर्व ३८, श्लोक २४-२६

५ तत्रत्यिमहो नाम शश्वज्जिनगृह प्रति।
स्वगृहान्नीयमाना अर्चा गन्ध पुष्पाक्षतादिका।
चैत्यचैत्याल्यादीना भक्त्या निर्मापण च यत्।
शासनी कृत्य दानं च ग्रामादीना सदार्चनम्॥
वही ३८, २८, २६।

अहार-सदार्थन—पूजा का मध्यकाल से ही केन्द्र रहा है। यहा के प्रतिमा लेखो मे (१/१) प्रतिमाओ और मन्दिरो के निर्माण कराये जाने के उल्लेख उपलब्ध है। प्रतिमा लेखो मे "नित्य प्रणमन्ति" वाक्यो के उल्लेख प्रतिमा की नित्य वन्दना और पूजा के प्रतीक है। श्रावको की अर्हन्त पूजा के प्रति रही श्रद्धा-भक्ति ही का फल है जो कि टीकमगढ जिले मे सर्वत्र मध्यकालीन जैन प्रतिमाये और मन्दिर प्राप्त हुए है तथा आज भी जो उपासको द्वारा श्रद्धा-भक्ति पूर्वक पूजे जा रहे है।

जिन स्थलो पर बहुत प्रतिमाये प्राप्त हुई है, अतीत मे वे जैन उपासको के विशेष स्थल रहे ज्ञात होते है। आज की भॉति उस काल मे भी वे तीर्थ ही सभवत रहे हैं। साहित्यकारो ने तीर्थ शब्द का प्रयोग अपने चाहे अनुसार किया है। आचार्य समन्तभद्र ने भगवान महावीर के शासन को सर्वोदय तीर्थ कहा है।[७] और आचार्य जिनसेन ने ससार-सागर से पार उतारने वाले को तीर्थ सज्ञा दी है।[८] कोशकारों ने तीर्थ का अर्थ नदी का घाट बताया है।[९]

इन परिभाषाओ के आलोक मे कहा जा सकता है कि जैन तीर्थ वे पुण्यस्थल है जहा ससार-सागर से पार होने का मार्ग प्रशस्त होता है। ये तीर्थ भिन्न-भिन्न प्रकार के बताये गये है। जिस क्षेत्र विशेष से तीर्थकरो का निर्वाण हुआ है, वे आज निर्वाण क्षेत्र के नाम से जाने जाते है। कैलास पर्वत, चम्पापुर, पावापुर, गिरिनार और सम्मेदशिखर ऐसे ही क्षेत्र है। जहॉ तीर्थकरो के यद्यपि कोई कल्याणक नही हुए किन्तु अर्हन्त प्रतिमाओ मे कोई आश्चर्योत्पादक घटना घटित हुई वे क्षेत्र अतिशय क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए है। कुण्डलपुर, श्रीमहावीरजी, पदमपुरा और तिजारा आदि ऐसे ही अतिशय क्षेत्र है। अहार भी एक ऐसा अतिशय क्षेत्र है। ऐसे क्षेत्रो का कण-कण पवित्र होता है क्योकि पावन वस्तु के योग से अपावन भी पावन हो जाता है।[१०] रसो के योग से जैसे

---

६. श्रृणु राजन जिनेन्द्रस्य चैत्यं चैत्यलयादि च।
भवत्यचेतन किन्तु भव्याना पुण्यबन्धने॥
परिणाम समुत्पत्तिहेतुत्वा कारण भवेत् —वही ७३, ४८, ४६।

७ सर्वोदयं तीर्थमिद तवैव। युक्त्यनुशासन कारिका ६२।

८ संसाराब्धेरपारस्य तरणे तीर्थमिष्यते। —महापुराण, वही ४/८

९ वामन शिवराम आप्टे, सस्कृत हिन्दी कोश मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी। १९८१ ई०, प्रकाशन, पृ० ४३१॥

१० पावनानि हि जायन्तेस्थानान्यपि सदाश्चयात्।

लोहा स्वर्ण बन जाता है ऐसे ही सातिशय प्रतिमाओ के योग से ये अतिशय क्षेत्र भी पूज्य बन जाते है।[११] अर्हन्त प्रतिमाओ के योग से यहा आत्मा से परमात्मा बनने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।[१२]

अतिशय-क्षेत्र

अहार क्षेत्र को अतिशय-क्षेत्र कहे जाने का आधार है–प्रचलित किवदन्ती। कहा जाता है कि सेठ शिरोमणि नाम के एक प्रसिद्ध व्यापारी इस नगर मे रहते थे एक बार इन्होने टाडा (बैलो का झुड) दक्षिण की ओर रागा लेने को भेजा था। जिस समय वह टाडा वापिस आया, उस समय देखा गया तो रागे के स्थान पर चांदी भरी हुई थी। यह देख सेठ जी ने अपने कर्मचारियो को आज्ञा दी कि हमने रागा की कीमत अदा की है, इसलिए हम इस चादी को नहीं लेते। तुम लोग इस चांदी को वापिस करके रागा ले आवो। आज्ञा की पालना हुई। लदा हुआ टाडा फिर से दक्षिण की ओर भेजा गया परतु जब वह वहाँ पहुँचा और देखा गया तो रांगा पाया गया। लाचार फिर वापिसी हुई। सेठ जी के यहा आने पर रागे ने फिर चादी का रूप धारण किया, यह देख सेठ जी ने प्रतिज्ञा की कि यह कुल द्रव्य धर्म कार्य मे लगा दूँगा। तदनुसार उन्होने यहा पर बड़ा मन्दिर बनवाकर प्रतिष्ठा कराई, गजरथ निकलवाया, ५० गज लम्बी व चौडी बेदी बनवाई, जो अब तक मौजूद है। इस प्रतिष्ठा मे लाखो जैनी इकट्ठे हुए थे।[१३]

सिद्धक्षेत्र

अतिशय क्षेत्र के कहे जाने के पश्चात् उसे सिद्धक्षेत्र घोषित किया गया। "प्राकृत चौबीस कामदेव पुराण" को आधार बनाकर प० धर्मदास जी द्वारा रचे गये हिन्दी के "चौबीस कामदेव पुराण" से तीर्थकर मल्लिनाथ के तीर्थ मे केवली मदनकुमार का और महावीर के तीर्थ मे अन्तकृत केवली श्री विष्कम्बल का इस स्थान से निर्वाण होना ज्ञात कर तथा क्षेत्र मे विद्यमान सिद्धो की गुफा और सिद्धों की टोरिया आदि ऐतिहासिक स्थलो को पाकर इसे समाज ने सिद्ध क्षेत्र

---

११ सद्भिरध्युषिता धात्री सम्पूज्येति किमद्भुतम्।
कालायसं हि कल्याणंकल्पते रसयागत ।
वही श्लोक ५।

१२ स्व० पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री, सच्चा ज्ञानरथ शीर्षक लेख अहार रजत जयंती संस्मरण अक, पृष्ठ १५

१३ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन डायरेक्टरी सन् १९१४ ई० प्रकाशन पृष्ठ २५४-२५५

होने की घोषणा की, जिसे श्री भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बई ने भी सिद्ध क्षेत्र होने की मान्यता प्रदान की।[१४]

श्री डा० दरबारीलाल जी कोठिया ने सिद्धो की गुफा और सिद्धो की टोरिया आदि स्थलो के नामकरण से साधको द्वारा यहा सिद्धपद प्राप्त किये जाने के निकाले गये निष्कर्ष को महत्वपूर्ण बताया है।[१५]

प० गोविन्ददास जी कोठिया ने इस सन्दर्भ मे अपने "अहार का प्राचीन गौरव" शीर्षक लेख मे कतिपय गाथाओ का भावार्थ दर्शाया है।[१६] इस लेख मे गाथा ५६ के भावार्थ मे विक्रम सिह कछवाहा द्वारा कोटेभाटा स्थान मे जैन मन्दिर बनवाये जाने का उल्लेख हुआ है। गाथा ६० मे यहा लुहड व्यापारी के पीतल का सोना होना बताया गया है, तथा इस द्रव्य से उस जैसवाल व्यापारी के द्वारा मन्दिर बनवाकर सात फुट ऊँची श्री आदिनाथ तीर्थकर की खड्गासन प्रतिमा फाल्गुन सुदी तीज शुक्रवार को विराजमान करवाये जाने का उल्लेख भी है। लुहड व्यापारी को श्रेष्ठी पद तथा मन्दिर को विक्रम सिह कछवाहा द्वारा दान दिये जाने की चर्चा भी की गई है।

इस सम्बन्ध मे विक्रमसिह कछवाहा का सम्वत् ११४५ का लेख द्रष्टव्य है। इस प्रशस्ति मे विक्रमसिह द्वारा जायसवाल जासु के पुत्र दाह को श्रेष्ठि पद तथा जैन मन्दिर को दान दिये जाने का उल्लेख है। इस प्रशस्ति मे काष्ठासघी आचार्य देवसेन का भी नामोल्लेख मिलता है। यह प्रशस्ति दूवकुड नामक स्थान से प्राप्त हुई थी[१७]। गाथा ५६ और ६० मे जिस कछवाहा विक्रमसिह का नाम आया है, उसे इस प्रशस्ति मे उल्लिखित कछवाहा विक्रमसिह से समीकृत किया जा सकता है।[१८]

अहार का नामकरण

इस सन्दर्भ मे तीर्थकर शान्तिनाथ की आसन पर उत्कीर्ण लेख (१/१) मे वसुहाटिका और मदनेशसागरपुर ये दो नाम उल्लेखनीय है। इस लेख से यह

१४ अहारतीर्थ स्तवनम्—वैभवशाली अहार पृष्ठ ६

१५ हमारे सास्कृतिक गौरव का प्रतीक अहार शीर्षक लेख—वैभवशाली अहार ई० १९८२ प्रकाशन, पृष्ठ १७-१८

१६ वही पृष्ठ ५७-५८

१७ एपिग्राफियाइण्डिका, जिल्द २, पृष्ठ २३२-२४०

१८ वैभवशाली अहार पृष्ठ ५७

स्पष्ट है कि चन्देलकाल मे इस नगर का नाग मदनेशसागरपुर था। प० अमृतलाल शास्त्री का अनुमान है कि मदनेशसागरपुर चन्देल राजा मदनवर्मा की राजधानी थी, और राजधानी के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने के बाद इस नगर का नाम "वसुहाटिका" रखा गया था।[१६] श्री शास्त्री जी का अनुमान तर्क सगत प्रतीत नही होता। नष्ट-भ्रष्ट हो जाने से नगर का नाम नही बदल जाता। मेरे अनुमान से 'वसुहाटिका' मदनेशसागरपुर के बाजार का नाम था। यह नाम वसु और हाट दो शब्दो के योग से बना है। वसु का अर्थ है वस्तुएँ। द्रव्य और हाट का अर्थ है बाजार। इस प्रकार शाब्दिक व्याख्या से यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 'वसुहाटिका' मदनेशसागरपुर की वह स्थली थी जहाँ वस्तुओ का क्रय-विक्रय होता था। सवत् १२०६ और सवत् १२११ के (११/२७३, ११/२६३) प्रतिमा-लेखो मे इस नगर का नाम मदनसागरपुर भी मिलता है जो मदनेशसागरपुर का सक्षिप्त नाम कहा जा सकता है। मदनेशसागरपुर और वसुहाटिका दोनो नाम एक ही प्रतिमा-लेख मे अकित होने तथा दोनो के उल्लेख का एक समय होने से भी श्री शास्त्री जी का अनुमान अबाधित सिद्ध नही होता है।

यहाँ के तालाब का नाम मदनसागर और नगर का नाम मदनेशसागरपुर, यहा के शासक मदनवर्मदेव के नाम पर रखे गये ज्ञात होते है। ये नाम राजा परमर्द्धिदेव के शासन काल मे प्रचलित थे। प्रतिमा-लेखो मे मदनवर्मदेव का नामोल्लेख नही मिला है। यह नगर मदनसागर तालाब के तट पर स्थित है। अत लगता है कि नगर के नाम मे सागर शब्द उसकी स्थिति का प्रतीक है।

नगर का अहार नाम

इस नगर का 'अहार' नाम कब विश्रुत हुआ, मदनेशसागरपुर नाम के पूर्व या पश्चात् यह अन्वेषणीय विषय है। डॉ० राजाराम जैन ने अपने एक लेख मे महाभारत (८३ १००) से अह नामक एक तीर्थभूमि का उल्लेख किया है जहॉ के सरोवर मे स्नान करने से महाभारत मे सूर्यलोक या स्वर्गलोक की प्राप्ति का होना बतलाया गया है। महाभारत मे ही 'अह' शब्द धर्मपुत्र के रूप मे भी व्यवहृत बताया गया है। डॉ जैन ने सम्भावना प्रकट की है कि 'अहार' की व्युत्पत्ति उक्त दोनो शब्दो मे से किसी एक से हुई है। उनका अनुमान है कि अहार शब्द अघहर (अहहर अहार) का परवर्ती विकसित रूप है। मदनसागर महाभारत काल का सूर्यकुण्ड है जिसका जीर्णोद्धार कराकर राजा मदनवर्मदेव ने

१६ बुन्देलखण्ड की तीन मुख्य विशेषताये शीर्षक लेख, रजत जयन्ती अक श्री शा० वि० अहार ई० सन् १९७१ प्रकाशन पृष्ठ ४५

उसका नाम 'मदनसागर' रखा और नगर का नाम मदनेशसागरपुर[२०]। इसी काल के आसपास की एक् घटना का भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है ग्वालियर के सस्थापक राजा सूरजसेन को कुष्ठ रोग हो गया था। सुहानियाँ नगर की अम्बिका देवी के पार्श्व मे स्थित तालाब मे स्नान करने से उनका कुष्ठ रोग नष्ट हो गया था। इससे प्रभावित होकर उन्होने अपना नाम शोधनपाल तथा नगर का नाम सद्धनपुर/सुधियानपुर रखा। आगे यही नाम सुहानिया या सिहोनिया हो गया।[२१]

इस उल्लेख के आलोक मे मदनसागर का पूर्व नाम सूर्यकुण्ड होने मे डॉ० जैन का अनुमान तर्कसगत प्रतीत होता है। अवश्य ही मदनवर्मदेव ने तालाब और नगर के नामो मे सशोधन किया होगा। समय ने करवट बदली। मदनवर्मदेव के पश्चात् परमर्द्धिदेव शासक बना जिसे राजा पृथ्वीराज ने पराजित किया। इसकी पराजय का सागर-ललितपुर जिले मे मदनपुर के एक मन्दिर स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख मे उल्लेख किया गया है।[२२]

इस घटना-चक्र से यह अर्थ प्रतिफलित होता है कि अहार ही इस नगर का प्राचीन नाम है, जो चन्देल मदनवर्मदेव के समय मे मदनसागरपुर नाम से विश्रुत हुआ और परमर्द्धिदेव की पराजय के पश्चात् पुन नगरवासियो ने अपने ऊपर आयी अनेक विपदाओ से रुष्ट होकर इस नगर को पुन· अहार कहना आरम्भ कर दिया जो आज भी इसी नाम से जाना जाता है।

यह भी कहा जाता है कि यहॉ एक ऐसे मासोपवासी मुनि को आहार कराया गया था जिस मुनि की गृहस्थावस्था की पत्नी आर्तध्यान से मरकर व्यन्तरी हुई थी। उसने पूर्व बैर वश मुनि की पारणा मे विभिन्न रूप से अन्तराय उत्पन्न कर मुनि को छह मास पर्यन्त निराहार रखा था। उसका बैर इस स्थली पर शान्त हुआ। मुनि को यहाँ निर्विघ्न आहार प्राप्त हुए। इस घटना की स्मृति स्वरूप नगर का नाम 'आहार' रखा गया जो कालान्तर मे 'अहार' हो गया।[२३]

क्षेत्र की खोज

वि० स० १६४० व ईसवी १८८४ मे यह स्थली एक सघन जगल के रूप

---

२० कला एव सस्कृति का सगम केन्द्र अहार वैभवशाली अहार · अहार क्षेत्र प्रकाशन, पृष्ठ ४०-४१।

२१ स्व० डॉ० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य, जैन सिद्धान्त भास्कर आरा प्रकाशन पत्रिका, भाग १५ किरण प्रथम।

२२ कनिघम रिपोर्ट जिल्द १० पृ० ६८।

२३ श्री प० बलभद्र जैन, भारत के दि० जैन-तीर्थ · भाग ३, पृ ११६-१२०।

मे थी। यहाँ हिसक प्राणियो का आवास था। उनकी बहुलता के कारण ही सम्भवतः यहाँ की पहाडियो के मुडिया, रिछारी, वन्दरोई, सुनाई, मडगुल्ला आदि नाम विश्रुत हुए। यहाँ आवागमन कम था।[२४]

ईसवी १८८४ मे एक चरवाहे से सर्वप्रथम नारायणपुर-निवासी बजाज सबदल प्रसाद को इस क्षेत्र की जानकारी प्राप्त हुई थी। आपने यह सन्देश पठा के प्रसिद्ध विद्वान् श्री भगवानदास जी के पास भेजा। सन्देश पाते ही वे आये और श्री बजाज जी से मिले। पश्चात् ग्रामीणो की सहायता से दोनो इस क्षेत्र पर गये। मशालो को लेकर गुफा मे प्रवेश किया और वहाँ विराजमान शान्तिनाथ-कुन्थुनाथ प्रतिमाओ को देखकर अति प्रसन्न हुए। इन दोनों समाजसेवियो ने कार्तिक कृष्ण द्वितीया को मेला भरने की जगह-जगह सूचनाएँ दी। फलस्वरूप मेले का शुभारम्भ हुआ और ईसवी १६२६ मे मेले के समय प्रान्तीय समाज ने क्षेत्रीय विकास के लिए एक प्रबन्ध समिति गठित की जिसमे श्री सबदलप्रसाद जी के पुत्र बजाज बदलीप्रसाद जी को सभापति तथा प० भगवानदास जी पठा के सुपुत्र स्व० प० बारेलाल जी पठा को मत्री बनाया गया। इनके कार्यकाल मे क्षेत्र का अपूर्व विकास हुआ।[२५] श्री बारेलाल जी के पश्चात् उन्ही के ज्येष्ठ पुत्र डॉ० कपूरचन्द्र जी टीकमगढ को मत्री-पद का भार सौपा गया है जिसका वे समर्पित भाव से निष्ठापूर्वक निर्वाह कर रहे है।

जैनेतरों की दृष्टि में-शान्तिनाथ

जैनों द्वारा पूजे जाने के पूर्व जैन-प्रतिमाएँ विभिन्न नामो से अजैनों द्वारा विभिन्न प्रकार से पूजी जाती रही है। बहोरीबन्द (सहोरा) की शान्तिनाथ प्रतिमा को जैनेतर खनुवादेव कहते तथा बुहारियो से पूजते थे। पर धन्य है वीतरागता। इस विधि से पूजे जाने पर भी आराधको की कामनाएँ पूर्ण हुई।[२६]

सिहोनियाँ की शान्तिनाथ तीर्थकर की प्रतिमा जैन सरक्षण के पूर्व 'चेतन' नाम से पूजी जाती थी। कहा जाता है कि मृत्यु से जूझते हुए व्यक्ति भी उक्त मूर्ति के चरणो मे पहुँचने पर स्वस्थ होकर नयी चेतना का अनुभव करने लगते है, इसीलिए इस मूर्ति का 'चेतन' नाम रखा गया है। भ० आदिनाथ की मूर्ति आज भी बदरीनाथ के नाम से पूजी जा रही है।[२७]

२४ वही, पृष्ठ १२७।

२५ वैभवशाली अहार पृ० ४६-५०, ६१

२६ मुनि कान्तिसागर, खण्डहरो का वैभव भारतीय ज्ञानपीठ काशी ई० १६५३ प्रकाशन पृ० १७।

२७. प० अमृतलाल शास्त्री, बुन्देलखण्ड की तीन मुख्य विशेषताएँ शीर्षक लेख रजत जयन्ती अक अहार, पृ० ४६।

अहार क्षेत्र की शान्तिनाथ-तीर्थकर की प्रतिमा को भी जैन संरक्षण के पूर्व जैनेतर मामा-भानजो की प्रतिमाएँ कहते थे। वे बीच की शान्तिनाथ-प्रतिमा को मामा की मूर्ति और अगल-बगल की मूर्तियो को भानजो की मूर्तियाँ मानते थे।[२८] अर्चना-बन्दना 'मृडादेव' के नाम से करते थे।[२६] ये प्रतिमाएँ जैन और जैनेतरो द्वारा समान रूप से पूजित होती रही है और आज भी पूजी जा रही है।

प्रतिमाओं का पालिश

इस क्षेत्र से अन्य उपलब्ध प्रतिमाएँ काले चिकने पालिश से युक्त है। शीत-धूप और वर्षा का सामना करते हुए भी वह पालिश आज भी यथावत् बना हुआ है। बडागाव (टीकमगढ) मन्दिर मे भी पद्मासनस्थ एक प्राचीन प्रतिमा विराजमान है। यह प्रतिमा सिर-विहीन चिकने काले पालिश से युक्त है। चन्देलकालीन है। अनुमानत इसका निर्माण अहार क्षेत्र मे ही हुआ होगा। आसन पर लेख भी है किन्तु अपठनीय हो गया है। तीर्थकर अरहनाथ की एक फुट या सवा फुट ऊँची एक प्रतिमा बीना इटावा मन्दिर की मध्य वेदी पर पद्मासन मुद्रा मे विराजमान है। आसन पर तीन पक्ति का लेख है--

१ श्री मु (मू) ल सघे वलात्कारगणे सरस्वती गछे (च्छे) कुदकुदाचार्य आ
२ मनाये सवत् १६०५ नग्र इटावौ माघ सुदी पचमी ता दिन श्री
३ जिन बिब प्रतिस्टा (ष्ठा) करापित सोमवार पचमी (११)

चिकने काले पालिश से सहित इस प्रतिमा को देखकर अहार की प्रतिमाओ की छवि का स्मरण हो आता है। सभवत अहार शिल्प-कला का केन्द्रस्थल रहा है। काले पाषाण की चिकने पालिश से सहित इतनी प्राचीन प्रतिमाएँ अन्यत्र बहुत कम है।

अन्वय

अहार क्षेत्र के जैन अभिलेखो मे प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा कराने वाले श्रावको के नामोल्लेखो के साथ उनकी जाति का नामोल्लेख भी किया है। इसके लिए अन्वय और वश दो शब्द व्यवहृत हुए है। वश शब्द सवत् १२१० लेख सख्या ११/२८८ और सवत् १२३७ लेख सख्या १/१ इन दो प्रतिमालेखो मे तथा शेष समस्त अभिलेखो मे जाति के सन्दर्भ मे 'अन्वय' शब्द आया है। जाति का नामोल्लेख प्राचीन लेखो मे प्रयोग नही हुआ है। इसका प्रमुख कारण क्षेत्र को जाति-अहकार के विष से अछूता रखना ज्ञात होता है।[३०] अभिलेखो मे

---

२८. वही, पृष्ठ ४५।

२६ डॉ० कपूरचन्द्र जैन पठा, वैभवशाली अहार पृष्ठ ५०।

३० प० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री, वैभवशाली अहार पृष्ठ १०।

जिन अन्वयो के नामोल्लेख मिलते है, वे निम्न प्रकार है--
(नोट- अभिलेख सख्या जानने के लिए देखे—अन्वय अभिलेख सूची परिशिष्ट)

अग्रोत्कान्वय

इस अन्वय के पॉच लेख प्राप्त हुए है। इनमे लेख सख्या २/२१७ सवत् १५०२ का यत्रलेख सर्वाधिक प्राचीन है। वर्तमान के भाति अतीत मे भी इस अन्वय के श्रावक जैनधर्मानुयायी रहे ज्ञात होते है। विक्रम सवत् १५७६ मे पडित माणिक्कराज द्वारा रचे गये 'अमरसेनचरिउ' अपभ्रश रचना के प्रेरक श्रावक इसी अन्वय के थे।

इसकी उत्पत्ति कवि सधारू ने अपनी रचना प्रद्युम्नचरित मे अगरोहा स्थान से होना बताया है। जनश्रुति है कि हरियाणा प्रदेश के हिसार जिले मे स्थित अगरोहा मे किसी समय अग्रसेन राजा राज्य करते थे। इस अन्वय का उद्भव उन्ही के नाम पर हुआ है। कवि बुलाकीचन्द्र ने इसका उद्भव अगर नामक ऋषि के नाम पर बताया है। लोहाचार्य ने इन्हे जैनधर्म मे दीक्षित किया था। इसके अठारह गोत्र बताये गये है वे है--गर्ग, गोयल, सिघल, मुगिल, तायल, तरल, कसल, वछिल, एरन, ढालण, चितल, मित्तल, हिदल, किधल, हरहरा, कछिल और पुरवत्या।[31]

अवध पुरान्वय

अहार क्षेत्र मे इस अन्वय के तीन प्रतिमालेख मिले है—लेख सख्या ११/३१० सवत् १२१४ सर्वाधिक प्राचीन है। शाह वख्तराम ने अपने 'बुद्धिविलास' ग्रन्थ मे अयोध्यापुरी जाति का उल्लेख किया है।[32] इससे स्पष्ट है कि मध्यकाल तक यह अन्वय अस्तित्व मे रहा। इसके बाद इस अन्वय का लोप हो गया। इसका उद्भव अवध प्रदेश से होना सभावित है।

कुटकान्वय

इस अन्वय के सवत् १२१३ का एक और सवत् १२१६ के दो, कुल तीन लेख उपलब्ध है। इन लेखो मे इस अन्वय का प्रयोग भट्टारको के साथ हुआ है। भट्टारक प्रथा का दक्षिण मे अधिक प्रभाव रहा। चित्रकूट स्थल इसका उद्भव स्थल ज्ञात होता है। ऊन (पावागिरी) से प्राप्त सवत् १२५२ के एक प्रतिमालेख मे 'चित्रकुटान्वय' का नामोल्लेख हुआ भी है।[33] अहार मे प्राप्त

---

३१ डॉ० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल, खण्डेलवाल जैन समाज का बृहद् इतिहास पृष्ठ ४९-५०।

३२ वही, पृ० ३८।

३३. अनेकान्त अप्रैल १९६९, पृ० ३१।

'कुटकान्वय' नाम चित्रकुटान्वय का सक्षिप्त नाम ज्ञात होता है। चौरासी जैन जातियों मे इसका नाम नही है। वर्तमान मे इसका कोई अस्तित्व नही है।

खण्डिलवालान्वय

इस अन्वय के यहॉ आठ प्रतिमालेख उपलब्ध है। सबसे प्राचीन लेख सवत् १२०७ का है। इस अन्वय के ७२ गोत्र होते है। इनमे कासलीवाल, बाकलीवाल, पाटौदी गोत्र खण्डेला परगने के कासली, बाकली, पाटौदी ग्रामो के नामो पर रखे गये ज्ञात होते है। इसका उद्‌भव मारवाड़ के खण्डेला नगर से माना जाता है। ये मूलत क्षत्रिय थे। किसी विशेष कारणवश ये जैनी हुए और व्यापार करने लगे।[३४]

विद्वानो की यह भी मान्यता है कि अतीत मे एक खण्डेला नाम का राज्य था। इसमे दो ग्राम स्वर्णकारो के और बियासी ग्राम राजपूतो के थे। ये सभी वैश्यवृत्ति से अपनी आजीविका चलाते थे। आचार्य जिनसेन ने इन्हे वी०नि० सवत् ६८३ मे जैन बताया था।[३५] बुद्धिविलास ग्रन्थ मे इसके सबध मे निम्न कथन मिलता है—"नगर खण्डेला मे खण्डेलगिरि राज करे। खण्डेला के गांव चौरासी लागे। त्याकै जुदा जुदा ठाकर चाकरी करे। त्याने गाव चाकरी मे दीया। सो गाव मे एक अवसर मरी पडी। लोग घणा मरिया लागा। जदि राजा बोलाव ब्राह्मण ने बूझियो यो कष्ट केम मिटे? ब्राह्मण कह्यो हे महाराज ! नरमेध यज्ञ करो ज्यू कष्ट मिटे। तब राजा सौ मुनि नै जग्यकुण्ड मे होम्या। तद् उपद्रव मरी को फेर-फेर विशेष हुय उठो। तब जिनसेन आचार्य जो वनमाहि सु नगर के क्लेश जाया ध्यान दीयो और श्री देवी को आराध कियो। सो वै गुढा मे स्वात हुई। तब राजा बियासी गाव का तो राज और सुनार दोय मुनि समीपे थाप्यो। सो मुनि को वचन प्रमाण कियो-----।[३६] खण्डेला नगर राजस्थान के सीकर जिले मे सीकर से ४५ किलोमीटर दूर स्थित है।[३७]

गर्गराटान्वय

इस अन्वय के सवत् ११६६ के दो अभिलेख मिले है। चौरासी जैन जातियो मे इसका उल्लेख नही हुआ है। यह अग्रोत्कान्वय का एक गोत्र अवश्य रहा है। इस अन्वय का नामकरण इसी गोत्र के नाम पर हुआ ज्ञात होता है।

---

३४. प० गोपालदास वरैया स्मृति ग्रन्थ सागर ईसवी १९६७ प्रकाशन, पृष्ठ २०१।

३५ बाबू कामताप्रसाद जैन, जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ३ पृ० ३८।

३६ जैन सन्देश : शोधाक १३, पृ० ८१-८३।

३७ खण्डेलवाल जाति का बृहद् इतिहास।

वर्तमान मे यह गोत्र ब्राह्मण और वैश्य दोनो वर्णो मे पाया जाता है। अग्रवाल-गर्ग अतीत मे किसी राजकुल से संबधित रहे है। सभवत यही कारण है कि उन्हें राट् शब्द से सम्मानित किया गया है।

गृहपत्यन्वय

इस अन्वय के पन्द्रह अभिलेख हैं। कोछल इस अन्वय का गोत्र है। इसका उल्लेख खजुराहो के संवत् १२०५ के एक अभिलेख मे भी व्यवहार हुआ है। पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री ने 'गहोई' जाति को इसी अन्वय का अपभ्रश रूप बताया है।[३८] डॉ० दरबारीलाल कोठिया ने भी इस अन्वय को ही कालान्तर मे गहाई कहे जाने का अनुमान लगाया है।[३९] शाह वखतराम ने अपने बुद्धिविलास ग्रन्थ मे इसे जैनो की चालीसवी जाति कहा है।[४०] अतीत मे इस अन्वय के श्रावक जैनधर्मावलम्बी थे। किसी घटना विशेष से बाद मे ये वैष्णवधर्मावलम्बी हो गये।

गोलापूर्वान्वय

इस अन्वय के सर्वाधिक छियानबे अभिलेख अहार क्षेत्र से प्राप्त हुए है। सर्वाधिक प्राचीन लेख सवत् १२०२ का है। सवत् ११४६ के दो प्रतिमालेख उर्दमऊ (छतरपुर) से मिले है। ये प्रतिमाएँ वर्तमान मे छतरपुर म० प्र० के डेरा पहाडी दिगम्बर जैन मन्दिर मे विराजमान है।[४१] उर्दमऊ से ही इसी अन्वय की एक प्रतिमा पद्मप्रभ तीर्थकर की सवत् ११७१ की भी प्राप्त हुई है।[४२] शान्तिनाथ की एक बहोरीबन्द (जबलपुर) म० प्र० मे भी प्रतिमा है। इसके लेख मे इस अन्वय का नामोल्लेख है। इस लेख मे अकित सवत् सूचक पूरे नही पढे जा सके। श्री कनिंघम ने प्रथम दो अक १० बताये थे। अतिम दो अको का शिलाखण्ड टूटा हुआ है। इस लेख मे राजा गयाकर्णदेव का नामोल्लेख हुआ है। चेदि सवत् ६०२ ईसवी ११५१ के त्रिपुरी (जबलपुर) से प्राप्त एक लेख मे गयाकर्णदेव को यश·कर्णदेव का पुत्र बताया गया है।[४३] अतः कहा जा सकता है

---

३८. वैभवशाली अहार पृ० १६।

३९ वही, पृ० १६।

४० खण्डेलवाल जैन समाज का बृहद् इतिहास भाग १, पृ० ३६।

४१ पं० कमलकुमार जैन जिनमूर्ति-प्रशस्तिलेख श्री दिगम्बर जैन बड़ा मदिर छतरपुर म० प्र० प्रकाशन, पृष्ठ ६।

४२. श्री नीरज जैन, अहिसा वाणी : वर्ष १३, अक ८-६।

४३. आत्रेय गोत्रेऽखिल राजचन्द्र जिगीषु राजोजति कर्ण्णदेवः।
तस्माद्यशःकर्ण नरेश्वयोऽभूत्तस्यात्मजोऽयं गयकर्ण्णदेवः ॥

बहोरीबन्द प्रतिमालेख का संवत् न कलचुरि संवत् है और न ही विक्रम सवत्। इसमे शक सवत् का व्यवहार हुआ है। शक सवत् से गणना करने पर इस लेख के टूटे हुए सवत् सूचक अक ४७ ज्ञात होते है और यह लेख शक सवत् १०४७ ईसवी ११२४-२५ समझ मे आता है।

इस अन्वय के अहार क्षेत्र के सिवाय और भी अन्य स्थलो पर प्रतिमालेख प्राप्त हुए है। कुछ निम्न प्रकार है--

१.	ऊर्दमऊ (छतरपुर)	ईसवी	१०६२	२
२	"	"	१११४	१
३	बहोरीबन्द (जबलपुर)	"	११२४	१
४	जतारा (टीकमगढ)	"	११४२	१
५	मऊ (धुबेला सग्रहालय)	"	११४२	२
६.	छतरपुर	"	११४५	१
७	पपौरा (टीकमगढ)	"	११४५	२
८	मऊ (धुबेला सग्रहालय)	"	११४६	१
९.	नावई (ललितपुर)	"	११४६	१
१०	छतरपुर	"	११४८	१
११	सोनागिरि (दतिया)	"	११५६	१
१२	क्षेत्रपाल ललितपुर	"	११८६	२
				१६

स्व० प० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ने बहोरीबन्द प्रतिमालेख मे उल्लिखित राष्ट्रकूट महासामताधिपति गोल्हणदेव को उत्तरकाल मे मुनि पद अगीकार करके गोल्लाचार्य नाम से प्रसिद्ध हुए बताया है।[४४] इस नाम के आचार्य दक्षिण मे हुए है।[४५] लेख क्रमाक ४७ का समय शक सवत् १०३७ ईसवी १११४ और लेख क्रमाक ४० का समय शक सवत १०८५ ई० ११६२

श्री मिराशी, इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि कलचुरि चेदि एरा जिल्द ४, भाग १, पृष्ठ ३०६।

४४ जिममूर्त्ति-प्रशस्तिलेख . वही, प्रस्तावना।

४५ इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्री मूलसघे ततो
जाते नन्दिगण प्रभेदविलसद्देशी गणे विश्रुते।
गोल्लाचार्य इति प्रसिद्ध मुनियोऽभूद्गोल्लदेशाधिप.
पूर्व्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षा गृहीत्सुधी ॥ १३ ॥
वीरणन्दिविवुधेन्द्र सन्ततौ· नूलचदिल नरेन्द्र वशचूडामणिः

बताया गया है। देशीगण का उल्लेख इन लेखो मे भी हुआ है और बहोरीबन्द लेख मे भी। लगता है समय की समकालीनता और गण के समान उल्लेख को ध्यान मे रखकर उन्होने ऐसा कहा है। बहोरीबन्द प्रतिमालेख मे उल्लिखित गोल्हणदेव को राष्ट्रकूट कुल मे उत्पन्न महासामन्ताधिपति बताया गया है जबकि गोल्लाचार्य को गोल्ल देशाधिप और नूलचन्दिलनरेन्द्रवशचूडामणि कहा गया है। अत श्री शास्त्री जी का अनुमान तर्कसगत प्रतीत नही होता। इन गोल्लाचार्य से उसी को समीकृत किया जा सकता है जो चन्देलवशी राजाओ मे यशस्वी रहा हो तथा जिसने गोल्लदेवा का स्वामित्व प्राप्त किया हो। साथ ही उसका ईसवी ११९४ के पूर्व राज्य शासन से मुक्त हो जाना भी आवश्यक है। मैंने अपने एक लेख मे चन्देल मदनवर्मा का गोल्लाचार्य होना बताया है,[४६] किन्तु उसका शासन काल ईसवी ११२६ से ईसवी ११६३ माना जाने से उक्त कथन निराबाध सिद्ध नही होता है। मदनवर्मा के पूर्ववर्ती राजा जयवर्मा के भी गोल्लाचार्य होने की सम्भावना की गई है,[४७] किन्तु इसका नाम भी समय की दृष्टि से ठीक प्रतीत नही होता। चन्देल इतिहास मे कीर्तिवर्मन का नाम उल्लेखनीय है। इसका समय ईसवी १०७५ से १०६७ तक का बताया गया है।[४८] इसके मत्री वत्सराज ने एक किले का निर्माण कराया था, जिसका नाम उसने इसी राजा के नाम पर कीर्तिगिरि रखा था। देवगढ के ईसवी १०६७ के लेख मे इस राजा को धर्मपरायण कहकर उसकी कीर्ति का उल्लेख किया गया है—[४९]

तस्माद् धर्म्मपर श्रीमान् कीर्तिवर्म्म नृपोऽभवत्।
यस्य कीर्ति सुधांशुभ्रे त्रैलोक्यं सौधतामगात्॥

इस लेख से ज्ञात होता है कि राजा कीर्ति वर्मन ने ईसवी १०६७ मे शासन की बागडोर मत्रियो को सौप दी थी, तथा स्वय राज्य शासन से मुक्त हो गया था। सभवत यह इतना अधिक प्रतापी था कि उसे सुरक्षार्थ किसी

प्रथित गोल्लदेशभूपालक किमपि कारणेन स ॥१४॥
जैन शिलालेख सग्रह · भाग १, ज्ञानपीठ प्रकाशन, ले० स० ४० और ४७।

४६ सरस्वती-वरदपुत्र प० वशीधर व्याकरणाचार्य अभिनन्दन ग्रन्थ व्यक्तित्व तथा कृतित्व · पृ० ३७।

४७ प्रो० यशवन्तकुमार मलैया, वही, पृ० ११५।

४८ अनेकान्त . वर्ष ४६, कि० ३ पृष्ठ १३।

४९ डॉ० भागचन्द्र जैन, देवगढ की जैनकला · परिशिष्ट दो, अभि० क्र० २, पृ० १६१।

किले मे रहने की आवश्यकता नही हुई। उसके अभाव में मंत्री वत्सराज ने दुर्ग बनवाया। इस राजा के समकालीन कवि श्रीकृष्ण मिश्र ने अपनी रचना प्रबोधचन्द्रोदय नाटक मे इस राजा की प्रतापी वृत्ति का निम्न प्रकार विवरण दिया है—[५०]

नीताः क्षयं क्षितिभुजो नृपतेर्विपक्षा, रक्षावती क्षितिरभूत प्रथितैरमात्यैः।
साम्राज्यमस्य विहितं क्षितिपालमौलिमालार्चितं भुवि पयोनिधि मेखलायाम्॥

इस राजा ने चन्देल विद्याधरदेव के समय से ह्रास होती हुई चन्देल शक्ति को पुनर्गठित किया था। चन्देल राज्य की स्थिति सभल गई थी।

लेख में इस राजा द्वारा राज्य त्याग किये जाने के बाद राज्यमंत्री द्वारा सचालित किया जाना बताया गया है किन्तु राज्य क्यों इसने त्यागा ? इसका कारण दर्शाने मे इतिहास मौन है। धर्मपरायणता और कुल परम्परा से प्राप्त जैनधर्म की शिक्षाओ/धार्मिक अनुष्ठानो का गहरा प्रभाव इस राजा के हृदय मे अकित रहा है। किसी घटना विशेष से इसे वैराग जागा। इसने वैरागवश राज्य त्याग दिया और दक्षिण की ओर चला गया। प्रबोधचन्द्रोदय सस्कृत नाटक का इसके शासनकाल मे लिखा जाना और उसका राज सभा मे खेला जाना राजा के सस्कृत और सस्कृति के स्नेह एव बोध का परिचायक है। सभवत कीर्तिवर्मन् विद्वान् भी था। दक्षिण जाने और वहाँ दीक्षित होने पर इस राजा के बुद्धिकौशल तथा सयम को देखकर इन्हे सभवत इनके गुरु ने आचार्य पद देकर सम्मानित किया हो तथा गोल्ल देश के स्वामी रहने के कारण इनका नाम गोल्लाचार्य रखा हो।

चन्देल विद्याधर देव के समय से विघटित एव क्षीण हुई शक्ति को सयोजित करने वाले ये ही प्रथम शासक थे। हो सकता है इसलिए लेख मे इन्हे ही 'नूलचंदिलनरेन्द्रवशचूडामणि' कहा गया हो तथा इनका राज्य गोल्लदेश के नाम से प्रसिद्ध रहा हो।

गोलापूर्वान्वय की कवि वख्तराम के बुद्धिविलास ग्रथ में दर्शाई गई चौरासी जैन जातियो मे सर्वप्रथम गणना की गई है।[५१] श्री नवलशाह ने वि० सं० १८२५ में रचे गये अपने वर्द्धमान पुराण में इस अन्वय की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे अपने विचार निम्न प्रकार प्रकट किये है—[५२]

---

५०. वही, पृ० ५।
५१. जैन सन्देश-शोधाक २५ पृ० १७।
५२. गोलापूर्व डायरेक्टरी · वी० नि० स० २४६८ प्रकाशन, पृ० क।

तिनमें गोलापूर्व की उत्पत कहूँ बखान।
सम्बोधे श्री आदि जिन, इक्ष्वाकुवंश परवान॥ ५॥
गोयलगढ के वासी वैस आये जहाँ श्री आदि जिनेश।
चरणकमल प्रणमे धरि शीश, अरु स्तुति कीनी जगदीश॥ ६॥
तब प्रभु कृपावन्त अति भये, श्रावक व्रत तिनहू को दये।
क्रियाचरण की दीनी सीख, आदर सहित गही तिन सीख॥ ७॥
पूरब थापे नेत जु येह, गोयलगढ थानक तिन गेह।
ताते गोलापूरब नाम, भाषो श्री जिनवर अभिराम॥ ८॥

इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि इस अन्वय के श्रावक मूलत वैश्य थे। वे गोयलगढ के निवासी थे। गोयलगढ सभवत वर्तमान ग्वालियर है। वे सब ग्वालियर किले मे आदिनाथ प्रतिमा के पास एकत्रित हुए जहॉ सभवत· कोई दिगम्बर मुनि पधारे थे। मुनि ने इस वैश्य समुदाय को सम्बोधते हुए उन्हे प्रथम तीर्थकर जिनेन्द्र आदिनाथ के इक्ष्वाकुवश का बताया तथा उपदेश दिया। वैश्य समुदाय ने श्रावक के व्रत ग्रहण किये। इनमे जो गोयलगढ के पूर्व मे स्थापित हुए उन्हे गोलापूर्व सज्ञा दी गई।

गोलाराडान्वय

इस अन्वय के आठ लेख उपलब्ध है। इनमे सवत् १२३७ का ले०स० ११/३२६ सर्वाधिक प्राचीन है। पन्द्रहवी सदी के विद्वान ब्रह्म जिनदास ने चौरासी जैन जातियो मे इस अन्वय को भी लिया है।

ग्रन्थ प्रशस्तियो में इस अन्वय के गुललाड, गोलराडिय, गोललाडयउ आदि नाम मिलते है।[५३] मूल नाम गोलाराट् है। इसमे दो शब्द सयोजित है-गोला और राट्। गोला-गोल्लदेश और राट् राजकीय सबध का सूचक ज्ञात होता है। गोल्लदेश बुन्देलभूमि का ही सभवत· एक प्रदेश रहा है। गोयलगढ सभवतः अतीत मे गोल्लदेश मे ही था। गोलापूर्व और गोलाराड दोनो अन्वय गोयलगढ की देन ज्ञात होते है। इस अन्वय के श्रावक भी सभवत जब गोयलगढ को छोडकर अन्यत्र जाने लगे तो उन्हे राजकीय सम्मान देकर सभवत रोका गया और उन्हे गोलाराड सज्ञा दी गई तथा उन्हे वापिस गोयलगढ लाया गया। वापिस लाये जाने से उन्हे गोलालाये कहा गया जो कालान्तर मे 'गोलालारे' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस अन्वय के श्रावक आज भी ग्वालियर और उसके समीपवर्ती भिण्ड जिले में बसे हुए हैं। इस अन्वय के अनेक विद्वान् जैनधर्म की सेवा कर रहे है।

---

५३ प० परमानन्द शास्त्री, जैनग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह · भाग २, वीर सेवा मन्दिर दरियागज, देहली प्रकाशन, पृ० १२६-१३३।

जयसवालान्वय

इस अन्वय के अहार क्षेत्र से चौदह अभिलेख प्राप्त हुए है। सर्वाधिक प्राचीन लेख संवत् १२०० का ले०सं० ११/२४६ है। इस अन्वय का प्राचीनतम उल्लेख सवत् ११४५ का दूबकुण्ड प्रशस्ति से मिला है। इसमे इस अन्वय को वणिग् वंशज कहा गया है। अत ज्ञात होता है कि मूलत· यह अन्वय भी वैश्य था। इसका उदय जायसपुर से हुआ था।[५४]

यह अन्वय दो भागो मे विभाजित है। एक का नाम तिरोतिया और दूसरे का नाम उपरोतिया है। इनमे उपरोतिया काष्ठासघी तथा तिरोतिया मूलसघी होते है।[५५] कवि बुलाकीचन्द्र के अनुसार जैसलमेर भी इस अन्वय का उद्भव स्थल रहा है। अत लगता है उपरोतिया जायसवाल जायसपुर के मूल निवासी थे और तिरोतिया जैसलमेर के। ग्वालियर, आगरा, मुरैना मे उपरोतिया जैसवालों का आज भी बाहुल्य है। भोपाल के नेमिनाथ जिनालय की मूल नायक प्रतिमा सवत् १२६४ वैसाष सुदि १२ बुधवार को इसी अन्वय के श्रावको द्वारा प्रतिष्ठित कराई गई थी। सवत् १३१६ मे नलपुर (नरवर) मे इसी अन्वय के श्रावको ने एक सुन्दर जिनालय बनवाया था। सवत् ११६० मे जैसवाल साहू नेमीचन्द्र ने कवि श्रीधर से वर्द्धमानचरित की रचना कराई थी। कवि लक्ष्मणदेव और देल्ह इसी अन्वय के भूषण थे।[५६] अमरसेनचरिउ के रचयिता कवि माणिक्कराज इसी अन्वय के थे।[५७]

परवरान्वय

इस अन्वय का एक प्रतिमालेख सवत् १२०२ का मिला है। इसकी लेख सख्या ११/२५२ है। यह प्रतिमा कुड़ीला ग्राम से प्राप्त बताई गई है।

कुडीला से ही एक प्रतिमा ऐसी भी क्षेत्र मे लाई गई है जिसके पीठ लेख मे सवत् ११६६ तथा अन्वय का नाम परवाड अकित है। सवत् १३१६ की भीमपुर प्रशस्ति पक्ति स० २८ मे भी परवाड कुल का नामोल्लेख हुआ है। अहार क्षेत्र मे ही महिषणपुर से प्राप्त सवत् ११६६ के ले०स० ११/२४५ और

---

५४. आसीज्ञायस पूर्व्वनिर्गतवणिग्वशावराभी शुभान्।
जासूक· प्रकटाक्षतार्थनिकर· श्रेष्ठी प्रभाधिष्ठित ॥
एपि० इण्डिका जिल्द २, पृ० २३२-२४०।

५५. खण्डेलवाल जैन समाज का बृहद् इतिहास पृ० ५३।

५६ वही, पृ० ५४।

५७. डॉ० कस्तूरचन्द्र 'सुमन' सम्पादित एव अनेकान्त विद्वत् परिषद् सोनागिर म० प्र० प्रकाशन।

मंदिर-एक—शान्तिनाथ-मंदिर

लेख संख्या १/१

शान्तिनाथ-प्रतिमा लेख

मूलपाठ

१ ओं नमो वीतरागाय ॥ ग्र (गृ) हपनिवशसरोरुह
सह (कमल-पुष्प) स्र रस्मि (रश्मि) सहस्रकूटं य ।
वाणपुरे व्यधिताशी (सी) त्स्री (श्री) मानि—

२ ह देवपाल इति ॥ १ ॥ श्री रत्नपाल इति तत्तनयो (कमल-पुष्प) वरेण्य
पुण्यैकमूर्त्तिरभवद्वसुहाटिकाया (म्)। कीतिर्ज्जग त्र (य) —

३ परिभ्रमणस्र (श्र) मार्त्ता यस्यस्थिराजनि जिनायतन (कमल-पुष्प)
च्छलेन ॥ २ ॥ एकस्तावद नूनवृद्धि निधिना शरी (श्री) शान्ति चैत्या ल —

४ यो दिष्ट्या (दृष्ट्या) कद पुरे पर पग्नरानद (नन्द) प्रद शरी (श्री) मता।
येन शरी (श्री) मदनेस (श) सा (कमल-पुष्प) गरपुरे तज्जन्मनो निर्म्मिमे
मोय (सोऽय) शं (श्रे) ष्ठि वरिष्ठ गल्हण इति शरी (श्री) रल्हणख्याद—

५ भूत् ॥ ३ ॥ तस्मादजायत कुलाम्वर पूर्णचद्र (चन्द्र) शरी (श्री)
जाहडस्तदनुजाद (कमल-पुष्प) य चद्र (चन्द्र) नामा। एक परोपकृति हेतु
कृतावतारो धर्म्मात्मक पुनरमो—

६ घ सुदानसार ॥ ४ ॥ ताभ्यामसे (शे) प दुरितोघ स (श) मेक हेतु (तु)
निर्म्मा (कमल-पुष्प) पित भुवनभूषण भूतमेतत्। शरी (श्री) शान्ति
चैत्यमनि (मिति) नित्य सुखप्रदा- (ना)।

७ (तु) मुक्ति शिर (श्रि) यो वदनवीक्षण लोलुपाभ्याम् ॥ ५ ॥ छ छ छ ॥
(कमल-पुष्प) सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु) क्रे स्री (श्री)
मत्परमाडिदेव विजय राज्ये—

८ (च)द्र (चन्द्र) भास्करसमुद्रतारका यावदत्र जनचित्तहारका । धर्म्म का
(कमल-पुष्प) रिकृत सु(शु)द्धकीर्त्तनं। तावद (दे)
वजयतात्सुकीर्त्तनम् ॥ (६६) ॥

९ वाल्हणस्य सुत श्री मान् रूपकारो महामति । पा (कमल-पुष्प) पटो वास्तु
मा (शा) स्त्रज्ञस्तेन विव (विम्ब) सुनिर्म्मित (तम्) ॥ (७) ॥

पाठ-टिप्पणी

१ अनुनासिक न और म वर्णो के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग भी हुआ है।

२ श के स्थान मे स और स के स्थान मे श वर्ण का प्रयोग भी हुआ है।

३ श्री तीन प्रकार से लिखा गया है— श्री, शरी और स्री।

४ ई स्वर की मात्रा वर्ण के ऊपर घुमाकर अकित की गयी है, उसे वर्ण की ऊपरी रेखा से सयुक्त नहीं किया गया है।

५ र वर्ण मे 'उ' स्वर अन्य वर्णो के समान नीचे सयुक्त किया गया है।

६ ए स्वर की मात्रा के लिए वर्ण के पहले एक खडी रेखा का व्यवहार हुआ है।

७ स वर्ण मे र का योग दायी ओर के हिस्से मे हुआ है।

८. ध और च वर्ण व वर्ण की आकृति लिए है।

९ ण वर्ण ल वर्ण की आकृति लिए है।

१० पॉचवे पद्य के अन्त मे एज शब्द उत्कीर्ण है जिसकी अर्थ सगति ज्ञात नहीं होती।

११ सरेफ वर्ण द्वित्व वर्ण मे अकित है।

छन्द परिचय

प्रथम श्लोक मे आर्या छन्द है। दूसरे, चौथे और पाचवे श्लोक मे वसन्ततिलका, तीसरे मे शार्दूलविक्रीडित, छठे श्लोक मे रथोद्धता और सातवे श्लोक मे अनुष्टुप छन्द है।

भावार्थ

१ वीतराग (देव) के लिए नमस्कार (है)। जिन्होने बानपुर मे सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया है वे गृहपति-वश रूपी कमलो को प्रफुल्लित करने के लिए सूर्य स्वरूप देवपाल यहाँ (इस नगर में) हुए।

२ उनके रत्नपाल नामक श्रेष्ट पुत्र वसुहाटिका नगरी मे पवित्रता की एक मूर्ति हुए, जिसकी कीर्ति तीनो लोको मे परिभ्रमण करने के श्रम से थककर जिनायतन के बहाने स्थिर हो गई।

३. श्री रल्हण के श्रेष्ठियो मे प्रमुख श्रीमान् गल्हण का जन्म हुआ जो समग्रबुद्धि के निधान थे और जिन्होने (कन्दपुर) मे श्री शान्तिनाथ भगवान का एक चैत्यालय बनवाया था, इतर सभी लोगो का आनन्द देने वाला दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान श्रीमदनेशसागरपुर मे बनवाया था।

४ उनके कुलरूपी आकाश के लिए पूर्णचन्द्र के समान श्री जाहड उत्पन्न हुए। उनके छोटे भाई उदयचन्द्र थे। उनका जन्म प्रधानता से परोपकार के लिए हुआ था। वे धर्मात्मा और अमोघदानी थे।

५ मुक्तिरूपी लक्ष्मी के मुखावलोकन के लोलुपी उन दोनो भाइयो के द्वारा समस्त पापो के क्षय का कारण, पृथिवी का भूषण-स्वरूप शाश्वत-सुख को देनेवाला श्री शान्तिनाथ भगवान का बिम्ब निर्मित कराया गया।

सँवत् १२३७ अगहन सुदी ३, शुक्रवार, श्रीमान् परमर्द्धिदेव के विजय राज्य मे–

६ इस लोक मे जब तक चन्द्रमा, सूर्य, समुद्र और तारागण मनुष्यो के चित्तो का हरण करते है तब तक धर्मकारी का रचा हुआ सुकीर्तिमय यह सुकीर्त्तन विजयी रहे।

७. वाल्हण के पुत्र महामतिशाली मूर्ति-निर्माता और वास्तुशास्त्र के ज्ञाता श्रीमान् पापट हुए। उनके द्वारा इस प्रतिमा की रचना की गयी।[1]

प्रस्तुत प्रतिमा-लेख में उल्लिखित नगर

वाणपुर–प्रस्तुत प्रतिमालेख की प्रथम पक्ति मे इस नगर का नामोल्लेख हुआ है तथा गृहपति वश के श्रीमान् देवपाल के द्वारा यहॉ सहस्रकूट चैत्यालय निर्मित कराया जाना बताया गया है। यह स्थान टीकमगढ से ग्यारह कि०मी० दूर पश्चिम मे आज भी विद्यमान है। दिनाक १५ ११ ६० के प्रात डॉ० नरेन्द्रकुमार जी टीकमगढ के सौजन्य से उनके साथ स्वय जाकर सहस्रकूट चैत्यालय देखा है। लगता है यह चैत्यालय सात भागो मे विभाजित रहा है। ऊपरी भाग सभवत नही है। पश्चिम की ओर के ऊपर से नीचे तक के छहो भागो मे क्रमश २३, ६३, ६४, ४३, ३३ और १३ कुल २३६ प्रतिमाएँ है। पूर्व की ओर भी प्रतिमाओ की रचना इसी प्रकार है। दक्षिण मे भी कुल २३६ प्रतिमाएँ है किन्तु उत्तर की ओर छहो भागो मे ऊपर से नीचे की ओर क्रमश २३, ६७, ६४, ३१, ३, और १३ कुल २०७ प्रतिमाएँ है। चारो दिशाओ की कुल ६२४ प्रतिमाएँ आज भी विद्यमान है। शेष ६४ प्रतिमाएँ ऊपरी सातवे भाग मे चारो दिशाओं मे १६-१६ रही है। यह पाषाण-खण्ड अब नही है।

पूर्व और दक्षिण की ओर मध्य मे विराजमान मुख्य प्रतिमा के ऊपर पॉच फणवाला सर्प अकित है जिससे वे प्रतिमाएं तीर्थकर सुपार्श्वनाथ की ज्ञात होती है। पश्चिम में चन्द्रप्रभ और उत्तर मे नेमिनाथ तीर्थकरो की प्रतिमाएं है। बायी ओर दो पक्ति का लेख है–

१- गागलि---पीहिणि वाहिणि २---अपठनीय। दायी ओर एक पक्ति का लेख है जिसमे सवत् १००६ पढने मे आया है।

यहॉ आदिनाथ भरत और बाहुबली की प्रतिमाएँ भी है। आदिनाथ प्रतिमा की दायी ओर बाहुबलि और बायी आर भरत-प्रतिमा है। एक फलक पर आदिनाथ प्रतिमा सहित ५३ प्रतिमाएँ अकित है। यह फलक ५२ जिनालयो का प्रतीक ज्ञात होता है। यहॉ का पुरातत्त्व दर्शनीय है।

---

१ अनेकान्त वर्ष ६, किरण १० पृष्ठ ३८४-३८५ से साभार।

वसुहाटिका : शान्तिनाथ प्रतिमालेख मे इस नगर का उल्लेख लेख की दूसरी पक्ति मे हुआ है। गृहपति वश के देवपाल के पुत्र रत्नपाल ने इस नगर मे एक जिनायतन का निर्माण कराया था।

नगर के नाम से ध्वनित होता है कि यह मुख्य नगर का वह केन्द्रस्थल था जहाँ बाजार लगता था। बहुमूल्य वस्तुएं उस बाजार मे क्रय-विक्रय के लिए आती थी। वसुहाटिका—वसु और हाट दो शब्दो के योग से बना है। वसु का अर्थ सामान्यत धन तथा हाट का अर्थ बाजार होता है। इस शाब्दिक अर्थ के परिप्रेक्ष्य मे उक्त मतव्य तर्कसगत प्रतीत होता है। यह मदनेशसागरपुर का हृदयस्थल रहा होना चाहिए।

श्री प० अमृतलाल शास्त्री के अनुसार चन्देल मदनवर्मदेव की राजधानी मदनेशसागरपुर के नष्ट-भ्रष्ट किये जाने के बाद उसका यह नाम रखा गया था।[१]

प्रतिमालेख मे इस स्थान मे मन्दिर निर्माण कराये जाने की चर्चा के तुरन्त बाद मदनेशसागरपुर मे शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाये जाने का उल्लेख होने से दोनो स्थल समकालीन प्रमाणित होते है। अत श्री शास्त्री जी का कथन तर्कसगत प्रतीत नही होता। वसुहाटिका तथा वहाँ बनवाये गये मदिर की खोज होनी चाहिए।

मदनेशसागरपुर—इस नगर का उल्लेख प्रतिमालेख की चतुर्थ पक्ति मे हुआ है। रल्हण का पुत्र गल्हण यहाँ का निवासी था, उसके द्वारा इस अपने जन्म स्थान मे शान्तिचैत्यालय बनवाय जाने का प्रतिमालेख मे उल्लेख है। वर्तमान मे यह मन्दिर जहाँ स्थित है उसे अहार कहते है। अत प्रतीत होता है कि अतीत मे अहार का ही अपर नाम मदनेशसागरपुर था। अहार के तालाब का नाम मदनसागर विश्रुत होने से भी अनुमान लगाया जा सकता है। यह वसुहाटिका का समीपवर्ती नगर रहा है। सभवत वसुहाटिका मे हुए मन्दिर निर्माण के प्रभाव से प्रभावित होकर यहाँ गल्हण ने मन्दिर बनवाया होगा।

नन्दपुर—इस नगर का उल्लेख प्रतिमालेख की चतुर्थ पक्ति मे हुआ है। रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा यहाँ एक शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाये जाने का प्रतिमालेख मे उल्लेख किया गया है।

सम्प्रति यह नगर कहाँ है? यह खोज का विषय है। अहार के पास नारायणपुर ग्राम है। यहाँ प्राचीन मन्दिर भी है किन्तु प्राचीन प्रतिमाओ की वहाँ स्थिति नहीं है।

---

१ अहार रजत जयन्ती सस्मरण अक, ई० १९७१, पृ० ४५।

प्रतिष्ठाचार्य प० गुलाबचन्द्र 'पुष्प' से अगस्त १६६३ मे भेट हुई थी। इस समय उन्होने बताया था कि झासी से सोजना मार्ग पर सोजना से चार किलोमीटर उत्तर-पूर्व कोण मे एक नावई नामक स्थल है। इसे आज नवागढ कहते है। यहाँ भग्नावस्था मे एक शान्तिनाथ प्रतिमा है। उसकी अवगाहना लगभग सात फुट है।

कुन्थुनाथ–अरहनाथ की प्रतिमाएँ भी भग्नावस्था मे वहाँ विराजमान है। यहाँ एक स्तम्भ पर रल्हण-गल्हण के नाम भी उत्कीर्ण है। यह ग्राम यादवो की बस्ती है। श्री प० जी का अनुमान है अतीत मे इसे नन्दपुर कहा जाता रहा है। कालान्तर मे नाम मे परिवर्तन हुआ और इसे नावई कहा जाने लगा। तत्पश्चात् इसका नाम नवागढ विश्रुत हुआ। यादवो का बाहुल्य आज भी यह रहस्य अपने अन्तर मे लिये है।

श्री प्रतिष्ठाचार्य के कथनानुसार नगर मे अहार क्षेत्र के समान शान्ति कुन्थु अरह तीर्थकरो की प्रतिमाओ के विद्यमान होने तथा स्तम्भ पर रल्हण गल्हण के नाम उत्कीर्ण मिलने से नवागढ को नन्दपुर से समीकृत किया जा सकता है।

अहार क्षेत्र के आस-पास भी कोई ग्राम ऐसा हो सकता है जहाँ प्राचीन अवशेष आज भी हो।

मन्दिर का निर्माता

देवपाल और रत्नपाल गृहपत्यन्वय के श्रावक थे। गल्हण के वश का उल्लेख नही है किन्तु उसने देवपाल रत्नपाल के समान धार्मिक कार्य किया। देवपाल ने बाणपुर मे सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया तो इसने नन्दपुर मे शान्ति चैत्यालय बनवाया। रत्नपाल ने अपनी निवासभूमि वसुहाटिका मे जिनायतन बनवाया तो गल्हण ने अपनी जन्मभूमि मदनेशसागरपुर मे शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाया।

प्रतिमा-परिचय

परिकर–खड्गासन मुद्रा मे विराजमान इस प्रतिमा की हथेलियो के नीचे सौधर्म और ईशान स्वर्गो के इन्द्र चँमर ढोरते हुए सेवारत खडे दर्शाये गये है। बायी ओर का इन्द्र चँमर दाये हाथ मे और दायी ओर का इन्द्र बाये हाथ मे धारण किये है। दोनो इन्द्र आभूषणो से सुसज्जित है। उनके सिर मुकुट-बद्ध है। कर्ण-वर्तुलाकार कुण्डलो से युक्त है। गले मे दो-दो हार धारण किये है। प्रथम हार पाँच लडियो का और दूसरा हार तीन लडियो का है। यह वक्षस्थल के नीचे तक प्रलम्बित है। एक हार स्तन-भाग के नीचे से होकर पृष्ठ भाग की ओर गया है। इनके हाथो मे कगन और बाहुओ मे भुजबन्ध धारण किये है।

कटि प्रदेश मे करधन लटक रहा है। करधनी मे छोटी-छोटी घटियाँ लटक रही है। पैरो मे तीन-तीन कडे और पैजन है।

इन इन्द्रो के नीचे दोनो ओर एक-एक पुरुषाकृति अकित है। ये दोनो पुरुष रत्नाभरणो से मण्डित है। इनके सिरो पर ताराकित किरीट है। कानो मे कुण्डल है। बाहुओ मे भुजबन्ध, हाथो मे कगन, कटि-प्रदेश मे मेखला धारण किये है। दोनो के हाथो मे पुष्प है। गले मे नाभि-प्रदेश तक लटका हुआ हार पहिने हुए है। इनकी नुकीली मूछे और दाढी भी है। वेश-भूषा से दोनो कोई राजपुरुष या नगर श्रेष्ठी प्रतीत होते है। ये पुरुष प्रस्तुत प्रतिमा के निर्माता जाहड और उदयचन्द्र भी हो सकते है। प० बलभद्र जैन ने भी ऐसी ही सभावना प्रकट की है।[1]

आसन—आसन के मध्य मे चार इच स्थान मे एक चक्र अकित है। इसमे बाईस आरे है। आरो के मध्य से एक रेखा नीचे की ओर अकित की गयी है जिससे आरो की सख्या चौबीस ज्ञात होती है। इस चक्र के दोनो ओर चिह्न स्वरूप आमने-सामने मुख किये दो हरिण पूँछ उठाये हुए अकित है। हरिणो के आगे के पैर मुडे हुए है। इनके मुख और शीर्षभाग खण्डित हो गये है।

चिह्न-स्थल के नीचे ६ इच चौडे और ३१ इच लम्बे पाषाण-खण्ड पर सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उत्कीर्ण ६ पक्ति का लेख है। प्रत्येक पक्ति लगभग एक इच का स्थान लिए है। सातवी पक्ति का आरम्भिक अश भग्न है। अभिलेख के मध्य मे एक पुष्पाकृति अकित है। सौभाग्य से यह अभिलेख सुरक्षित है। इस लेख की यह विशेषता है कि प्रतिमा-निर्माताओ के नामोल्लेखो के साथ शिल्पकार पापट को भी अकित किया गया है।

प्रतिमा—यह प्रतिमा २२ फुट ३ इच लम्बे और ४ फुट ७ इच चौडे देशी पाषाण के एक शिलाखण्ड से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अगूठे से सिर तक की अवगाहना १६ फुट ८ इच है। आसन की नीचाई १६ इच है और आसन सहित प्रतिमा की अवगाहना १८ फुट ३ इच है। इस पर मटियाले रग का चमकदार पालिश है। आततायियो की क्रूर दृष्टि पडते ही इसे भी कठिनाइयो का सामना करना पडा। इसका बाहुभाग से दायाँ हाथ, नासिका

---

१ भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग ३, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, बम्बई— ४, ई० १९७६ प्रकाशन, पृष्ठ १२२।

और पैरो के अगूठे खण्डित हो गये थे जिन्हे पुन जोडा गया है। जोडे गये अगो पर प० पन्नालाल शास्त्री साढूमलवालो ने ७२ तोला पन्ना प्राप्त करके पुन पालिश करायी थी।[1] यह पॉलिश पहले पालिश से मिल नहीं सका है। जोड स्पष्ट दिखाई देते है। सिर के केश घुघराले है। हाथो की हथेलियो पर कमलाकृतियॉ अकित है।

खजुराहो, देवगढ, थूवौन, नवागढ उर्दमऊ, बजरगगढ, मदनपुर, अजयगढ आदि की शान्तिनाथ प्रतिमाओ मे यह प्रतिमा शारीरिक अनुपात मे सर्वाधिक विशाल तथा कलागत सौन्दर्य मे सर्वाधिक सुन्दर बताई गयी है।[2]

ऐतिहासिक-पृष्ठभूमि

वर्तमान मे यह प्रतिमा अहार (टीकमगढ म०प्र०) के मदिर नम्बर एक के गर्भगृह मे विराजमान है। यह क्षेत्र का सर्वाधिक प्राचीन मदिर इस प्रतिमा के विराजमान होने से 'शान्तिनाथ-मन्दिर' के नाम से विश्रुत है।

अपने अतीत मे यह वैभव और समृद्धि का केन्द्र रहा है। समय ने करवट बदली। यह जन-शून्य हो गया। यहॉ तक कि यह नगर जगल मे परिणत हो गया। जगली क्रूर पशु यहॉ रहने लगे और यहाँ का वैभव लुप्त हो गया।

ईस्वी १८८४ मे स्व० बजाज सबदलप्रसाद जी नारायणपुर तथा वैद्यरत्न प० भगवानदास जी पठा ग्राम ढडकना (अहार का पूर्व नाम) आये थे। यहॉ उन्हे लकडहारो और चरवाहो से विदित हुआ था कि जगल मे एक टीले पर खण्डहर मे एक विशालकाय प्रतिमा है जिसे लोग 'मूडादेव' के नाम से पुकारते है। दोनो व्यक्ति ग्रामवासियो को लेकर मशालो के सहारे टीले पर पहुँचे और गुफा मे विराजमान इस प्रतिमा को देखकर हर्ष विभोर हो गये। इस स्थान के विकास के लिए कार्तिक कृष्णा द्वितीया मेले की तिथि नियुक्त की गयी। इन दोनो के मरने के पश्चात् उनके बेटो ने कार्य सम्हाला। श्री बजाज बदलीप्रसाद जी नारायणपुर सभापति और प० बारेलाल जी पठा मत्री बनाये गये। ईस्वी १९२६ से १९८१ तक लगातार ५२ वर्षो तक प० बारेलाल जी मत्री रहे और अब उनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ० कपूरचन्द्र जी पठावाले टीकमगढ इस क्षेत्र के मत्री है। इस प्रतिमा का और कुन्थुनाथ प्रतिमा का हाथ आरम्भ से ही खण्डित रहा

---

१ भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग ३, वही, पृ० १२३।

२ श्री नीरज सतना, अहार के शान्तिनाथ-वैभवशाली अहार · ई० १९८२ प्रकाशन, पृ० ३३।

है तथा अरहनाथ प्रतिमा का स्थान रिक्त ही प्राप्त हुआ था।[1]

मन्दिर ६ फुट गहरा था। दो प्रवेश द्वार थे। प्रथम द्वार के आजू-बाजू और बीच मे तीन कमरे थे। दक्षिण बाजू के कमरे म एक तलघर था। मन्दिर के दोनो पार्श्व भागो मे २-२ तथा पश्चिम म एक गन्धकुटी थी। मदिर के तीन ओर के दालान गिर गये थे। वहाँ खुदाई की गयी थी जिसमे २६ मनोज्ञ प्रतिमाएं निकली थी जो क्षेत्रीय सग्रहालय मे विराजमान है।[2] मन्दिर का अब जीर्णोद्धार हो गया है। साहू शान्तिप्रसाद जी का नाम इस सन्दर्भ मे उल्लेखनीय है।

मन्दिर

इस मन्दिर का निर्माण प्रतिमा निर्माता जाहड और उदयचन्द्र के पिता गल्हण द्वारा कराया गया था। अत कहा जा सकता है कि मन्दिर निर्माण के पश्चात प्रतिमाओं का निर्माण हुआ था। मन्दिर मे बडे-बडे पाषाण खण्ड लगाये गये हैं। चारो ओर की दीवालो मे गन्ध कुटिया है।

मन्दिर की शिखर के पूर्वी भाग मे निर्मित गन्धकुटी मे खड्गासन मुद्रा मे एक प्रतिमा विराजमान है। इसके केश घुघराले है। स्कन्ध भाग से हाथ खण्डित है। वे जुडे हुए दिखाई देते है। प्रतिमा की दोनों ओर सूड उठाये एक-एक हाथी का अकन है। हाथियो के नीचे माला लिए एक-एक उडते हुए देवो की आकृतियाँ है। पैरो के पास चॅमर वाही इन्द्र और उनके नीचे उपासक हाथ जोडे हुए अकित है। आसन पर पूर्व की ओर मुख किये दो सिहाकृतियाँ दर्शाई गयी है। चिह्न भी है किन्तु दूर से पहिचाना नही जा सका। छत के पास शिखर पूर्व-पश्चिम १६ फुट १० इच तथा उत्तर-दक्षिण ७० इच चोडी है।

प्राप्ति स्थल

यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के टीकमगढ जिले मे टीकमगढ से २५ कि०मी० पूर्व की ओर स्थित है। टीकमगढ से यहाँ तक पक्का रोड है। बल्देवगढ, छतरपुर जाने वाली बसे यही से जाती है।

विशेष–प्रस्तुत प्रतिमा लेख से ज्ञात होता है कि ईस्वी ११८० मे यहाँ चन्देल शासक परमर्दिदेव का राज्य था। इसका राज्य ईस्वी ११६६ से ईस्वी १२०३ तक रहा। यह इस वश का अन्तिम महान नरेश था। ईस्वी १२०३ मे

---

१ वैभवशाली अहार वही, देखे– 'अहार तब और अब' तथा 'अहार से सम्बद्ध विभूतियाँ' शीर्षक लेख।

२. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग ३, वही, पृ० १२२।

इसने पराजित होकर कुतुबुद्दीन एबक की आधीनता स्वीकार कर ली थी।[1]

लेख संख्या १/२

कुन्थुनाथ-प्रतिमा लेख

मूलपाठ

१ ओ नमो वीतरागाय॥ व (ब) भूव रामा नयनाभि (चिह्न) रामा श्री (श्री) रल्हणस्येह महेस्व (श्व) रस्य। गगेव

२ गगागत पकसगा जड्डास (श) यानेव पर न वक्रा ॥ (१) ॥ ----(गार्हस्थ धर्म नितरा) ग्रहणप्रवीणानि

३. रतर प्रेम निभनधात्री। पुत्र त्रय मङ्गल का (चिह्न) र्य-----(सूता येषा च कीर्तिरिव सत्वर) धर्म्मवृत्ति ॥ २ ॥

४ तेषा गागेयकल्प प्रथमतनु भव पुण्य (चिह्न) (मूर्त्ति प्रसूत स्कन्दो भूतशमेवागु)

५ णवतिरुदयादित्यनामा षरस्य। ख्या (चिह्न) (ता धर्म्मे कुमुदराशि)[2] लघु भ्रा--

६ त युग्मे वियुक्ते ससारासारता तु (चिह्न) (गल्हणोऽभूत) वुद्धि (बुद्धि) ॥ ३ ॥

दूसरा अंश

यह अश इस प्रतिमा की दायी ओर के शासनदेव की आसन पर चार पक्ति मे उत्कीर्ण है--

१ वित्तानि विद्युदिव सत्वर गत्वराणि, राजीवनी

२ जलसमानिव जीवितानि। तुल्यानि वारिद गण

३ स्यहि यौवनानि (ता सन्ती वितु मति) जा

४ त्य वुद्ध हि---- ॥ ४ ॥

पाठ-टिप्पणी

पक्ति २ मे नेव, पक्ति ३ मे प्रेम, पक्ति ४ मे गागेय, पक्ति ६ मे युग्मे और वियुक्ते शब्दो मे ए स्वर की मात्रा के लिए सम्बन्धित वर्ण के पहले एक खडी रेखा का प्रयोग हुआ है।

---

१ डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय इतिहास एक दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ई० १९६१ पृ० १७४-१७५।

२ ( ) कोष्टक मे लिखा गया अश प० गोविन्ददास कोठिया द्वारा लिखित प्राचीन शिलालेख अहार के लेख क्रमाक दो से साभार लिया गया है।

छन्द परिचय

इस प्रतिमालेख के प्रथम श्लोक मे उपजाति, दूसरे और चौथे श्लोक मे वसन्ततिलका तथा तीसरे श्लोक मे स्रग्धरा छन्द व्यवहृत हुआ है।

भावार्थ

श्लोक १–वीतराग (देव) को नमस्कार हो। (इस मदनसागरपुर में) श्री रल्हण की पत्नी महेश्वर की गगा के समान निर्मल, निर्विकार, नयनप्रिय और सरल थी। वह (गगा के समान टेढी-मेढी चालवाली) कुटिल नहीं थी।

श्लोक २–वह गार्हस्थ्य धर्म को ग्रहण करने मे चतुर तथा निरतर स्नेह की आगार थी। उसका स्नेह धाय के समान नहीं था। उसने मगल स्वरूप तीन पुत्रो को जन्म दिया जिनकी कीर्त्ति के समान शीघ्र धर्म मे प्रवृत्ति हुई।

श्लोक ३–उस गुणवती गगा के तीन पुत्रो मे भगीरथ के समान पुण्यमूर्त्ति गागेय नामक प्रथम पुत्र और महादेव के पुत्र कार्तिकेय के समान गुणवान् उदयादित्य नाम का दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ। कुमुदनी के लिए चन्द्रमा के समान इन दोनो छोटे भाइयो के मरण-वियोग से रल्हण (रत्नपाल) का (शान्तिनाथ प्रतिमा लेख मे उल्लिखित) धार्मिक कार्यो मे विख्यात गल्हण ज्येष्ठ पुत्र ने ससार की असारता को जाना।

श्लोक ४–उसने धन को बिजली के समान क्षणभगुर, जीवन को जल मे उत्पन्न कमल के समान और यौवन को बादलो के समान अस्थिर जाना।

विशेष–इस वर्णन से प्रतीत होता है कि कुन्थुनाथ प्रतिमा का निर्माण रत्नपाल के ज्येष्ठ पुत्र गल्हण ने कराया था। इस तथ्य का उल्लेख अभिलेख के त्रुटित अश मे रहा ज्ञात होता है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर के गर्भालय मे शान्तिनाथ-प्रतिमा के बाये पार्श्व मे खड्गासन मुद्रा मे विराजमान है। यह १३ फुट ऊँचे और ३ फुट ३ इच चौडे शिलाफलक पर उत्कीर्ण की गयी है। इसकी अवगाहना सिर से आसन तक ११ फुट २ इच है। नासिका, उपस्थइन्द्रिय और पैरो के अगूठे खण्डित है। बायाँ हाथ पुन जोडा गया है। स्कन्ध भाग में जोड दिखाई देता है। शान्तिनाथ-प्रतिमा के समान ही इसकी रचना होने से वास्तुकार पापट ही इसका भी निर्माता रहा ज्ञात होता है। इसकी पालिश भी शान्तिनाथ प्रतिमा के ही समान है। अत इसकी प्रतिष्ठा शान्तिनाथ-प्रतिमा के साथ ही सवत् १२३७ मे हुई ज्ञात होती है।

परिकर– प्रतिमा की दोनो ओर चँमरवाही इन्द्र सेवारत खडे है। इनके

नीचे हाथ जोडे और हाथो मे पुष्प लिए उपासक प्रतिमाएँ अकित है। बायी ओर का उपासक बायाँ पैर मोडकर भूमि पर लिटाये है और दायाँ पैर मोडे हुए करबद्ध आसीन है। इसी प्रकार दायी ओर का उपासक अपना दायाँ पेर भूमि पर मोडकर लिटाये हुए है और बायाँ पैर मोडे हुए है। दोनो उपासक रत्नाभरणो से अलकृत है। इनकी दाढी नहीं है किन्तु मूछे ऊपर की ओर उठी हुई है। ये दोनो उपासक सभवत रत्नपाल और गगा के वे दोनो पुत्र है जो असमय मे मर गये थे। लगता है उनकी स्मृति मे ही इस प्रतिमा का निर्माण कराया गया था और स्मृति स्वरूप उपासको के रूप मे उनकी यहां प्रतिमाएं अकित कराई गयी थी।

आसन–प्रस्तुत प्रतिमा जिस आसन पर विराजमान है, उस शिलाफलक की लम्बाई १६ इच और चौडाई ८ इच है। मध्य मे चिह्न स्वरूप बकरे की आकृति अकित है। यह ऊपर से छिल गया है। चिह्न की दोनो ओर छ पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे लेख उत्कीर्ण है। लेख का शेष अश दायी ओर के पुरुष के आसन पर चार पक्ति मे उत्कीर्ण किया गया है। अभिलेख की लेखन शैली और लिपि शान्तिनाथ-प्रतिमालेख के समान है।

प्राप्ति स्थान

यह प्रतिमा शान्तिनाथ-प्रतिमा के साथ ही अहार की उस वनस्थली के खण्डहर मे ही प्राप्त हुई थी जहाँ शान्तिनाथ-प्रतिमा प्राप्त हुई थी। दोनो प्रतिमाएँ जहाँ प्राप्त हुई थी वे वही आज भी विराजमान है।

काल

अभिलेख की वर्तनी, विषय वस्तु, प्रतिमा रचना तथा शान्ति, कुन्थु और अरह की एक साथ प्रतिमाओ का होना उनके एक साथ प्रतिष्ठित होने का सकेत करता है। शान्तिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा का समय सवत् १२३७ बताया गया है अत इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का समय भी सवत् १२३७ ही प्रमाणित होता है।

लेख संख्या १/३

अरहनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओ ह्री अनन्तानन्त परमसिद्धेभ्यो नम (चिह्न)
श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्

२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन (चिह्न)
शासनम् ॥ १ ॥ प्राग्योऽभूत्रृपतिर्महान्

३ धनपति पश्चाद् व्रतानापति । स्वर्गाग्रे (चिह्न)

विलसज्जयन्त जयति प्रोद्यत्सुखाना-
४ पति । षट्खण्डाधिपतिश्चतुर्दशल (चिह्न)
सद रत्नैर्निधीनांपति । त्रैलोक्याधि-
५ पति पुनात्वरपति सनूसश्रितान् (चिह्न)
वाश्चिरम् ॥ २ ॥ विक्रम सवत् २०१४
६ फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे पञ्चम्या (चिह्न)
रविवासरे स्वतन्त्रभारतगणराज्ये
७ टीकमगढ मण्डलाऽन्तर्गते (चिह्न)
अहारक्षेत्रे प्रान्तीय समस्त जैना
श्रीमदरनाथ जिनेन्द्र नित्य (चिह्न) प्रणमन्ति ।
८ अहारक्षेत्रे गजरथ—
९ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठा

लाञ्छन स्वरूप अंकित आसन पर दोनों मछलियों के मध्य में अंकित लेख

प्रतिमा परिचय

शान्तिनाथ मन्दिर मे शान्तिनाथ प्रतिमा के दाये पार्श्व में खड्गासन मुद्रा मे विराजमान है। यह सफेद-नीले सगमरमर पाषाण से निर्मित है। इसकी अवगाहना सिर से आसन तक ११ फुट २ इच है। शिलाफलक की चौडाई ३ फुट ६ इच है। आसन पर आमने-सामने मुख किये दो मच्छ अकित है।

यह प्रतिमा वि० स० २०१४ फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि मे अहार क्षेत्र मे आयोजित गजरथ पचकल्याणक महोत्सव मे प्रान्त की जैन समाज द्वारा प्रतिष्ठापित करायी गयी थी।

लेख संख्या १/४

चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख

(शान्तिनाथ मन्दिर की बायीं ओर उत्तर में)

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण स० (सम्वत्) २५०० विक्रम स० (सम्वत्) २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे १२ भौमवासरे श्री मूलसघे
२ कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके हैदरपुर (टीकमगढ) म०प्र० निवासि
३ गोलापूर्वान्वये पाडेलीये वशोद्भवे व्या अयोध्याप्रसाद तस्य पुत्र सुन्दरलाल, छक्कीलाल, बाबूलाल, अमृतलाल
४ मुन्नालाल पौत्र अशोककुमार, राजकुमार, सुरेशकुमारो जैन इत्येभि मध्यप्रदेशे टीकमगढ जिलाऽन्तर्गते

५ श्री दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ

६ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्मक्षयार्थ सस्थापितम् नित्य प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्या

७ प० (पण्डित) पन्नालाल शास्त्री सादूमल, ब्र० प० (ब्रह्मचारी पण्डित) मूलचन्द्र अधिष्ठाता व्रती आश्रम अहार जी

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर मे उत्तर की ओर आदिनाथ प्रतिमा के वाये पक्ष मे विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ३५ इच और आसन की चौडाई २७॥ इच है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन सुदी १२ भौमवार के दिन गोलापूर्व व्या॰ अयोध्याप्रसाद हैदरपुर (टीकमगढ) म०प्र० के परिवार ने कराई। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र तथा सात पक्ति की उक्त प्रशस्ति उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/५

आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन, जिनशासनम्।

२ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सवत् २५०० विक्रम सवत् २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या भौमवासरे श्री मूलसघे

३ कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री दिगम्बर जैन धर्मप्रतिपालके पठा टीकमगढ (म०प्र०) ग्राम निवासि

४ गोलापूर्वान्वये पाडेलीय गोत्रोद्भवे तीर्थभक्त-शिरोमणि प्रतिष्ठाचार्य, ज्योतिषरत्न प० बारेलाल राजवैद्य तस्यात्मज डॉ०

५ कपूरचन्द्र, 'वैद्यविशारद' बाबूलाल, डॉ० राजेन्द्रकुमार, जयकुमार शास्त्री, देवेन्द्रकुमार बी०ए०, डॉ० सुरेन्द्रकुमार पौत्र अशोककुमार, नरेन्द्रकुमार

६ कैलाशचन्द्र, कुमारी मधु, सन्तोषकुमार, जिनेशकुमार, जिनेन्द्रकुमार, दिनेशकुमार, अनिलकुमार, धन्यकुमार, विनयकुमार, उपेन्द्रकुमार।

पृष्ठभाग का मूलपाठ

१ ज्ञानचन्द्र तथा नन्दराम तस्यात्मज शीलचन्द्र, दीपचन्द्र, हुकुमचन्द्र इत्येभि मध्यप्रदेश टीकमगढ जिला अन्तर्गते १००८ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक

२ बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्मक्षयार्थ सस्थापितम् नित्य प्रणमन्ति। प्रतिष्ठाचार्य प० पन्नालाल शास्त्री सादूमल

३ ब्र० प० मूलचन्द्र अधिष्ठाता व्रती आश्रम अहार क्षेत्र, प० मुन्नालाल शास्त्री ललितपुर, प० गुलाबचन्द्र 'पुष्प' ककरवाहा, प० अजितकुमार शास्त्री झाँसी, प० सुखानन्द बडमाडई। ओ नम सिद्धेभ्य

४ वास्तुशास्त्रमथप्राज्ञ शिल्पज्ञान विशारद ।
अय सुमूर्तिनिर्माण कृत जगदीशप्रसादत ॥

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर मे बायी ओर उत्तर दिशा मे विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ३५ इच और आसन की चौडाई २७॥ इच है। प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन सुदी द्वादशी भौमवार के दिन प० बारेलाल टीकमगढ के परिवार ने कराई थी। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/६
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण स० (सवत्) २५०० विक्रम स० २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या भौमवासरे श्री मूलसघे

२ कुन्दकुन्दचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके मैनवार हाल टीकमगढ म०प्र०

३ वासि गोलापूर्वान्वये फुसकेले गोत्रे स्व० सेठ कडोरेलाल धर्मपत्नी प्यारीबाई तस्यात्मज दयाचन्द्र, कपूरचन्द्र, बाबूलाल, पौत्र नरेन्द्रकुमार

४ योगेन्द्रकुमार तथा भ्रात कन्हैलाल, हलकाईलाल तस्यात्मज खुशालचन्द्र, नाथूराम, ज्ञानचन्द्र, मुन्नालाल, देवेन्द्रकुमार

५ मुन्नालाल जैन इत्येभि मध्यप्रदेश टीकमगढ जिलाऽन्तर्गते १००८ दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक

६ बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्म–

प्रतिमा का पृष्ठभाग

७ क्षयार्थम् सस्थापितम् नित्य प्रणमन्ति। प्रतिष्ठाचार्या श्री प० मूलचन्द्र जी, प० अजितकुमार जी, प० गुलाबचन्द्र जी (पुष्प)

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर की बायी ओर दक्षिण मे पूर्णाभिमुख विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण अकित है। प्रतिमा की अवगाहना ३६ इच और आसन की चौडाई २७॥ इच है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० मे गोलापूर्व-फुसकेले सेठ कडोरेलाल मैनवार हाल टीकमगढ के परिवार ने कराई। आसन पर उक्त सात पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/७

नेमिनाथ प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४६७ वि० स० (विक्रम सवत्) २०२७ फा० (फाल्गुन) कृ० (कृष्णा) ६ भौमवासरे (चिह्न) सरस्वतिगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये

२ मुनि श्री नेमिसागरोपदेशात् विडावा (राजस्थान) (चिह्न) वासी जैसवालान्वये सावला गोत्रोत्पन्नीय पट् भवर—

३ लालस्य आत्मजा ब्र० प० रेशमबाई विदुषीभि (चिह्न) नेमीनाथस्य बिम्ब सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये

४ प्रतिष्ठाप्य कर्मक्षयार्थ नित्य प्रणमितम् (चिह्न) वर्तमान नि० (निवास) मल्हारगज, इन्दौर (म०प्र०)।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मुख्य मदिर मे मुख्य वेदिका की दायी ओर दक्षिण में विराजमान है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा मे काले पालिश से युक्त सगमरमर पाषाण से किया गया है। इसकी अवगाहना ३७॥ इच और आसन की चौडाई २६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप शखाकृति तथा चार पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

उत्तराभिमुख अतीत (भूतकाल) चौबीसी

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/८	श्री निर्वाण जी	२०३० फाल्गुन शु० १२ भौम	मलहरावासी गोलापूर्व पडिता कोशाबाई, सि० नाथूराम सुरेन्द्र कुमार भगवाँ, कपूरचद राजकुमार सिजवाहा	प० अजितकुमार शास्त्री प० गुलाबचद पुष्प ब्र० मूलचद जी अहार
१/९	श्री सागर जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम०	झासी निवासी लाला रघूमल महेन्द्रकुमार 'अग्रवाल'	
१/१०	श्री महासाधु जी	२०३० फाल्गुन शु० १२ भौम	स० सि० कामताप्रसाद दीपचद, भागचद अमरचद अशोककुमार विजयकुमार गोलापूर्व चदेरिया मलगुवाँ (टीकमगढ) म० प्र०	प० पन्नालाल शास्त्री सादूमल प० मुन्नालाल शास्त्री ललितपुर
१/११	श्री विमलप्रभ जी	"	स० सि० ब्र० शातिलाल कस्तूरचद दीपचद कपूरचद बाबूलाल बालचद कल्याणचद रमेशचद कैलाशचद विजयकुमार जयकुमार गोलापूर्व चदेरिया मलगुवाँ (टीकमगढ) म० प्र०	ब्र० मूलचद्र अहार प० सुखानद बडमाडई
१/१२	श्री शुद्धाभदेव जी	"	स० सि० श्यामलाल भैयालाल गोलापूर्व, मलगुवाँ निवासी	प० मुन्नालाल शास्त्री प० अजितकुमार शास्त्री
१/१३	श्री श्रीधर जी	"	स० सि० सुन्दरलाल शिखरचद कोमलचद गोलापूर्व, ग्राम मलगुवाँ निवासी	"

मंदिर-एक—शान्तिनाथ-मंदिर

लेख संख्या १/१

शान्तिनाथ-प्रतिमा लेख

मूलपाठ

१ ओ नमो वीतरागाय ॥ ग्र (गृ) हपतिवशसरोरुह
सह (कमल-पुष्प) स्र रस्मि (रश्मि) सह्मकूट य ।
वाणपुरे व्यधिताशी (सी) त्स्री (श्री) मानि–

२ ह देवपाल इति ॥ १ ॥ श्री रत्नपाल इति तत्तनयो (कमल-पुष्प) वरेण्य
पुण्येकमूत्तिरभवद्वसुहाटिकाया (मृ)। कीर्तिर्ज्जग त्र (य) –

३ परिभ्रमणस्र (श्र) मार्त्ता यस्यस्थिराजनि जिनायतन (कमल-पुष्प)
च्छलेन ॥ २ ॥ एकस्तावद नूनबुद्धि निधिना श्री (श्री) शान्ति चैत्या ल –

४ या दिष्ट्या (दृष्ट्या) कद पुरे पर परनरानद (नन्द) प्रद श्री (श्री) मता।
येन श्री (श्री) मदनेस (श) सा (कमल-पुष्प) गरपुरे तज्जन्मनो निर्म्मिमे
सोय (सोऽय) श्रे (श्रे) ष्ठि वरिष्ठ गल्हण इति श्री (श्री) रल्हणख्याद–

५ भूत् ॥ ३ ॥ तस्मादजायत कुलाम्बर पूर्णचद्र (चन्द्र) श्री (श्री)
जाहडस्तदनुजोद (कमल-पुष्प) य चद्र (चन्द्र) नामा। एक परोपकृति हेतु
कृतावतारो धर्म्मात्मिक पुनरमो–

६ घ सुदानसार ॥ ४ ॥ ताभ्यामसे (शे) ष दुरितोघ स (श) मैक हेतु (तु)
निर्म्मा (कमल-पुष्प) पित भुवनभूषण भूतमेतत्। श्री (श्री) शान्ति
चैत्यमनि (मिति) नित्य सुखप्रदा- (ना)।

७ (तृ) मुक्ति श्रि (श्रि) यो वदनवीक्षण लालुपाभ्याम् ॥ ५ ॥ छ छ छ ॥
(कमल-पुष्प) सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु) क्रे स्री (श्री)
मत्परमाडिदेव विजय राज्ये–

८ (चं)द्र (चन्द्र) भास्करसमुद्रतारका यावदत्र जनचित्तहारका। धर्म्म का
(कमल-पुष्प) रिकृत मु(शु)द्धकीर्त्तन। तावद (दे)
वजयनात्सुकीर्त्तनम् ॥ (६६) ॥

९ वाल्हणस्य सुत श्री मान् रूपकारो महामति । पा (कमल-पुष्प) पटो वास्तु
सा (शा) स्त्रज्ञस्तन विव (विम्ब) सुनिर्म्मित (तम्) ॥ (७) ॥

पाठ-टिप्पणी

१ अनुनासिक न ओर म वर्णो के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग भी हुआ है।

२ श के स्थान मे स और स के स्थान मे श वर्ण का प्रयोग भी हुआ है।

३ श्री तीन प्रकार से लिखा गया है– श्री श्री और स्री।

४ ई स्वर की मात्रा वर्ण के ऊपर घुमाकर अंकित की गयी है, उसे वर्ण की ऊपरी रेखा से संयुक्त नहीं किया गया है।

५ र वर्ण मे 'उ' स्वर अन्य वर्णो के समान नीचे संयुक्त किया गया है।

६. ए स्वर की मात्रा के लिए वर्ण के पहले एक खडी रेखा का व्यवहार हुआ है।

७ स वर्ण मे र का योग दायी ओर के हिस्से मे हुआ है।

८. ध और च वर्ण व वर्ण की आकृति लिए है।

९ ण वर्ण ल वर्ण की आकृति लिए है।

१०. पॉचवे पद्य के अन्त मे एज शब्द उत्कीर्ण है जिसकी अर्थ संगति ज्ञात नहीं होती।

११ सरेफ वर्ण द्वित्व वर्ण मे अंकित है।

छन्द परिचय

प्रथम श्लोक मे आर्या छन्द है। दूसरे, चौथे और पॉचवे श्लोक मे वसन्ततिलका, तीसरे मे शार्दूलविक्रीडित, छठे श्लोक मे रथोद्धता और सातवे श्लोक मे अनुष्टुप छन्द है।

भावार्थ

१ वीतराग (देव) के लिए नमस्कार (है)। जिन्होने बानपुर मे सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया है वे गृहपति-वंश रूपी कमलो को प्रफुल्लित करने के लिए सूर्य स्वरूप देवपाल यहाँ (इस नगर मे) हुए।

२ उनके रत्नपाल नामक श्रेष्ठ पुत्र वसुहाटिका नगरी मे पवित्रता की एक मूर्ति हुए, जिसकी कीर्ति तीनो लोको मे परिभ्रमण करने के श्रम से थककर जिनायतन के बहाने स्थिर हो गई।

३ श्री रल्हण के श्रेष्ठियो मे प्रमुख श्रीमान् गल्हण का जन्म हुआ जो समग्रबुद्धि के निधान थे और जिन्होने (नन्दपुर) मे श्री शान्तिनाथ भगवान का एक चैत्यालय बनवाया था, इतर सभी लोगो को आनन्द देने वाला दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान श्रीमदनेशसागरपुर मे बनवाया था।

४. उनके कुलरूपी आकाश के लिए पूर्णचन्द्र के समान श्री जाह्नड उत्पन्न हुए। उनके छोटे भाई उदयचन्द्र थे। उनका जन्म प्रधानता से परोपकार के लिए हुआ था। वे धर्मात्मा और अमोघदानी थे।

५ मुक्तिरूपी लक्ष्मी के मुखावलोकन के लोलुपी उन दोनो भाइयो के द्वारा समस्त पापो के क्षय का कारण, पृथिवी का भूषण-स्वरूप शाश्वत-सुख को देनेवाला श्री शान्तिनाथ भगवान का बिम्ब निर्मित कराया गया।

सॅवत् १२३७ अगहन सुदी ३, शुक्रवार, श्रीमान् परमर्द्धिदेव के विजय राज्य मे—

६ इस लोक मे जब तक चन्द्रमा, सूर्य, समुद्र और तारागण मनुष्यो के चित्तो का हरण करते है तब तक धर्मकारी का रचा हुआ सुकीर्तिमय यह सुकीर्त्तन विजयी रहे।

७ वाल्हण के पुत्र महामतिशाली मूर्ति-निर्माता और वास्तुशास्त्र के ज्ञाता श्रीमान् पापट हुए। उनके द्वारा इस प्रतिमा की रचना की गयी।[1]

प्रस्तुत प्रतिमा-लेख में उल्लिखित नगर

वाणपुर—प्रस्तुत प्रतिमालेख की प्रथम पक्ति मे इस नगर का नामोल्लेख हुआ है तथा गृहपति वश के श्रीमान् देवपाल के द्वारा यहॉ सहस्रकूट चैत्यालय निर्मित कराया जाना बताया गया है। यह स्थान टीकमगढ से ग्यारह कि०मी० दूर पश्चिम मे आज भी विद्यमान है। दिनाक १५ ११ ६० के प्रात डॉ० नरेन्द्रकुमार जी टीकमगढ के सौजन्य से उनके साथ स्वय जाकर सहस्रकूट चैत्यालय देखा है। लगता है यह चैत्यालय सात भागो मे विभाजित रहा है। ऊपरी भाग सभवत नही है। पश्चिम की ओर के ऊपर से नीचे तक के छहो भागो मे क्रमश २३, ६३, ६४, ४३, ३३ ओर १३ कुल २३६ प्रतिमाएं है। पूर्व की ओर भी प्रतिमाओ की रचना इसी प्रकार है। दक्षिण मे भी कुल २३६ प्रतिमाएँ है किन्तु उत्तर की ओर छहो भागो मे ऊपर से नीचे की ओर क्रमश २३, ६७, ६४, ३१, ३, और १३ कुल २०७ प्रतिमाएँ है। चारो दिशाओ की कुल ६२४ प्रतिमाए आज भी विद्यमान है। शेष ६४ प्रतिमाएँ ऊपरी सातवे भाग मे चारो दिशाओ मे १६-१६ रही है। यह पाषाण-खण्ड अब नही है।

पूर्व ओर दक्षिण की ओर मध्य मे विराजमान मुख्य प्रतिमा के ऊपर पांच फणवाला सर्प अकित है जिससे वे प्रतिमाएँ तीर्थकर सुपार्श्वनाथ की ज्ञात होती है। पश्चिम मे चन्द्रप्रभ और उत्तर मे नेमिनाथ तीर्थकरो की प्रतिमाएँ है। बायी ओर दो पक्ति का लेख है—

१- गागलि---पीहिणि वाहिणि २---अपठनीय। दायी ओर एक पक्ति का लेख है जिसमे सवत् १००६ पढने मे आया है।

यहॉ आदिनाथ भरत और बाहुबली की प्रतिमाएँ भी है। आदिनाथ प्रतिमा की दायी ओर बाहुबलि और बायी ओर भरत-प्रतिमा है। एक फलक पर आदिनाथ प्रतिमा सहित ५३ प्रतिमाएं अकित है। यह फलक ५२ जिनालयो का प्रतीक ज्ञात होता है। यहॉ का पुरातत्त्व दर्शनीय है।

---

१ अनेकान्त वर्ष ६, किरण १० पृष्ठ ३८४-३८५ से साभार।

वसुहाटिका : शान्तिनाथ प्रतिमालेख मे इस नगर का उल्लेख लेख की दूसरी पक्ति मे हुआ है। गृहपति वश के देवपाल के पुत्र रत्नपाल ने इस नगर मे एक जिनायतन का निर्माण कराया था।

नगर के नाम से ध्वनित होता है कि यह मुख्य नगर का वह केन्द्रस्थल था जहाँ बाजार लगता था। बहुमूल्य वस्तुएँ उस बाजार मे क्रय-विक्रय के लिए आती थी। वसुहाटिका—वसु और हाट दो शब्दो के योग से बना है। वसु का अर्थ सामान्यत धन तथा हाट का अर्थ बाजार होता है। इस शाब्दिक अर्थ के परिप्रेक्ष्य मे उक्त मतव्य तर्कसगत प्रतीत होता है। यह मदनेशसागरपुर का हृदयस्थल रहा होना चाहिए।

श्री प० अमृतलाल शास्त्री के अनुसार चन्देल मदनवर्मदेव की राजधानी मदनेशसागरपुर के नष्ट-भ्रष्ट किये जाने के बाद उसका यह नाम रखा गया था।[1]

प्रतिमालेख मे इस स्थान मे मन्दिर निर्माण कराये जाने की चर्चा के तुरन्त बाद मदनेशसागरपुर मे शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाये जाने का उल्लेख होने से दोनों स्थल समकालीन प्रमाणित होते है। अत श्री शास्त्री जी का कथन तर्कसगत प्रतीत नही होता। वसुहाटिका तथा वहाँ बनवाये गये मदिर की खोज होनी चाहिए।

मदनेशसागरपुर—इस नगर का उल्लेख प्रतिमालेख की चतुर्थ पक्ति मे हुआ है। रल्हण का पुत्र गल्हण यहाँ का निवासी था, उसके द्वारा इस अपने जन्म स्थान मे शान्तिचैत्यालय बनवाये जाने का प्रतिमालेख मे उल्लेख है। वर्तमान मे यह मन्दिर जहाँ स्थित है उसे अहार कहते है। अत प्रतीत होता है कि अतीत मे अहार का ही अपर नाम मदनेशसागरपुर था। अहार के तालाब का नाम मदनसागर विश्रुत होने से भी अनुमान लगाया जा सकता है। यह वसुहाटिका का समीपवर्ती नगर रहा है। सभवत वसुहाटिका मे हुए मन्दिर निर्माण के प्रभाव से प्रभावित होकर यहाँ गल्हण ने मन्दिर बनवाया होगा।

नन्दपुर—इस नगर का उल्लेख प्रतिमालेख की चतुर्थ पक्ति मे हुआ है। रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा यहाँ एक शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाये जाने का प्रतिमालेख मे उल्लेख किया गया है।

सम्प्रति यह नगर कहाँ है? यह खोज का विषय है। अहार के पास नारायणपुर ग्राम है। यहाँ प्राचीन मन्दिर भी है किन्तु प्राचीन प्रतिमाओ की वहाँ स्थिति नहीं है।

---

१ अहार रजत जयन्ती सस्मरण अंक, ई० १९७१, पृ० ४५।

प्रतिष्ठाचार्य प० गुलाबचन्द्र 'पुष्प' से अगस्त १९९३ में भेट हुई थी। इस समय उन्होने बताया था कि झासी से सोजना मार्ग पर सोजना से चार किलोमीटर उत्तर-पूर्व कोण मे एक नावई नामक स्थल है। इसे आज नवागढ कहते है। यहाँ भग्नावस्था मे एक शान्तिनाथ प्रतिमा है। उसकी अवगाहना लगभग सात फुट है।

कुन्थुनाथ—अरहनाथ की प्रतिमाएँ भी भग्नावस्था मे वहाँ विराजमान है। यहाँ एक स्तम्भ पर रल्हण-गल्हण के नाम भी उत्कीर्ण हे। यह ग्राम यादवो की बस्ती है। श्री प० जी का अनुमान है अतीत मे इसे नन्दपुर कहा जाता रहा है। कालान्तर मे नाम मे परिवर्तन हुआ और इसे नावई कहा जाने लगा। तत्पश्चात् इसका नाम नवागढ विश्रुत हुआ। यादवो का बाहुल्य आज भी यह रहस्य अपने अन्तर मे लिये है।

श्री प्रतिष्ठाचार्य के कथनानुसार नगर मे अहार क्षेत्र के समान शान्ति कुन्थु अरह तीर्थकरो की प्रतिमाओ के विद्यमान होने तथा स्तम्भ पर रल्हण गल्हण के नाम उत्कीर्ण मिलने से नवागढ को नन्दपुर से समीकृत किया जा सकता है।

अहार क्षेत्र के आस-पास भी कोई ग्राम ऐसा हो सकता है जहाँ प्राचीन अवशेष आज भी हो।

मन्दिर का निर्माता

देवपाल और रत्नपाल गृहपत्यन्वय के श्रावक थे। गल्हण के वश का उल्लख नही है किन्तु उसने देवपाल रत्नपाल के समान धार्मिक कार्य किया। देवपाल ने वाणपुर मे सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया तो इसने नन्दपुर मे शान्ति चैत्यालय बनवाया। रत्नपाल ने अपनी निवासभूमि वसुहाटिका मे जिनायतन बनवाया तो गल्हण ने अपनी जन्मभूमि मदनेशसागरपुर मे शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाया।

प्रतिमा-परिचय

परिकर—खड्गासन मुद्रा मे विराजमान इस प्रतिमा की हथेलियो के नीचे सौधर्म और ईशान स्वर्गो के इन्द्र चॅमर ढोरते हुए सेवारत खडे दर्शाये गये है। बायी ओर का इन्द्र चॅमर दाये हाथ मे और दायी ओर का इन्द्र बाये हाथ मे धारण किये है। दोनो इन्द्र आभूषणो से सुसज्जित है। उनके सिर मुकुट-बद्ध है। कर्ण-वर्तुलाकार कुण्डलो से युक्त है। गले मे दो-दो हार धारण किये है। प्रथम हार पॉच लडियो का और दूसरा हार तीन लडियो का है। यह वक्षस्थल के नीचे तक प्रलम्बित है। एक हार स्तन-भाग के नीचे से होकर पृष्ठ भाग की ओर गया है। इनके हाथो मे कगन और बाहुओ मे भुजबन्ध धारण किये है।

कटि प्रदेश मे करधन लटक रहा है। करधनी मे छोटी-छोटी घटियाँ लटक रही है। पैरो मे तीन-तीन कडे और पैजन है।

इन इन्द्रो के नीचे दोनो ओर एक-एक पुरुषाकृति अकित है। ये दोनो पुरुष रत्नाभरणो से मण्डित है। इनके सिरो पर ताराकित किरीट है। कानो मे कुण्डल है। बाहुओ मे भुजबन्ध, हाथो मे कगन, कटि-प्रदेश मे मेखला धारण किये है। दोनो के हाथो मे पुष्प है। गले मे नाभि-प्रदेश तक लटका हुआ हार पहिने हुए है। इनकी नुकीली मूछे और दाढी भी है। वेश-भूषा से दोनो कोई राजपुरुष या नगर श्रेष्ठी प्रतीत होते है। ये पुरुष प्रस्तुत प्रतिमा के निर्माता जाहड और उदयचन्द्र भी हो सकते है। प० बलभद्र जैन ने भी ऐसी ही सभावना प्रकट की है।[1]

आसन–आसन के मध्य मे चार इच स्थान मे एक चक्र अकित है। इसमे बाईस आरे है। आरो के मध्य से एक रेखा नीचे की ओर अकित की गयी है जिससे आरो की सख्या चौबीस ज्ञात होती है। इस चक्र के दोनो ओर चिह्न स्वरूप आमने-सामने मुख किये दो हरिण पूँछ उठाये हुए अकित है। हरिणो के आगे के पैर मुडे हुए है। इनके मुख और शीर्षभाग खण्डित हो गये है।

चिह्न-स्थल के नीचे ६ इच चौडे और ३१ इच लम्बे पाषाण-खण्ड पर सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उत्कीर्ण ६ पक्ति का लेख है। प्रत्यक पक्ति लगभग एक इच का स्थान लिए है। सातवी पक्ति का आरम्भिक अश भग्न है। अभिलेख के मध्य मे एक पुष्पाकृति अकित है। सौभाग्य से यह अभिलेख सुरक्षित है। इस लेख की यह विशेषता है कि प्रतिमा-निर्माताओ के नामोल्लेखो के साथ शिल्पकार पापट को भी अकित किया गया है।

प्रतिमा–यह प्रतिमा २२ फुट ३ इच लम्बे और ४ फुट ७ इच चौडे देशी पाषाण के एक शिलाखण्ड से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अगूठे से सिर तक की अवगाहना १६ फुट ८ इच है। आसन की नीचाई १६ इच है और आसन सहित प्रतिमा की अवगाहना १८ फुट ३ इच है। इस पर मटियाले रग का चमकदार पालिश है। आततायियो की क्रूर दृष्टि पडते ही इसे भी कठिनाइयो का सामना करना पडा। इसका बाहुभाग से दायाँ हाथ, नासिका

---

१ भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ . भाग ३, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, बम्बई– ४, ई० १६७६ प्रकाशन, पृष्ठ १२२।

और पैरो के अगूठे खण्डित हो गये थे जिन्हे पुन जोडा गया है। जोडे गये अगो पर प० पन्नालाल शास्त्री साढूमलवालो ने ७२ तोला पन्ना प्राप्त करके पुन पालिश करायी थी।[1] यह पॉलिश पहले पालिश से मिल नहीं सका है। जोड स्पष्ट दिखाई देते है। सिर के केश घुघराले है। हाथो की हथेलियो पर कमलाकृतियॉ अकित है।

खजुराहो, देवगढ, थूवौन, नवागढ उर्दमऊ, बजरगगढ, मदनपुर, अजयगढ आदि की शान्तिनाथ प्रतिमाओ मे यह प्रतिमा शारीरिक अनुपात मे सर्वाधिक विशाल तथा कलागत सौन्दर्य मे सर्वाधिक सुन्दर बताई गयी है।[2]

ऐतिहासिक-पृष्ठभूमि

वर्तमान मे यह प्रतिमा अहार (टीकमगढ म०प्र०) के मदिर नम्बर एक के गर्भगृह मे विराजमान है। यह क्षेत्र का सर्वाधिक प्राचीन मदिर इस प्रतिमा के विराजमान होने से 'शान्तिनाथ-मन्दिर' के नाम से विश्रुत हे।

अपने अतीत मे यह वैभव और समृद्धि का केन्द्र रहा है। समय ने करवट बदली। यह जन-शून्य हो गया। यहॉ तक कि यह नगर जगल मे परिणत हो गया। जगली क्रूर पशु यहॉ रहने लग और यहॉ का वैभव लुप्त हो गया।

ईस्वी १८८४ मे स्व० बजाज सबदलप्रसाद जी नारायणपुर तथा वैद्यरत्न प० भगवानदास जी पठा ग्राम ढडकना (अहार का पूर्व नाम) आये थे। यहॉ उन्हे लकडहारो और चरवाहो से विदित हुआ था कि जगल मे एक टीले पर खण्डहर मे एक विशालकाय प्रतिमा है जिसे लोग 'मूडादेव' के नाम से पुकारते है। दोनों व्यक्ति ग्रामवासियो को लेकर मशालो के सहारे टीले पर पहुँचे और गुफा मे विराजमान इस प्रतिमा को देखकर हर्ष विभोर हो गये। इस स्थान के विकास के लिए कार्तिक कृष्णा द्वितीया मेले की तिथि नियुक्त की गयी। इन दोनों के मरने के पश्चात् उनके बेटो ने कार्य सम्हाला। श्री बजाज बदलीप्रसाद जी नारायणपुर सभापति और प० बारेलाल जी पठा मत्री बनाये गये। ईस्वी १९२९ से १९८१ तक लगातार ५२ वर्षो तक प० बारेलाल जी मत्री रहे और अब उनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ० कपूरचन्द्र जी पठावाले टीकमगढ इस क्षेत्र के मत्री है। इस प्रतिमा का और कुन्थुनाथ प्रतिमा का हाथ आरम्भ से ही खण्डित रहा

---

१ भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग ३, वही, पृ० १२३।

२ श्री नीरज सतना, अहार के शान्तिनाथ-वैभवशाली अहार ई० १९८२ प्रकाशन, पृ० ३३।

है तथा अरहनाथ प्रतिमा का स्थान रिक्त ही प्राप्त हुआ था।[1]

मन्दिर ६ फुट गहरा था। दो प्रवेश द्वार थे। प्रथम द्वार के आजू-बाजू और बीच मे तीन कमरे थे। दक्षिण बाजू के कमरे मे एक तलघर था। मन्दिर के दोनो पार्श्व भागो मे २-२ तथा पश्चिम मे एक गन्धकुटी थी। मदिर के तीन ओर के दालान गिर गये थे। वहॉ खुदाई की गयी थी जिसमे २९ मनोज्ञ प्रतिमाएं निकली थी जो क्षेत्रीय सग्रहालय मे विराजमान है।[2] मन्दिर का अब जीर्णोद्धार हो गया हे। साहू शान्तिप्रसाद जी का नाम इस सन्दर्भ मे उल्लेखनीय है।

मन्दिर

इस मन्दिर का निर्माण प्रतिमा निर्माता जाहड ओर उदयचन्द्र के पिता गल्हण द्वारा कराया गया था। अत कहा जा सकता हे कि मन्दिर निर्माण के पश्चात प्रतिमाओ का निर्माण हुआ था। मन्दिर मे बडे-बडे पाषाण खण्ड लगाये गये है। चारो ओर की दीवालो मे गन्ध कुटिया हे।

मन्दिर की शिखर के पूर्वी भाग मे निर्मित गन्धकुटी मे खड्गासन मुद्रा मे एक प्रतिमा विराजमान है। इसके कश घुंघराले है। स्कन्ध भाग से हाथ खण्डित है। वे जुडे हुए दिखाई देते है। प्रतिमा की दोनो ओर सूड उठाये एक-एक हाथी का अकन है। हाथियो के नीचे माला लिए एक-एक उडते हुए देवो की आकृतियां है। पैरो के पास चॅमर वाही इन्द्र और उनके नीचे उपासक हाथ जोडे हुए अकित है। आसन पर पूर्व की ओर मुख किये दो सिहाकृतिया दर्शाई गयी है। चिह्न भी हे किन्तु दूर स पहिचाना नही जा सका। छत के पास शिखर पूर्व-पश्चिम १६ फुट १० इच तथा उत्तर-दक्षिण ७० इच चौडी है।

प्राप्ति स्थल

यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के टीकमगढ जिले मे टीकमगढ से २५ कि०मी० पूर्व की ओर स्थित है। टीकमगढ से यहॉ तक पक्का रोड है। बल्देवगढ, छतरपुर जाने वाली बसे यही से जाती है।

विशेष–प्रस्तुत प्रतिमा लेख से ज्ञात होता है कि ईस्वी ११८० मे यहॉ चन्देल शासक परमर्दिदेव का राज्य था। इसका राज्य ईस्वी ११६६ से ईस्वी १२०३ तक रहा। यह इस वश का अन्तिम महान नरेश था। ईस्वी १२०३ मे

---

१ वैभवशाली अहार वही, देखे– 'अहार तब और अब' तथा 'अहार से सम्बद्ध विभूतियॉ' शीर्षक लेख।

२ भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग ३, वही, पृ० १२२।

इसने पराजित होकर कुतुबुद्दीन एबक की आधीनता स्वीकार कर ली थी।[1]

लेख संख्या १/२
कुन्थुनाथ-प्रतिमा लेख
मूलपाठ

१ ओं नमो वीतरागाय ॥ व (ब) भूव रामा नयनाभि (चिह्न) रामा श्री (श्री) रल्हणस्येह महेस्व (श्व) रस्य। गगेव

२ गगागत पकसगा जडास (श) यानेन पर न वक्रा ॥ (१) ॥ ----(गार्हस्थ धर्म नितरा) ग्रहणप्रवीणानि

३ रतर प्रेम निभनधात्री। पुत्र त्रय मङ्गल का (चिह्न) र्य-----(सूता येषा च कीर्तिरिव सत्वर) धर्म्मवृत्ति ॥ २ ॥

४ तेषा गागेयकल्प प्रथमतनु भव पुण्य (चिह्न) (मूर्ति प्रसूत स्कन्दो भूतशमेवागु)

५ णवतिरुदयादित्यनामा षरस्य। ख्या (चिह्न) (ता धर्म्मे कुमुदराशि)[२] लघु भ्रा—

६ त युग्मे वियुक्ते ससारासारता तु (चिह्न) (गल्हणोऽभूत) वुद्धि (बुद्धि) ॥ ३ ॥

दूसरा अंश

यह अश इस प्रतिमा की दायी ओर के शासनदेव की आसन पर चार पक्ति मे उत्कीर्ण है—

१ वित्तानि विद्युदिव सत्वर गत्वराणि, राजीवनी

२ जलसमानिव जीवितानि। तुल्यानि वारिद गण

३ स्यहि यौवनानि (ता सन्ती वितु मति) जा

४ त्य वृद्ध हि---- ॥ ४ ॥

पाठ-टिप्पणी

पक्ति २ मे नेव, पक्ति ३ मे प्रेम, पक्ति ४ मे गागेय, पक्ति ६ मे युग्मे और वियुक्ते शब्दो मे ए स्वर की मात्रा के लिए सम्बन्धित वर्ण के पहले एक खडी रेखा का प्रयोग हुआ है।

---

१ डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय इतिहास एक दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ई० १९६१ पृ० १७४-१७५।

२. ( ) कोष्टक मे लिखा गया अश प० गोविन्ददास कोठिया द्वारा लिखित प्राचीन शिलालेख अहार के लेख क्रमाक दो से साभार लिया गया है।

छन्द परिचय

इस प्रतिमालेख के प्रथम श्लोक मे उपजाति, दूसरे और चौथे श्लोक मे वसन्ततिलका तथा तीसरे श्लोक मे स्रग्धरा छन्द व्यवहत हुआ है।

भावार्थ

श्लोक १–वीतराग (देव) को नमस्कार हो। (इस मदनसागरपुर में) श्री रल्हण की पत्नी महेश्वर की गगा के समान निर्मल, निर्विकार, नयनप्रिय और सरल थी। वह (गगा के समान टेढी-मेढी चालवाली) कुटिल नहीं थी।

श्लोक २–वह गार्हस्थ्य धर्म को ग्रहण करने मे चतुर तथा निरतर स्नेह की आगार थी। उसका स्नेह धाय के समान नहीं था। उसने मगल स्वरूप तीन पुत्रो को जन्म दिया जिनकी कीर्त्ति के समान शीघ्र धर्म मे प्रवृत्ति हुई।

श्लोक ३–उस गुणवती गगा के तीन पुत्रो मे भगीरथ के समान पुण्यमूर्त्ति गागेय नामक प्रथम पुत्र और महादेव के पुत्र कार्तिकेय के समान गुणवान् उदयादित्य नाम का दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ। कुमुदनी के लिए चन्द्रमा के समान इन दोनो छोटे भाइयो के मरण-वियोग से रल्हण (रत्नपाल) का (शान्तिनाथ प्रतिमा लेख मे उल्लिखित) धामिक कार्यो मे विख्यात गल्हण ज्येष्ठ पुत्र ने ससार की असारता को जाना।

श्लोक ४–उसने धन को बिजली के समान क्षणभगुर, जीवन को जल मे उत्पन्न कमल के समान और यौवन को बादलो के समान अस्थिर जाना।

विशेष–इस वर्णन से प्रतीत होता है कि कुन्थुनाथ प्रतिमा का निर्माण रत्नपाल के ज्येष्ठ पुत्र गल्हण ने कराया था। इस तथ्य का उल्लेख अभिलेख के त्रुटित अश मे रहा ज्ञात होता है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर के गर्भालय मे शान्तिनाथ-प्रतिमा के बाये पार्श्व मे खड्गासन मुद्रा मे विराजमान है। यह १३ फुट ऊँचे और ३ फुट ३ इच चौडे शिलाफलक पर उत्कीर्ण की गयी है। इसकी अवगाहना सिर से आसन तक ११ फुट २ इच है। नासिका, उपस्थइन्द्रिय और पैरो के अगूठे खण्डित है। बायॉ हाथ पुन जोडा गया है। स्कन्ध भाग मे जोड दिखाई देता है। शान्तिनाथ-प्रतिमा के समान ही इसकी रचना होने से वास्तुकार पापट ही इसका भी निर्माता रहा ज्ञात होता है। इसकी पालिश भी शान्तिनाथ प्रतिमा के ही समान है। अत इसकी प्रतिष्ठा शान्तिनाथ-प्रतिमा के साथ ही सवत् १२३७ मे हुई ज्ञात होती है।

परिकर– प्रतिमा की दोनो ओर चॅमरवाही इन्द्र सेवारत खडे है। इनके

नीचे हाथ जोडे और हाथो मे पुष्प लिए उपासक प्रतिमाएँ अकित है। बायी ओर का उपासक बायाँ पैर मोडकर भूमि पर लिटाये है और दायाँ पैर मोडे हुए करबद्ध आसीन है। इसी प्रकार दायी ओर का उपासक अपना दायाँ पैर भूमि पर मोडकर लिटाये हुए है और बायाँ पैर मोडे हुए है। दोनो उपासक रत्नाभरणो से अलकृत है। इनकी दाढी नही है किन्तु मूछे ऊपर की ओर उठी हुई है। ये दोनो उपासक सभवत· रत्नपाल और गगा के वे दोनो पुत्र है जो असमय मे मर गये थे। लगता है उनकी स्मृति मे ही इस प्रतिमा का निर्माण कराया गया था और स्मृति स्वरूप उपासको के रूप मे उनकी यहाँ प्रतिमाएँ अकित कराई गयी थी।

आसन–प्रस्तुत प्रतिमा जिस आसन पर विराजमान है, उस शिलाफलक की लम्बाई १६ इच और चौडाई ८ इच है। मध्य मे चिह्न स्वरूप बकरे की आकृति अकित है। यह ऊपर से छिल गया है। चिह्न की दोनो ओर छ पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे लेख उत्कीर्ण है। लेख का शेष अश दायी ओर के पुरुष के आसन पर चार पक्ति मे उत्कीर्ण किया गया है। अभिलेख की लेखन शैली और लिपि शान्तिनाथ-प्रतिमालेख के समान है।

प्राप्ति स्थान

यह प्रतिमा शान्तिनाथ-प्रतिमा के साथ ही अहार की उस वनस्थली के खण्डहर मे ही प्राप्त हुई थी जहाँ शान्तिनाथ-प्रतिमा प्राप्त हुई थी। दोनो प्रतिमाएँ जहाँ प्राप्त हुई थी वे वही आज भी विराजमान है।

काल

अभिलेख की वर्तनी, विषय वस्तु, प्रतिमा रचना तथा शान्ति, कुन्थु और अरह की एक साथ प्रतिमाओ का होना उनके एक साथ प्रतिष्ठित होने का सकेत करता है। शान्तिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा का समय सवत् १२३७ बताया गया है अत इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का समय भी सवत् १२३७ ही प्रमाणित होता है।

लेख संख्या १/३

अरहनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाट

१ ओ ह्री अनन्तानन्त परमसिद्धेभ्यो नम (चिह्न)
श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्

२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन (चिह्न)
शासनम् ॥ १ ॥ प्राग्योऽभून्नृपतिर्महान्

३ धनपति पश्चाद् व्रतानापति·। स्वर्गाग्रे (चिह्न)

विलसज्जयन्त जयति प्रोद्यत्सुखाना-

४ पति·। षट्खण्डाधिपतिश्चतुर्दशल (चिह्न)

सद रत्नैनिधीनापति । त्रैलोक्याधि-

५ पति पुनात्वरपति· सनूसश्रितान् (चिह्न)

वाश्चिरम् ॥ २ ॥ विक्रम सवत् २०१४

६ फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे पञ्चम्या (चिह्न)

रविवासरे स्वतन्त्रभारतगणराज्ये

७ टीकमगढ मण्डलाऽन्तर्गते (चिह्न)

अहारक्षेत्रे प्रान्तीय समस्त जैना

श्रीमदरनाथ जिनेन्द्र नित्य (चिह्न) प्रणमन्ति।

८ अहारक्षेत्रे गजरथ—

९ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठा

लाञ्छन स्वरूप अंकित आसन पर दोनों मछलियों के मध्य में अंकित लेख

प्रतिमा परिचय

शान्तिनाथ मन्दिर मे शान्तिनाथ प्रतिमा के दाये पार्श्व मे खड्गासन मुद्रा मे विराजमान है। यह सफेद-नीले सगमरमर पाषाण से निर्मित है। इसकी अवगाहना सिर से आसन तक ११ फुट २ इच है। शिलाफलक की चौडाई ३ फुट ६ इच है। आसन पर आमने-सामने मुख किये दो मच्छ अकित है।

यह प्रतिमा वि० स० २०१४ फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि मे अहार क्षेत्र मे आयोजित गजरथ पचकल्याणक महोत्सव मे प्रान्त की जैन समाज द्वारा प्रतिष्ठापित करायी गयी थी।

लेख संख्या १/४

चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख

(शान्तिनाथ मन्दिर की बायीं ओर उत्तर में)

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण स० (सम्वत्) २५०० विक्रम स० (सम्वत्) २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे १२ भौमवासरे श्री मूलसघे

२ कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके हैदरपुर (टीकमगढ) म०प्र० निवासि

३ गोलापूर्वान्वये पाडेलीये वशोद्भवे व्या अयोध्याप्रसाद तस्य पुत्र सुन्दरलाल, छक्कीलाल, बाबूलाल, अमृतलाल

४ मुन्नालाल पौत्र अशोककुमार, राजकुमार, सुरेशकुमारो जैन इत्येभि मध्यप्रदेशे टीकमगढ जिलाऽन्तर्गते

५ श्री दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ

६ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्बं सकल कर्मक्षयार्थ सस्थापितम् नित्य प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्या

७ प० (पण्डित) पन्नालाल शास्त्री सादूमल, ब्र० प० (ब्रह्मचारी पण्डित) मूलचन्द्र अधिष्ठाता व्रती आश्रम अहार जी

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर मे उत्तर की ओर आदिनाथ प्रतिमा के वाये पक्ष मे विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ३५ इच और आसन की चोडाई २७॥ इच है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन सुदी १२ भोमवार के दिन गोलापूर्व व्या अयोध्याप्रसाद हैदरपुर (टीकमगढ) म०प्र० के परिवार ने कराई। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र तथा सात पक्ति की उक्त प्रशस्ति उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/५

आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन, जिनशासनम्।

२ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सवत् २५०० विक्रम सवत् २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या भौमवासरे श्री मूलसघे

३ कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री दिगम्बर जैन धर्मप्रतिपालके पठा टीकमगढ (म०प्र०) ग्राम निवासि

४ गोलापूर्वान्वये पाडेलीय गोत्रोद्भवे तीर्थभक्त-शिरोमणि प्रतिष्ठाचार्य, ज्योतिषरत्न प० बारेलाल राजवैद्य तस्यात्मज डॉ०

५ कपूरचन्द्र, 'वैद्यविशारद' बाबूलाल, डॉ० राजेन्द्रकुमार, जयकुमार शास्त्री, देवेन्द्रकुमार बी०ए०, डॉ० सुरेन्द्रकुमार पौत्र अशोककुमार, नरेन्द्रकुमार

६ कैलाशचन्द्र, कुमारी मधु, सन्तोषकुमार, जिनेशकुमार, जिनेन्द्रकुमार, दिनेशकुमार, अनिलकुमार, धन्यकुमार, विनयकुमार, उपेन्द्रकुमार।

पृष्ठभाग का मूलपाठ

१ ज्ञानचन्द्र तथा नन्दराम तस्यात्मज शीलचन्द्र, दीपचन्द्र, हुकुमचन्द्र इत्येभि मध्यप्रदेश टीकमगढ जिला अन्तर्गते १००८ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक

२ बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्मक्षयार्थ सस्थापितम् नित्य प्रणमन्ति। प्रतिष्ठाचार्य प० पन्नालाल शास्त्री सादूमल

३ ब्र० प० मूलचन्द्र अधिष्ठाता व्रती आश्रम अहार क्षेत्र, प० मुन्नालाल शास्त्री ललितपुर, प० गुलाबचन्द्र 'पुष्प' ककरवाहा, प० अजितकुमार शास्त्री झॉसी, प० सुखानन्द बडमाडई। ओ नम सिद्धेभ्य

४ वास्तुशास्त्रमथप्राज्ञ शिल्पज्ञान विशारद ।
अय सुमूर्तिनिर्माण कृत जगदीशप्रसादत ॥

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर मे बायी ओर उत्तर दिशा मे विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ३५ इच और आसन की चौडाई २७॥ इच हे। प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन सुदी द्वादशी भौमवार के दिन प० बारेलाल टीकमगढ के परिवार ने कराई थी। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/६
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण स० (सवत्) २५०० विक्रम स० २०३० फाल्गुण मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या भौमवासरे श्री मूलसघे

२ कुन्दकुन्दचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके मैनवार हाल टीकमगढ म०प्र०

३ वासि गोलापूर्वान्वये फुसकेले गोत्रे स्व० सेठ कडोरेलाल धर्मपत्नी प्यारीबाई तस्यात्मज दयाचन्द्र, कपूरचन्द्र, बाबूलाल, पौत्र नरेन्द्रकुमार

४ योगेन्द्रकुमार तथा भ्रात कन्हैलाल, हलकाईलाल तस्यात्मज खुशालचन्द्र, नाथूराम, ज्ञानचन्द्र, मुन्नालाल, देवेन्द्रकुमार

५ मुन्नालाल जैन इत्येभि मध्यप्रदेशे टीकमगढ जिलाऽन्तर्गते १००८ दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक

६ बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्म–

प्रतिमा का पृष्ठभाग

७ क्षयार्थम् सस्थापितम् नित्य प्रणमन्ति। प्रतिष्ठाचार्या श्री प० मूलचन्द्र जी, प० अजितकुमार जी, प० गुलाबचन्द्र जी (पुष्प)

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर की बायी ओर दक्षिण मे पूर्णाभिमुख विराजमान है। सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण अकित है। प्रतिमा की अवगाहना ३६ इच और आसन की चौडाई २७॥ इच है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम सवत् २०३० मे गोलापूर्व-फुसकेले सेठ कडोरेलाल मैनवार हाल टीकमगढ के परिवार ने कराई। आसन पर उक्त सात पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या १/७
नेमिनाथ प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४९७ वि० स० (विक्रम सवत्) २०२७ फा० (फाल्गुन) कृ० (कृष्णा) ६ भौमवासरे (चिह्न) सरस्वतिगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये

२ मुनि श्री नेमिसागरोपदेशात् विडावा (राजस्थान) (चिह्न) वासी जैसवालान्वये सावला गोत्रोत्पन्नीय पटु भवर—

३ लालस्य आत्मजा ब्र० प० रेशमबाई विदुषीभि (चिह्न) नेमीनाथस्य बिम्ब सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये

४ प्रतिष्ठाप्य कर्मक्षयार्थ नित्य प्रणमितम् (चिह्न) वर्तमान नि० (निवास) मल्हारगज, इन्दौर (म०प्र०)।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा शान्तिनाथ मुख्य मदिर मे मुख्य वेदिका की दायी ओर दक्षिण मे विराजमान है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा मे काले पालिश से युक्त संगमरमर पाषाण से किया गया है। इसकी अवगाहना ३७॥ इच और आसन की चौडाई २६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप शखाकृति तथा चार पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

उत्तराभिमुख अतीत (भूतकाल) चौबीसी

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/८	श्री निर्वाण जी	२०३० फाल्गुन शु० १२ भौम	मलहरावासी गोलापूर्व पडिना कोशाबाई, सि० नाथूराम सुरेन्द्र कुमार भगवाँ, कपूरचद राजकुमार सिजवाहा	प० अजितकुमार शास्त्री प० गुलाबचद पुष्प ब्र० मूलचद जी अहार
१/६	श्री सागर जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम०	झासी निवासी लाला रग्घूमल महेन्द्रकुमार 'अग्रवाल'	
१/१०	श्री महासाधु जी	२०३० फाल्गुन शु० १२ भौम	स० सि० कामताप्रसाद दीपचद, भागचद अमरचद अशोककुमार विजयकुमार गोलापूर्व चदेरिया मलगुवॉ (टीकमगढ) म० प्र०	प० पन्नालाल शास्त्री सादूमल प० मुन्नालाल शास्त्री ललितपुर
१/११	श्री विमलप्रभ जी	"	म० सि० ब्र० शानिलाल कस्तूरचद दीपचद कपूरचद बाबूलाल बालचद कल्याणचद रमेशचद कैलाशचद विजयकुमार जयकुमार गोलापूर्व चदेरिया मलगुवॉ (टीकमगढ) म० प्र०	ब्र० मूलचद्र अहार प० सुखानद बडमाडई
१/१२	श्री शुद्धाभदेव जी	"	स० सि० श्यामलाल भैयालाल गोलापूर्व, मलगुवॉ निवासी	प० मुन्नालाल शास्त्री प० अजितकुमार शास्त्री
१/१३	श्री श्रीधर जी	"	स० सि० सुन्दरलाल शिखरचद कोमलचद गोलापूर्व, ग्राम मलगुवॉ निवासी	"

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१ १४	श्री सुदत्त जी	"	गोलापूर्व भुजबल प्रसाद हल्केलाल ज्ञानचद महेशचद मलगुवॉं निवासी	प० पन्नालाल प० मुन्नालाल
१/१५	श्री अमलप्रभ जी	"	गोलापूर्व ब्र० काशीबाई ईसरी	प० अजितकुमार शास्त्री प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/१६	श्री उद्धारदेव जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	टोडी-फतेहपुरवासी परवार श्रीमती गौराबाई ध० प० स्व० श्री अनदीलाल जैन	
१/१७	श्री अग्निदेव जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व पटवारी देवी प्रसाद विठोलाल मुगवारी (छतरपुर)	प० मूलचद अहार प० पन्नालाल साढूमल
१/१८	श्री मन्मनिदेव जी	"	गोलापूर्व पाडेलीय सौ० सुन्दरबाई ध० प० प० बारेलाल पठा पुत्रवधु जयबाई ध० प० डॉ० कपूरचद सौ० कचनबाई ध० प० जयकुमार शास्त्री सौ० शान्तिदेवी ध०प० देवन्द्र कुमार सौ० विद्यादेवी ध० प० डॉ० सुरेन्द्रकुमार टीकमगढ निवासी	प० मूलचद अहार प० सुखानद वडमाडई
१/१९	श्री शिवदेव जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व पाडेलीय सौ० फूलाबाई ध० प० वैद्य बाबूलाल पठा व पुत्र अशोककुमार सतोषकुमार उपेन्द्रकुमार ज्ञानचद	प० मूलचद जी अहार प० पन्नालाल साढूमल
१/२०	श्री कुसुमाजलि जी	"	गोलापूर्व पाडेलीय सिघई धन्यकुमार सुपुत्र राजेन्द्रकुमार पठा	प० पन्नालाल साढूमल प० मुन्नालाल जी ललितपुर

लेख सख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०सं० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१ २१	श्री शिवगणदेव जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	श्री चिमनलाल परवार मुहारा (टीकमगढ)	
१ २२	श्री उत्साहदेव जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व पाडलीय सौ० राधा बाई ध० प० डॉ० राजेन्द्र कुमार पठा (टीकमगढ) म० प्र०	प० पन्नालाल साढूमल प० मुन्नालाल जी ललितपुर
१.२३	श्री ज्ञानेश्वरदेव जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	परवार दुलीचद हरगोविददास मऊरानीपुर	
१.२४	श्री परमेश्वरदेव जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	परवार ब्र० चिरजीलाल जी विदिशा	प० पन्नालाल प० मुन्नालाल
१/२५	श्री विमलेश्वरदेव जी	"	नायक मन्नूलाल धन्नालाल परवार विदिशा म० प्र०	प० मूलचद प० सुखानद
१.२६	श्री यशोधरदेव जी	"	सराफ दवीदास मूलचद पुत्र खूबचद पुत्र बाबूलाल मुन्नालाल बिहारीलाल दरबारीलाल सुरेन्द्रकुमार पौत्र मनोजकुमार परवार मवई (टीकमगढ)	प० गुलाबचद ककरवाहा प० अजित कुमार झासी
१/२७	श्री कृष्णमतिदेव जी	"	परवार ब्र० शानिबाई बहिन स्व० बाबूलाल सौ० जगरानी ध० प० चुन्नीलाल जी करहल (सागर) म० प्र०	प० सुखानद बडमाडई प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/२८	श्री ज्ञानमतिदेव जी	"	परवार सौ० ज्ञानदेवी ध० प० श्री सि० धन्नालाल जी खिसनी बुजुर्ग (झासी) उ० प्र०	ब्र० मूलचद जी प० सुखानद जी बडमाडई

लेख सख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्टापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/२९	श्री शुद्धमतिदेव जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६ भौम	गोलापूर्व स० सि० हरप्रसादमौजीलाल टीकमगढ म० प्र०	
१/३०	श्री भद्रदेव जी	"	सौ० निर्मलादेवी ध० प० जय नारायण अग्रवाल झासी	
१/३१	श्री शान्तिदेव जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम पूर्वाभिमुख	सिंघन नन्नीबाई ध० प० स्व० सि० पूरनचद पेशगार परवार टीकमगढ म० प्र० वर्तमानकाल चौबीसी	प० अजितकुमार जी प० गुलाबचद 'पुष्प' ककरवाहा
१/३२	श्री आदिनाथ जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	गोलापूर्व स० सि० धरमदास पुत्र नाथूराम पौत्र भागचद राजकुमार जैन अजनौर	
१/३३	श्री अजितनाथ जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व बनौनया सि० अनदीलाल पुत्र शीलचद जयकुमार सुरेशकुमार सापौन (टीकमगढ)	प० मुन्नालाल शास्त्री प० अजित-कुमार जैन
१/३४	श्री सभवनाथ जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	गोलालारे ब्र० अच्छेलाल धर्मदास डॉ० दीपचद सिमरा (टीकमगढ)	
१/३५	श्री अभिनन्दन नाथ	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलालारे श्री मती रतनबाई ध० प० स० सि० दयाचद मगरपुर (झासी)	प० मूलचद जी प० पन्नालाल जी
१/३६	श्री सुमतिनाथ जी	"	गोलापूर्व सि० बाबूलाल पुत्र सि० निर्मलकुमार सोरई (झासी)	प० अजितकुमार शास्त्री प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/३७	श्री पद्मप्रभ जी	"	गोलापूर्व श्रीमती गुनाबाई, जगदीश बम्हौरी (सागर) म० प्र०	"

लेख सख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१,३८	श्री सुपार्श्वनाथ जी	"	परवार सेठ मुलायमचद राजकुमार सिवनी मध्यप्रदेश	प० अजितकुमार जी प० मुन्नालाल जी
१ ३९	श्री चदप्रभ जी	"	सौ० तुलसाबाई ध० प० ठाकुरदास जी वैद्य पुत्रवधू कस्तूरीबाई ध० प० वैद्य गोविन्ददास पौत्र वीरेन्द्रकुमार सजीवकुमार परवार (टीकमगढ) म० प्र०	प० मुन्नालाल जी ललितपुर प० अजितकुमार झासी
१ ४०	श्री पुष्पदन्त जी	'	गोलालारे दमरूलाल फणीन्द्र दत्तक पुत्र श्री लखमीचद पुत्र महेन्द्रकुमार विरीगखेत (टीकम०)	प० पन्नालाल प० मुन्नालाल
१,४१	श्री शीतलनाथ जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	स० सि० अनन्दीलाल पुत्री सुत्री बाई पुत्र डॉ० गज-कुमार जैन अजनौर (टीकमगढ) म० प्र०	
१ ४२	श्री श्रेयासनाथ जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	सौ० सुन्दरबाई ध० प० सुदरलाल सौ० मुन्नीबाई ध० प० स्व० नाथूराम जैन पुत्र नरेन्द्र कुमार पोद्दार परवार गुरसराय (झासी), उ०प्र०	प० गुलाबचद 'पुष्प' प० सुखानद बडमाडई
१,४३	श्री वासुपूज्य जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६,भौम	गोलापूर्व सि० हुकुमचद नन्हेलाल पुत्र सतोषकुमार चदरिया अजनौर (टीकमगढ) म० प्र०	
१,४४	श्री विमलनाथ जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	सिघेन परवार-काशिल गोत्रज सोनाबाई ध० प० श्री अयोध्या प्रसाद, सिघेन नन्दनदेवी ध० प० लखपतराय गुरसराय (झासी)	ब्र० मूलचद प० सुखानद

लेख सख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/४५	श्री अनन्तनाथ जी	″	परवार कासिल गोत्री सि० माणिकचद ध० प० सो० चमेलीदेवी पुत्र प्रकाशचद अभिनन्दनकुमार गुरसराय (झासी)	प० पन्नालाल साढूमल प० मुन्नालाल
१/४६	श्री धर्मनाथ जी	″	गोलापूर्व सि० पन्नालाल धर्मदास मोतीलाल कोमलचद राजकुमार रतनचद पांडलीय पठा (टीकमगढ)	प० पन्नालाल प० मुन्नालाल
१/४७	श्री शान्तिनाथ जी	″	चौ० ब्र० प० मौजीलाल भ्रातस्पुत्र कस्तूरचद प० घनश्यामदास चितामन पुत्र रमेश सुरेश ज्ञानचद प्रकाश चद परवार नमचद, दयाचद, ऋषभ, वीर, निर्मल, बाबू, वीरेन्द्र, सुरेश, निर्मल, ज्ञानचद, मनोज, उत्तम देवगढा (टीकमगढ)	प० गुलाबचद 'पुष्प' प० मुन्नालाल शास्त्री
१/४८	श्री कुन्थुनाथ जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	श्रीमती कोसाबाई ध० प० श्री गिरधारीलाल परवार सिमरा खुर्द (टीकमगढ)	प० अजितकुमार शास्त्री प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/४९	श्री अरहनाथ जी	″	श्री प्रकाशचद पाण्ड्या खडेलवाल सुजानगढ (बीकानेर) राज०	″
१/५०	श्री मल्लिनाथ जी	″	गोलापूर्व सनकुटा पडवार (सागर) निवासी म० सि० हजारीलाल पुत्र राजाराम ध० प० प्यारीबाई पौत्र रतनचद हीराचद	प० मूलचद अहार प० गुलाबचद 'पुष्प' ककरवाहा प० अजितकुमार
१/५१	श्री मुनिसुव्रतनाथ जी	″	शाह रघुवरदयाल असर्फीलाल परवार भिड म० प्र०	प० पन्नालाल प० गुलाबचद
१/५२	श्री नमिनाथ जी	″	श्री दि० जैन महिला समाज भोपाल म० प्र०	प० पन्नालाल प० मुन्नालाल

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/५३	श्री नेमिनाथ जी	"	गोलापूर्व बनोनया ठाकुरदास चतुर्थ पुत्र वृन्दावन पौत्र शिखरचद सतोषकुमार पवनकुमार अशोककुमार इन्द्रकुमार लार बुजुर्ग (टीकमगढ)	प० मूलचद प० सुखानद
१/५४	श्री पार्श्वनाथ जी	"	गोलापूर्व विलविले पटवारी गणेशप्रसाद पुत्र चुन्नी-लाल आशाराम पुत्र ब्र० ऋषभ सागर वर्णी चदपुरा (टीकमगढ)	प० मुन्नालाल प० पन्नालाल
१/५५	श्री महावीर जी	"	गोलापूर्व खाग स० सेठ श्री छोटेलाल दत्तक पुत्र सेठ धन-प्रसाद पुत्र वीरेन्द्रकुमार अशोककुमार महेन्द्रकुमार काति-कुमार राकेश कुमार देवेन्द्रकुमार वैसा (टीकमगढ)	प० पन्नालाल जी सादूमल प० मुन्नालाल जी ललितपुर

दक्षिणाभिमुख अनागत (भविष्यकाल) चौबीसी

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/५६	श्री महापद्म जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व खाग वश के श्री स० सेठ भैयालाल मुकुन्दीलाल दत्तक पुत्र गोपीलाल पुत्र लक्ष्मीचद राजकुमार वैसा (टीकमगढ) म० प्र०	प० अजितकुमार जी प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/५७	श्री सुरदेव जी	"	गोलापूर्व-रस वश के सेठ हीरालाल पुत्र सेठ नाथूराम अनन्दीलाल हटा (टीकमगढ)	प० गुलाबचद पुष्प प० अजितकुमार जी झासी
१/५८	सुप्रभदेव जी	"	गोलापूर्व-फुसकेले स० सि० धर्मदास पुत्र रामवगस नन्हेलाल पौत्र दीपचद प्रपौत्र प्रकाशचद अरविदकुमार नादैल (झासी) उ०प्र०	ब्र० मूलचद अहार प० सुखानद जी

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/५६	श्री स्वयप्रभ जी	"	गोलापूर्व-चदेरिया वशी सि० दुर्गाप्रसाद पुत्र माणिकचद पुत्र हुकुमचद अशोककुमार महेन्द्रकुमार वैसा (टीकमगढ) म० प्र०	प० अजितकुमार झासी प० गुलाबचन्द 'पुष्प'
१/६०	श्री सर्वायुध जी	"	गोलापूर्व-खाग वश के म० सेठ स्व० श्री ग्याप्रसाद पुत्र स० सेठ चतुरप्रसाद पौत्र हेमचद चद्रभान प्रद्युम्नकुमार वसा (टीकमगढ) म० प्र०	प० मुन्नालाल शास्त्री प० पन्नालाल सादूमल
१/६१	श्री नयनदेव जी	"	गोलापूर्व सि० स्व० रज्जूलाल पुत्र भागचद फूलचद, कुन्न-लाल पुत्र नाथूराम अनदीलाल वसा (टीकमगढ) म० प्र०	ब्र० मूलचद अहार प० सुखानद बडमाडई
१/६२	श्री उदयदेव जी	"	गोलापूर्व स्व० सि० रामप्रसाद पुत्र मातीलाल शीलचद पौत्र प्रमादकुमार वारह (छतरपुर) म० प्र०	प० अजितकुमार प० गुलाबचद 'पुष्प'
१/६३	श्री प्रभादेव जी	"	गोलापूर्व शाह करैया नाथूराम पुत्र कस्तूरचद सुभाषचद ज्ञानचद भागचद उदयचद खमचद पौत्र प्रकाशचद कैलाश-चद महेशचद खरगापुर (टीकमगढ) म० प्र०	प० मूलचद अहार प० सुखानद जी
१/६४	श्री उदकदेव जी	"	गोलापूर्व पाढेलीय वश के पटवारी सुन्दरलाल दत्तक पुत्र धर्मदास पौत्र दयाराम घनश्यामदास अयोध्याप्रसाद कुदनलाल खरगापुर (टीकमगढ) म० प्र०	प० गुलाबचद 'पुष्प' प० पन्नालाल सादूमल
१/६५	श्री प्रश्नकीर्त्ति जी	"	श्रीमती देवकाबाई ध० प० कन्हैयालाल पुत्र कस्तूरचद पौत्र कोमलचद परवार जबलपुर म० प्र०	प० अजितकुमार झासी प० मुन्ना-लाल जी

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/६६	श्री जयकीर्त्ति जी	"	गोलापूर्व पटवारी छोटेलाल पुत्र श्री रतनचद पौत्र शिखरचद गोविदकुमार दरगुवॉ (टीकमगढ) म० प्र०	"
१/६७	श्री पूर्णवृद्धिदेव जी	"	गोलापूर्व-चौसरा स० सि० परमानद पुत्र सुखलाल दरगुवा (टीकमगढ)	प० सुखानद प० मूलचद
१/६८	श्री निष्कपाय जी	"	गोलापूर्व स्व० वैद्य मन्नूलाल ध० प० हरबाई पुत्र बल्देवप्रसाद पौत्र बाबूलाल कुदनलाल हुकुमचद नरेन्द्रकुमार नरेशकुमार प० जगन्नाथप्रसाद प्रपौत्र नाथूराम प० गुलाबचद पुष्प ध० प० रामबाई इनके पुत्र शिखरचद ध० प० गजरादेवी पुत्री अनुपमा डॉ० उत्तमचद, राजकुमार, जयकुमार प्रदीपकुमार कफरवाहा	प० सुखानद बडमाडई प० मूलचदजी
१/६९	श्री विमलप्रभ जी	"	परवार कोछल्ल गोत्र के बजाज श्री पूरनचद भगवानदास बालचद उनके पुत्र फूलचद कामलचद कपूरचद शीलचद माणिकचद हरिश्चद पौत्र शान्तिकुमार नरेन्द्र कुमार विनोदकुमार आलोककुमार सजयकुमार सजीवकुमार नारायणपुर (टीकमगढ) म० प्र०	प० पन्नालाल जी प० मुन्नालाल जी
१/७०	श्री वहलदेव जी	"	गोलालारे सौ० कौशाबाई ध० प० सेठ श्री जीवनलाल सकरार (झासी) उ० प्र०	प० मूलचद जी प० सुखानद जी
१/७१	श्री निर्मलदेव जी	"	गोलापूर्व चदेरिया स्व० सि० हल्कूराम ध० प० श्रीमती राधाबाई पुत्र राजकुमार नरेन्द्रकुमार पौत्र जिनेन्द्रकुमार	"

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
			अशोककुमार भेलसी (टीकमगढ) म० प्र०	
१/७२	श्री चित्रगुप्त जी	"	परवार बेटीबाई सुत शाह दरबारीलाल पौत्र ध्यानचद ज्ञानचद निहालचद (टीकमगढ) म० प्र०	प० मूलचद जी प० सुखानद जी
१/७३	श्री समाधिगुप्त जी	'	गोलापूर्व चौसरा गोत्रज श्रीमती काशीबाई ध० प० स्व० स० सि० लक्ष्मणप्रसाद पुत्र बाबूलाल कन्हैयालाल विरतीचद हीरालाल कोमलचद चद्रभान दरगुवा (टीकमगढ)	प० मुन्नालाल प० अजितकुमार
१/७४	श्री स्वयभूदेव जी	"	परवार राजाबटीबाई ध० प० स्व० श्री स० सि० बदलीप्रसाद दत्तक पुत्र स० सि० छोटेलाल ध० प० रूपादेवी पुत्र चक्रेशकुमार अशोककुमार सुरेशकुमार अक्षयकुमार मनीषकुमार खिमनीबुजुर्ग (झासी) उ० प्र०	प० मूलचद अहार प० सुखानद बडमाडई
१/७५	श्री कन्दर्पदेव जी	'	गोलापूर्व चदेरिया सि० अयोध्याप्रसाद पुत्र सि० लटकनलाल माणिकचद पौत्र नरेन्द्रकुमार विनयकुमार पवनकुमार भेलमी (टीकमगढ)	प० पन्नालाल जी प० मुन्नालाल जी
१/७६	श्री जयनाथ जी	"	परवार प० अध्यापिका किशोरीबाई ध० प० स्व० सि० गुलझारीलाल गुरसराय (झासी) उ० प्र०	प० पन्नालाल जी प० मुन्नालाल जी
१/७७	श्री विमलनाथ जी	"	परवार स० सि० बाबूलाल ध० प० सोनाबाई लश्कर (ग्वालियर) म० प्र०	प० अजितकुमार जी प० गुलाबचद पुष्प

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
१/७८	श्री दिव्यवाहन जी	"	गोलापूर्व साधेलीय स्व० सि० हल्कूलाल पुत्र कस्तूरचद हीरालाल धर्मदास शीलचद चन्द्रभान बिरतीचद बाबू-लाल कल्याणचद वीरचद डूडा (टीकमगढ)	प० मूलचद जी प० सुखानद जी
१/७६	श्री अनन्तवीर्य जी	"	गोलापूर्व पाडेलीय व्या धर्मदास पुत्र हुकुमचद कोमलचद सुरेशचद हैदरपुर (टीकमगढ) म० प्र०	प० मूलचद जी प० पन्नालाल जी
श्री महाविदेह क्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थकर (दक्षिणाभिमुख)				
१/८०	श्री सीमन्धरदेव जी	"	अग्रवाल सेठ भारतभूषण झासी उ० प्र०	प० सुखानद जी प० गुलाबचद जी
१/८१	श्री युगमन्धर जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६ भौम	परवार श्री बालमुकुन्द हुकुमचद जी रानीपुर	
१/८२	श्री बाहु जी	"	परवार सि० भैयालाल प्रकाशचद सेठ गोविददास हुकुमचद जैन अशोकनगर	
१/८३	श्री सुबाहु जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व फुसकेले सि० विन्द्रावन पुत्र दरबारीलाल बाबूलाल स्व० रूपचद विनोदकुमार राजेन्द्रकुमार मलहरा (छतरपुर) म० प्र०	प० मूलचद जी अहार प० सुखानद जी
१/८४	श्री सजातक जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	फुटेरवाले श्री नाथूराम जी (टीकमगढ) (परवार)	
१/८५	श्री स्वयप्रभ जी	"	परवार श्रीमती धूमीबाइ मातेश्वरी श्री मनोहरलाल टडी फतेहपुर-मऊरानीपुर	

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०स० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
पश्चिमाभिमुख (उत्तर की ओर)				
१/८६	श्री ऋषिमानन जी	"	गोलापूर्व स० सि० ग्याप्रसाद ध० प० धरमीबाई कठेल समर्रा (टीकमगढ़)	
१/८७	श्री अनलवीर्य जी	"	लाला पदमकुमार सन्तोषकुमार अग्रवाल झासी उ० प्र०	
१/८८	श्री सुरिप्रभ जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	श्रीमती किरणदेवी ध० प० सेठ नेमिचद खडेलवाल सिरसावा (मेरठ) उ० प्र०	प० पन्नालाल जी प० मुन्नालाल जी
१/८९	श्री विशालकीर्त्ति जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	परवार स० सि० बाबूलाल जी ध० प० सरस्वतीदेवी लोड़ुआ (टीकमगढ़) म० प्र०	
पश्चिमाभिमुख-दक्षिण की ओर				
१/९०	श्री वज्रधर जी	"	परवार सि० मोतीलाल रतनचद डेवड़िया मऊरानीपुर (झासी) उ० प्र०	
१/९१	श्री चन्द्रानन जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	चौ० चिरोंजीलाल पुत्र द्वारिकाप्रसाद पौत्र जिनेन्द्रकुमार प्रद्युम्न कुमार परवार, चिरगाव (झासी) उ० प्र०	प० गुलाबचद 'पुष्प' प० अजित-कुमार जी
१/९२	श्री भद्रबाहु जी	"	परवार श्रीमती (रामकुवरबाई) के भानजे ठाकुरदास जैन तालवेहट (झासी) उ० प्र०	प० मूलचद जी प० सुखानद जी
१/९३	श्री भुजगम जी	"	खडेलवालान्वयी श्रीमती उमरावदेवी ध० प० सेठ मिश्रीलाल बाकलीवाल गोहाटी (आसाम)	प० मूलचद अहार प० सुखानद बडमाडई

लेख संख्या	प्रतिमा का नाम	प्रतिष्ठा वि०सं० मास, तिथि	प्रतिष्ठापक	प्रतिष्ठाचार्य
उत्तराभिमुख-दक्षिण की ओर				
१/६४	श्री ईश्वर जी	"	गोलापूर्व पटवारी ग्याप्रसाद पुत्र बारेलाल चिनामन नागचद शीलचद पौत्र जयकुमार सनतकुमार लडवारी (टीकमगढ)	प० मूलचद जी प० सुखानद जी
१/६५	श्री नेमिप्रभ जी	"	गोलालारे ब्र० प० भगवतीबाई पुत्री चौ० मगनलाल जी तथा सौ० इन्द्राणी बहू ध० प० चौधरी बाबूलाल मागर म० प्र०	"
१/६६	श्री वीरसेन जी	"	गोलालारे सि० रतनचद जी शिवपुरी म० प्र०	प० मुन्नालाल जी प० पन्नालाल जी
१/६७	श्री महाभद्र जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	गोलापूर्व-बनोनया डॉ० मुन्नालाल जेन लार बुजुग (टीकमगढ) म० प्र०	
१/६८	श्री देवयश जी	२०३० फाल्गुन शु० १२, भौम	गोलापूर्व पाडेलीय वश के सेठ दामोदरदास पुत्र श्री कपूरचद लक्ष्मणप्रसाद पुत्र विमलचद फूलचद राजाराम गुलाबचद प्रेमचद हेमचद जैन समर्रा (टीकमगढ) म० प्र०	प० गुलाबचद पुष्प प० सुखानद जी
१/६६	श्री अजितवीर्य जी	२०२७ फाल्गुन कृ० ६, भौम	गोलालारे श्री राजधरलाल एडवोकेट मानेश्वरी चिरजाबाई जी झामी उ० प्र०	

विशेष–

लेख सख्या क्रमाक १/८ से १/६६ तक की सभी प्रतिमाएँ श्वेत सगमरमर पाषाण मे पद्मासन मुद्रा म निर्मित है। सभी की अवगाहना १८ इच और आसन १३ ५ इच चौडी है।

मन्दिर संख्या-२
भोंयरा-मन्दिर
मन्दिर-परिचय

यह शान्तिनाथ मुख्य मदिर मे प्रवेशद्वार से दक्षिण मे भूगर्भ मे है। यहाँ एक वेदिका की तीन कटनियो पर कुल ८६ प्रतिमाएँ विराजमान है। इनमे २८ पाषाण की और ६१ पीतल धातु से निर्मित है। प्रथम कटनी पर पाषाण प्रतिमाएँ २४ है। शेष चार दूसरी कटनी पर है। पीतल की प्रतिमाओ मे प्रथम कटनी पर ६, दूसरी पर ३२, और तीसरी पर १६ है। एक पीतल का मेरु है।

प्रथम कटनी पर विराजमान प्रतिमाएँ उत्तर से दक्षिण की ओर

लेख संख्या २/१००

(प्रा० शि० संग्र० पु०ले० सं० ११०)

महावीर प्रतिमालेख

मूलपाठ

सह् (शाह) सोनवल पुत्र नल समत् (सवत्) १५३१ म० (मगसिर) सु (शुक्ल) ३

प्रतिमा परिचय

पद्मासन मुद्रा मे २१ इच ऊँच और १० इच चौडे देशी पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा के शीर्षभाग मे दुदुभिवादक का अकन किया गया है। दोनो ओर हाथी अपनी-अपनी सूड उठाये हुए दर्शाए गये है। इन गजाकृतियो के पार्श्व भाग मे दोनो ओर एक-एक खड्गासन मुद्रा मे अर्हत् प्रतिमा है। इन प्रतिमाओ के नीचे एक-एक पद्मासन मुद्रा मे प्रतिमा और है। दोनो ओर मालाधारी उडते हुए तथा उनके नीचे चॅवरवाही देवो का अकन किया गया है। मध्य मे मूलनायक प्रतिमा है। इस प्रतिमा की आसन पर लाछन स्वरूप सिह अकित है। दो इतर सिह भी विपरीत दिशाओ मे मुख किये दर्शाये गये है। आसन पर उक्त लेख उत्कीर्ण है। भोयरे मे यह दूसरी सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा है।

विशेष–इस अभिलेख मे मास और पक्ष के लिए केवल आदि वर्ण लेकर 'मसु' लिखा गया है, जिसमे 'म' का अर्थ यह मगसिर मास और सु का अर्थ शुक्ल पक्ष समझा गया है।

लेख संख्या २/१०१

अर्हन्त-प्रतिमा

यह प्रतिमा आठ इच ऊँचे काले चिकने पालिस से सहित देशी नीले-काले पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा मे निर्मित है। प्रतिमा की अवगाहना ४॥ इच है। प्रतिमा की बायी ओर आभूषणो से अलकृत एक देव का अकन किया

गया है। इस देव के ऊपरी भाग मे पद्मासनस्थ एक अर्हन्त प्रतिमा विराजमान है। शिला खण्ड पर प्रतिमाओ के लिए गन्धकुटियो का निर्माण भी किया गया है। चन्देलकालीन शिल्प कला का यह अवशेष लाछन विहीन है। आसन पर कोई लेख भी नही है। सम्प्रति भोयरा मन्दिर-वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर साइड मे विराजमान है।

लेख संख्या २/१०२
आदिनाथ-प्रतिमालेख
प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निमित यह प्रतिमा १५ इच अवगाहना मे है। पाषाण की चौडाई एक फुट है। इस प्रतिमा की हथेली पर चार दल का कमल अकित है। आसन पर लाञ्छन स्वरूप वृषभ का अकन किया गया है। दो पक्ति का निम्न लेख है–

मूलपाठ

१ समत् (सवत्) १५४८ वरष (वर्षे) वसष (वैशाख) सुदी (दि) ३ मु (मूल) सघ (सघे) चद्र भट

२. रक (भट्टारक) जगजस सघ जसहज श्री जवरज (जीवराज) पपरवल (पापडीवाल) सरगकस

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे श के लिए स और ख वर्ण के लिए 'ष' वर्ण का व्यवहार हुआ है। मूल शब्द के लिए सकेतवाचक मु वर्ण आया है। इस प्रकार केवल आदि वर्ण देकर पूर्ण शब्द का बोध कराये जाने की लेखन शैली का यह इस काल का उल्लेखनीय उदाहरण है।

लेख संख्या २/१०३
अर्हन्त-प्रतिमालेख
मूलपाठ

सवत् १२४१ पहिल (पाहिल) सर्व्व।

पाठ-टिप्पणी

सरेफ वर्ण द्वित्व रूप मे लिखा गया है। इससे इस काल की लेखन शैली का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रतिमा-परिचय

भोयरे की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर चतुर्थ क्रमाक पर विराजमान यह प्रतिमा देशी मठमैले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निमित है। इसकी अवगाहना ८॥ इच तथा आसन की चोडाई ३। इच है। आसन पर

लाछन नहीं है। एक पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१०४

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १५--(४८) वीरस (वरिस) वसष (वैशाख) सुदी (दि) ३---(भट्टारक) जीवराज पापडीवाल

२ अपठनीय

३ अपठनीय

पाठ-टिप्पणी

लेख मे वीरस शब्द मे ई स्वर मूल रूप से 'इ' रहा है। उसका सयोजन 'र' वर्ण के साथ होना था। भूल से मात्रा का ऊपरी अश का घुमाव विपरीत दिशा मे उत्कीर्ण हो गया है। 'ख' वर्ण के लिए 'ष' का प्रयोग उल्लेखनीय है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर पाँचवे क्रमाक पर विराजमान है। इसका निर्माण सफेद सगमरमर पाषाण से हुआ है। सिर पर नौ फण दर्शाए गये है। फणो के ऊपर भी सर्प अकित किया गया है। लाछन स्वरूप आसन के मध्य मे भी सर्प उत्कीर्ण है। तीन पक्ति का उक्त लेख भी है। फणावलि से आसन तक इस प्रतिमा की अवगाहना १८ इच और आसन की चोडाई ११ इच है।

लेख संख्या २/१०६

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना लगभग १८ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण अकित है। तीन पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है जिसमे वीर निर्वाण सवत् २५०० विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन शुक्ला १२ भौमवार के दिन प्रतिमा प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है। प्रतिष्ठा करानेवाले वडी कारी (टीकमगढ) म०प्र० निवासी परवार फूलाबाई धर्मपत्नी स्व० भगवानदास, पुत्र कमलकुमार ध०प० कमलादेवी तथा वीरेन्द्रकुमार, मुन्नालाल, पप्पू, मनोजकुमार, चिन्तामन ध०प० पुष्पाबाई पुत्र सुनीलकुमार, प्रवीणकुमार, बाबूलाल ध०प० चिन्तामनबाई श्रावक-श्राविकाओ तथा प्रतिष्ठाचार्य प० गुलाबचन्द्र 'पुष्प' ककरवाहा और प० सुखानन्द बडमाडई के नाम दर्शाये गये है। यह प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर सातवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/१०७
महावीर-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ वीर निर्वाण सवत् २५०७ वि० स० २०३७ माघ शुक्लपक्षे बुधवासरे ४ मू० (मूल) स० (सघे) कुन्दकुन्दाम्नाये गोला–

२ पूर्वान्वये कर्मक्षयार्थ----शिवलाल भार्या चिरोंजादेव्या --------

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा ६ २ इच ऊँचे और ५ इच चौडे सगमरमर पाषाण पर पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा दो पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। लेख मे यह प्रतिमा गोलापूर्व शिवलाल और उनकी पत्नी तथा पुत्रों द्वारा प्रतिष्ठित कराये जाने का उल्लेख है। प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर आठवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/१०८
चन्दप्रभ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वीर नि० स० २५०२ वि० स० २०३२ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष गुरौ सरस्वनीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके लार बुजुर्ग टीकमगढ म० प्र० निवासी गोलापूर्वान्वये बनोनया वशोद्भवे श्री सि० मथुराप्रसाद तस्य ध० प० श्रीमती केशरबाई तस्यात्मज हरदास, छक्कीलाल, नाथूराम पौत्र वीरेन्द्रकुमार, कमलकुमार, विमलचद, राकेशकुमार, रजनीशकुमार, अभयकुमार इत्येभि मध्यप्रदेश टीकमगढ जिलाऽन्तर्गत श्री दि० जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये श्री शान्तिनाथ चैत्यालयेद बिम्ब सस्थापित पचकल्याणक-प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य नित्य प्रणमन्ति। प्रतिष्ठाचार्य श्री ब्र० मूलचन्द्र जी अहार।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना आसन सहित १८ इच तथा आसन की चौडाई १४ इच है। लाछन स्वरूप आसन के मध्य मे अर्द्धचन्द्र अकित है। आसन पर तीन पक्ति का उक्त मूलपाठ भी उत्कीर्णित है। लेख मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावक गोलापूर्व अन्वय मे बनोनया वश के सि० मथुराप्रसाद के पुत्र-पौत्रादि बताये गये है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर नौवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/१०९
चन्दप्रभ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१. संवत् १५४८ वर्षे---------अपठनीय
२ अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ७ इंच है। आसन की चौडाई ५ ७ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अकित है। दो पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा के हथेली मे चार दल का कमल पुष्प भी दर्शाया गया है। यह प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर दसवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११०
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

इसमे प्रतिमा प्रतिष्ठा का समय श्री वी० नि० स० २५०० वि० स० २०३० फाल्गुन शुक्ला १२ भौमवार बताया गया है। प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावक-श्राविकाओ मे गुरसराय (झासी) निवासी परवार अन्वय, रकिया मुर, वाझल्ल गोत्र मे उत्पन्न सौ० राजाबाई ध० प० मोदी छक्कीलाल उनके पुत्र गोविददास, लालचद, देवर रामभरोसे के नाम आये हैं। प्रतिष्ठाचार्यो मे प० ब्र० मूलचद जी अहार और प० पन्नालाल जी सादूमल के नाम बताये गये है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी आसन सहित अवगाहना १८ इच है। आसन की चौडाई १४ इच है। आसन के मध्य मे लांछन स्वरूप हरिण दर्शाया गया है। तीन पक्ति का लेख भी है जिसमे मूलपाठ की सामग्री दी गयी है। यह प्रतिमा भोयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर ग्यारहवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/१११
अर्हन्त-प्रतिमालेख
मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी मठमैले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। इसके पृष्ठभाग में भामण्डल दर्शाया गया है। इसकी अवगाहना ८॥ इच है। पाषाण

खण्ड की चौडाई ३ २ इच है। इसकी आसन न लाछन उत्कीर्ण है और न कोई प्रशस्ति-लेख। सम्प्रति यह प्रतिमा भोंयरे मे प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर बारहवें क्रमांक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११२
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१. सवत् १५४८ वरिष वसाष (वैशाख) सुदि—(३) मलसघे (मूलसघे) बलात्का-

२. रगने (णे)---------अपठनीय

३. --------- अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित की गयी है। आसन से फणावली तक इसकी अवगाहना १६ इच है। आसन की चौडाई १०॥ इंच है। सिर पर फणावली मे दस फण दर्शाये गये है जबकि सामान्यत ७, ६, ११ फण दर्शाये जाते है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप सर्प तथा उक्त तीन पंक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर तेरहवे क्रमाक से विराजमान है।

विशेष—प्रतिमा के सिर पर दस फणो का अकन उल्लेखनीय है।

लेख संख्या २/११३
अर्हन्त-प्रतिमालेख
मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी मठमैले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। इसके सिर पर तीन छत्र अंकित है। हाथो के नीचे दोनो ओर चँवरवाही एक-एक देव सेवारत खडा है। आसन पर न लाछन है और न कोई लेख। इसकी अवगाहना ७॥ इच है। आसन की चौड़ाई ३ २ इच है। यह प्रतिमा भोंयरे मे वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर चौदहवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११४
अमरनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१. सवत् १५४८ वरिष्स (वर्ष) वसष (वैशाख) सुदी (सुदि)-(३) जीवराज पापडीवाल।

२ अपठनीय

३ अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित की गयी है। इसकी आसन सहित अवगाहना १३ इच तथा आसन की चौडाई १० इंच है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप मच्छ तथा लाछन की दोनो ओर उक्त तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर पन्द्रहवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११५

अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी गौरा पत्थर से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। आसन सहित इसकी अवगाहना ४ ६ इच है तथा आसन की चौडाई ३ १ इच है। आसन पर लेख और लाछन दोनो अकित नहीं है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर सोलहवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११६

सुपार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवदि (सवत्) १८६६ जेठ (ज्येष्ठ) वदी (दि) ६—सिघई सनकुटा तत्पुत्र—

२ स्यौकातिहा उरकरी (चिह्न) प्रथम वडजुट्टती परम त्रि श्री कमलायत चतुरघ किसुन सीघ (सिघई) तत्पर भय नदउ परसादी।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे 'जेठ' शब्द हिन्दी भाषा का प्रयुक्त हुआ है। सिघई पद के लिए सीघ शब्द आया है। इसका प्रयोग नाम के आदि मे प्रयुक्त न होकर बाद मे हुआ है। 'सनकुटा'- गोलापूर्व अन्वय का एक गोत्र है। इस गोत्र के अनेक गोलापूर्व परिवार पडवार (सागर के निकट) ग्राम मे रहते थे जो वहॉ से आकर सागर मे रहने लगे है।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के सनकुटा वश मे हुए किसी श्रावक की दो पुत्र-वधुओं में प्रथम बडी बहू के श्रेष्ठ तीन पुत्र-श्री कमलापत, चतुरथ और किशुन सिंघई तथा किसुन के पुत्र परसादी ने सवत् १८६६ जेठ वदी षष्ठी

तिथि मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी नीले-काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इस पर चिकना चमकदार काला पालिश है। आसन पर लाछन स्वरूप मध्य मे स्वस्तिक तथा उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा की अवगाहना १२॥ इच है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर सत्रहवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/११७
अर्हन्त-प्रतिमालेख

प्रतिमा-परिचय

देशी काले मठमैले पाषाण से निर्मित पद्मासनस्थ इस प्रतिमा की अवगाहना १॥ इच है। चिह्न और लेख नहीं है। सम्प्रति भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर अठारहवे क्रम से विराजमान है।

लेख संख्या २/११८
अर्हन्त-प्रतिमालेख

काले चिकने पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की आसन सहित अवगाहना ३.२ इच है। सामने आसन की लम्बाई २ १ इच है। प्रतिमा के दोनो कर्ण स्कन्ध भाग का स्पर्श कर रहे है। लेख और लाछन दोनो नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर उन्नीसवे क्रम से विराजमान है।

लेख संख्या २/११९
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १५४८
२. सुदि ३ मूलसघे भट्टारक जि (जी) श्री जी (जि) न (चं) द---(अपठनीय)

प्रतिमा-परिचय

काले चिकने पालिश से सहित काले-नीले पाषाण से निर्मित पद्मासनस्थ इस प्रतिमा की अवगाहना आसन से फणावलि तक ४ २ इच तथा सामने आसन की लम्बाई ३ इच है। सिर पर सात फण दर्शाए गये है। पाच फण मुँह से खण्डित है। आसन पर दो पक्ति का लेख है। यह भोयरे में प्रथम कटनी पर बीसवे क्रमाक से विराजमान है।

लेख संख्या २/१२०
महावीर-प्रतिमा

काले चिकने पालिश से सहित पद्मासनस्थ यह प्रतिमा ४ इंच अवगाहना मे अंकित है। सामने आसन की लम्बाई कुछ कम ३ इंच है। लाञ्छन स्वरूप आसन पर सिंह अंकित है। वक्षस्थल पर अष्ट दलीय श्रीवत्स सुशोभित है। कर्ण स्कन्धो का स्पर्श कर रहे है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर इक्कीसवे क्रम से विराजमान है। आसन पर लेख उत्कीर्ण नहीं है।

लेख संख्या २/१२१
सुमतिनाथ-प्रतिमालेख
प्रतिमा-परिचय

चिकने काले पालिश से सहित देशी हरे-काले पाषाण से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे आसन सहित इस प्रतिमा की अवगाहना ४ इंच है। आसन पर लांछन स्वरूप चकवा अंकित है। एक पंक्ति का अपठनीय लेख भी उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर बाईसवे क्रम से विराजमान है।

लेख संख्या २/१२२
चन्दप्रभ-प्रतिमालेख
प्रतिमा-परिचय

देशी काले लाल पाषाण से निर्मित काले चिकने पालिश से सहित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की अवगाहना ४ ६ इंच है। सामने आसन की लम्बाई ३ २ इंच है। लाछन स्वरूप आसन पर अर्धचन्द्र अंकित है। वक्षस्थल पर अष्ट दलीय श्रीवत्स चिह्न भी उत्कीर्ण किया गया है। लेख नहीं है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर तेईसवे क्रम पर स्थित है।

लेख संख्या २/१२३
महावीर-प्रतिमालेख
प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले पाषाण से निर्मित काले चिकने पालिश से सहित पद्मासनस्थ इस प्रतिमा की अवगाहना ५॥ इंच और सामने आसन की लम्बाई ३ ६ इंच है। आसन के मध्य में लाछन स्वरूप पूँछ उठाए सिंह अंकित किया गया है। वक्षस्थल पर अष्ट दलीय श्रीवत्स भी शोभा बढा रहा है। यह प्रतिमा भोंयरे में वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर चौबीसवे क्रम पर विराजमान है। लेख उत्कीर्ण नहीं है।

लेख संख्या २/१२४
अर्हन्त-प्रतिमा

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना आसन सहित २ इच और सामने आसन की लम्बाई १८ इच है। चिह्न और लेख नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१२५
चन्दप्रभ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

सवत् १७६१------

प्रतिमा-परिचय

भोयरे मे प्रथम कटनी पर विराजमान पीतल धातु से निर्मित प्रतिमाओ मे यह दूसरी प्रतिमा है। पद्मासन मुद्रा मे इसकी अवगाहना १७ इच है। आसन की चौडाई भी इतनी ही है।

विशेष--इसकी दो विशेषताएँ है। इनमे प्रथम विशेषता है लांछन की। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अधोमुख उत्कीर्ण है। दूसरी विशेषता है लेख सम्बन्धी। सामान्यत लेख आसन पर सामने उत्कीर्ण मिलता है किन्तु इस प्रतिमा का सवत् सूचक लेख प्रतिमा के तल भाग मे अकित है।

लेख संख्या २/१२६
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

स० (सवत्) १६६३ वर्ष म० (मगसिर) प० (पक्ष) सु० (सुदि) ६।

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ मे स, म, प, सु शब्दो के आदि वर्ण देकर उन शब्दो का बोध कराया गया है जिन्हे मूलपाठ मे कोष्टक के अन्तर्गत लिखा गया है। सक्षिप्त लेखन शैली का यह सुन्दर उदाहरण है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे पीतल धातु से निर्मित है। इसके सिर पर नौ फण दर्शाए गये है। इसकी अवगाहना फणावली से आसन तक २२ इच है। आसन की चौड़ाई २ इच है। आसन पर उक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भोयरे में प्रथम कटनी पर विराजमान तीसरी पीतल धातु की प्रतिमा है।

लेख संख्या २/१२७
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् १७२५------अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

भोयरे मे विराजमान प्रथम कटनी पर पीतल धातु की यह चौथी प्रतिमा है। यह पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसके सिर पर सप्त फणावली है। आसन से फणावली तक इसकी अवगाहना २.२ इच तथा आसन की चौडाई २.१ इच है। आसन पर उक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है जिसका केवल सवत् ही पठनीय रह गया है।

लेख संख्या २/१२८
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १७११ अगहन वदि ११ सु (शु) के भट्टा-
२ रक श्री पद्मकीर्ति प० हीरामनि (णि)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श के लिए 'स' तथा ण के लिए 'न' वर्ण प्रयुक्त हुआ है।

भावार्थ

इस प्रतिमा की सवत् १७११ अगहन वदी ११ शुक्रवार के दिन भट्टारक पद्मकीर्ति के उपदेश से प्रतिष्ठा हुई। प० हीरामणि के प्रतिष्ठाचार्य होने की सभावना है।

प्रतिमा-परिचय

भोयरे की वेदी मे प्रथम कटनी पर पीतल धातु की यह पाँचवी प्रतिमा है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा मे हुआ है। इसकी अवगाहना ३ इच है। आसन की चौड़ाई २॥ इच है। सिर पर सात फण दर्शाए गये है। आसन पर उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१२९
महावीर-प्रतिमालेख

मूलपाठ

अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

भोंयरे में प्रथम कटनी पर पीतल धातु की यह छठीं प्रतिमा है। पद्मासन

मुद्रा मे आसन सहित इसकी अवगाहना ३ इंच तथा आसन की चौड़ाई २.३ इंच है। आसन पर लांछन स्वरूप सिह तथा अपठनीय लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१३०

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. स० (सवत् १३५२ फा० सु० (फाल्गुन सुदि) ६
२. परसदी (परसादी) साति (शाति) ----------
३. -------अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

ताम्र मिश्रित पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की आसन सहित अवगाहना ३ इच है। आसन की चौडाई २॥ इंच है। सिर की फणावली टूट गई है। उक्त अभिलेख आसन के पृष्ठभाग मे उत्कीर्ण है। वर्तमान मे यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर विराजमान है। यहाँ इस कटनी पर पीतल की यह सातवी प्रतिमा है।

लेख संख्या २/१३१

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. सवत् १७६१ भ० (भट्टारक) श्री देवेंद्रकीर्ति के
२ पद साह वीरसाहि ॥

प्रतिमा-परिचय

भोयरे मे वेदी की प्रथम कटनी पर यह पीतल की आठवी प्रतिमा है। इसका निर्माण ताम्र मिश्रित पीतल से हुआ है। इसके सिर पर नौ फण दर्शाये गये है। मध्य फण के ऊपर भी फण अकित है। इसकी अवगाहना आसन सहित ४ इच है। आसन की चौडाई २ ३ इच है। आसन पर दो पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१३२

अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

लेख प्रतिमा के पृष्ठभाग मे उत्कीर्ण है किन्तु अपठनीय हो गया है।

प्रतिमा-परिचय

इसका निर्माण पीतल धातु से हुआ है। पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा एक गोल आसन पर विराजमान है। इसकी अवगाहना २ इच है। लांछन नहीं है।

लेख संख्या २/१३३
चौबीसी-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ सवत् १८५६ फागुन (फाल्गुण) मासे सुकल (शुक्ल) पक्षे दमी (दसमी) गुरवासरे श्री मु (मू) लसघे बलातके गने (वलात्कारगणे) सरसुतीगछे (सरस्वतीगच्छे) श्री कुंदाकुदा आचर्जानवए (कुदकुंदाचार्यान्वये) परगनौ ओरछा नग्रे वासि श्री

२ माधौ राजाधिरज (राज) विक्रमजीत साव गोलापुराव (गोलापूर्व) षु (खु) रदेले उमेदा लदसहि उमेदा तत्पुत्र रसव (ऋषभ) सुष (ख) दरेल पुत्र नलरले प्रतमपती सुतं नीति प्रनमते।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे बोलचाल मे प्रयुक्त हिन्दी भाषा का भी व्यवहार हुआ है।

प्रतिमा-परिचय

मध्य मे मूलनायक प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे अंकित है इस प्रतिमा की दोनो ओर एक-एक खड्गासन मुद्रा मे प्रतिमाएँ है। इन प्रतिमाओ के समीप मे एक के नीचे एक दोनो ओर दो-दो पद्मासनस्थ प्रतिमाएँ विराजमान है। फलक के सर्वोपरि प्रथम भाग मे पद्मासनस्थ एक, दूसरे भाग मे चार, तीसरे और चौथे मे छह-छह, पाचवे मे सात प्रतिमाएँ अंकित है। इस प्रकार कुल २४ प्रतिमाएँ है जिनमे २२ पद्मासनस्थ तथा २ खड्गासनस्थ है। सम्पूर्ण फलक पाच भागो मे विभाजित है। मूल नायक प्रतिमा की दोनो ओर एक एक चँवरवाही इन्द्र अंकित है। नीचे दो हाथी तथा लाछन स्वरूप कमल दर्शाया गया है। लांछन से यह पद्मप्रभ की चौबीसी ज्ञात होती है। आसन पर उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

यह पीतल धातु से निर्मित है। इसकी अवगाहना १८ इच तथा चौडाई १४॥ इच है। सम्प्रति यह चौबीसी भोयरे की वेदी मे दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१३४
रत्नत्रय-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१. सवंत् १८५६ फागुन (फाल्गुन) सुद (सुदि) १० गुरवरे (गुरुवारे) सुकल (शुक्ल) पक्षे श्री मु. (मूल) संघे वलातक गने (वलात्कारगणे) सर (सरस्वतीगच्छे) कुंदकुदा (कुंदकुदाचार्याम्नाये) परगनौ ओरछो नग्र बंध (बधा) श्री राजाधिरज (राज) विक्रमजीतयो (साव) तत्पुत्र षु (खु) रदेले

गो० (गोलापूर्वान्वये) श्रीलला सह

२. ------------अपठनीय

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे बुन्देलखण्ड मे बोलचाल मे व्यवहृत हिन्दी भाषा के शब्द भी प्रयुक्त हुए है। सक्षिप्त नामो मे मु, सर, गो जैसे वर्ण सकेत रूप मे लिखे गये है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से निर्मित यह फलक तीन खण्डो मे विभाजित है। इन खण्डो मे एक-एक खड्गासन मुद्रा मे प्रतिमा अकित है। प्रत्येक प्रतिमा के सिर पर एक छत्र दर्शाया गया है। मध्यवर्ती खण्ड मे तीर्थकर अरहनाथ की प्रतिमा है। अरहनाथ प्रतिमा की दायी ओर शान्तिनाथ तथा बायी ओर कुन्थुनाथ तीर्थकरो की प्रतिमाएँ अकित है। शान्तिनाथ प्रतिमा के नीचे आसन पर लाछन स्वरूप हरिण, कुन्थुनाथ प्रतिमा की आसन पर बकरा और अरहनाथ प्रतिमा की आसन पर मच्छ उत्कीर्ण किया गया है। तीनो प्रतिमाओ की अवगाहना ५ इच है। आसन पर उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण किया गया है। इसकी प्रतिष्ठा गोलापूर्वान्वय के खुरदेले वश मे हुए विक्रमजीत के पुत्रो के द्वारा कराई गई थी। वे बध नगर के निवासी थे। यह फलक भोयरे मे विशेष वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है। इस फलक मे प्रतिमाओ की स्थिति क्रम मे मूलभूत परिवर्तन हुआ है। अब तक अहार, सिहोनियाँ आदि जहाँ भी रत्नत्रय प्रतिमाओ के अवशेष उपलब्ध हुए है उनमे शान्तिनाथ की प्रतिमा मध्य मे, शान्तिनाथ प्रतिमा की बायी ओर कुन्थुनाथ प्रतिमा और दायी ओर अरहनाथ प्रतिमा की स्थिति प्राप्त हुई है। प्रस्तुत फलक मे तीर्थकर अरहनाथ की प्रतिमा मध्य मे है। उसकी बायी ओर कुथुनाथ प्रतिमा तथा दायी ओर शातिनाथ-प्रतिमा है। सभवत यह परिवर्तन लाछन क्रम में हुई भूल के कारण हुआ है।

लेख संख्या २/१३५

अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ उ (ओं) सवतु (सवत्) १६६१ माघ सुदि १४ बुधे भट्टारक श्री रत्नकीर्त्तिः

२. पटवारी जीतसु.

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सवत् १६६१ मे माघ सुदी चतुर्दशी बुधवार के दिन हुई। भट्टारक रत्नकीर्त्ति सभवतः इस प्रतिष्ठा के प्रेरक और जीतसु पटवारी प्रतिष्ठाता थे।

विशेष–यहाँ 'पटवारी' गोलापूर्व अन्वय के एक गोत्र (वश) का नाम है। जीतसु सभवत. गोलापूर्व था। इस वंश के श्रावक छतरपुर म० प्र० मे वकस्वाहा नगर मे आज भी विद्यमान है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। लाछन नहीं है। इसकी अवगाहना आसन सहित ७ इच है। आसन ३ इच चौकोर चौड़ी है। दो पक्ति का उक्त लेख आसन पर उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१३६
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् २०१४--------------------अपठनीय

प्रतिमा परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ३॥ इच तथा आसन की चौडाई ३ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा एक पक्ति मे उक्त लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१३७
महावीर-प्रतिमालेख

मूलपाठ

श्री वर्द्धमानाय नम (१) विक्रम सवत् २०२१ फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे १२ रविवासरे श्री मूलसघे कुदकुदाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भारतगणराज्ये टीकमगढ मण्डलान्तर्गते पपौरा क्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्यमिद विम्ब नित्य प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्य श्री प० बारेलाल जी पठा, श्री ब्र० मूलचन्द्र जी।

प्रतिमा-परिचय

गिलट धातु से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की अवगाहना ४ इंच और आसन की चौडाई ३.१ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा दो पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है जिसमे पपौरा क्षेत्र मे आयोजित सवत् २०२१ के गजरथ महोत्सव मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे में वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१३८
महावीर-प्रतिमालेख
मूलपाठ

स० (सवत्) १६७६——————————भगवानदास

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से निर्मित यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे है। इसकी अवगाहना ४ इच तथा आसन की चौडाई ३.३ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर सिह अकित है। एक पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है, जो अपठनीय हो गया है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१३९
महावीर-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ (स्वस्ति श्री) वि० (वीर) नि० (निर्वाण) स० (सवत्) २५०० फाल्गुण मासे
२ शुक्लपक्षे १२ भौमवासरे सवत् (वि० स०) २०३० कु० कु० आ० (कुदकुदाचार्यान्वये) वलात्कार-
३ गणे सरस्वतीगच्छे श्री दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहार

पृष्ठ भाग

१ टीकमगढ मण्डलान्तर्गते श्री पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य
२ वैसा निवासी सि० (सिघई) प्यारेलाल तस्य पुत्र भरोसीलाल, वीरेन्द्रकुमार, मोजीलाल, कपूरचद, दुलीचद
३ वैसा मन्दिर प्रणमति।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ४ इच तथा आसन की चौडाई ३ ३ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४०
महावीर-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ स्वस्ति श्री वि० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २५०० वि० स० (विक्रम संवत्) २०३०
२. फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे १२ भौमवासरे श्री मूलसघे
३. कुदकुंदाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैनधर्म

४. प्रतिपालके सोंरई (झासी) उ० प्र० (उत्तर प्रदेश) वासी गोलापूर्वान्वये

पृष्ठभाग

१ ब्र० (ब्रह्मचारी) दयाचद तस्य भार्या ज्ञानबाई तस्यात्मज सतोषकुमार, राजकुमार, अजितकुमार श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय सदन (इत्येभि मध्यप्रदेशे टीकमगढ जिलाऽन्तर्गते श्री सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये श्री मज्जिनेन्द्र पचकल्याणक)

२ बिम्ब प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ-जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी एव विद्यमान बीस तीर्थंकर चैत्यालये

३. दि० (दिगम्बर) विम्ब सकल कर्मक्षयार्थं संस्थापितं नित्य प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्य प० (पण्डित) मूलचद अहार, प० (पण्डित) सुखानंद बडमाडई ॥

प्रतिमा-परिचय

गिलट धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ५ इच और आसन की चौडाई ३॥ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४१

आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ श्री वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २५०१ फाल्गुन कृष्णा क० ल० पू० त० स० दि०

२ तिथौ १२ रविवासरे वि० स० (विक्रम सवत्) २०३१ श्री दि० (दिगम्बर) जैन कुदकुद

३ आ० (आम्नाय) सरस्वती ग० (गच्छ) ब० वलात्कारगण पचकल्याणक

पृष्ठभाग

१ प० दे० ब्र० प० (प्रतिष्ठाचार्य देशव्रती ब्रह्मचारी पण्डित) शिखरचद प० बारेलाल प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठित

२. नरसिहपुर तेदूखेडा ग्राम वासिन्य गोलापूर्व साधेलीय वशे सि० (सिंघई) डा० कन्छेदीलालस्य

३ भार्या जमनीबाई तस्यात्मजौ दिनेश-महेशकुमारौ जैनश्च नित्य प्रणमति प्रतिष्ठायां।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा गिलट धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना

४ इच है। आसन की चौडाई ३.२ इंच है। आसन पर लांछन स्वरूप वृषभ तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे में वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४२
महावीर-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओ नम सिद्धेभ्य वि० स० (विक्रम संवत्) २०३३ फाल्गुन मासे सु० (सुदि)

२ एकादश्या मगलवासरे कटनी नाम (नाम्नि) नगरे प्रतिष्ठाया गो० (गोलापूर्व) वनो० (बनोनया) सि० (सिघई) माणिकचद पुत्र रतनचद तस्य ध० प० (धर्म पत्नी) गेदाबाई देवर अमरचद, भागचद लार ग्राम (१) प्रतिष्ठाचार्य प० (पण्डित) पन्नालाल जैन शास्त्री, प० (पण्डित) मूलचन्द अहार।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ४ ७ इच तथा आसन की चौडाई ३ ६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर स्थित है।

लेख संख्या २/१४३
महावीर-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओं नमः श्री कुद कुद आम्नाये मूलसघे व० ग० स० ग० (वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे) वि० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २४८४ फाल्गुन सु० (सुदि) ४ श्री अहारक्षेत्रे गजरथ-पचकल्या-

२ णक प्रतिष्ठाया प्रति० (प्रतिष्ठित) प० (पण्डित) सिद्धिसागर, प० मूलचद, प० नन्हेलाल, प० दयाचद, प० पन्नालाल, प० गुलाबचद, प्रतिष्ठायासु स० सि० (सवाई सिघई) देश

३. राज तस्य आ० (आत्मज) हीरालाल, आत्मज दीपचंद अनंदीलाल जैन हटा ग्रामे जिन स्थापितम्।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ४.६ इच तथा आसन की चौड़ाई ३ ७ इंच है। लाछन स्वरूप आसन पर सिंह तथा

उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोंयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४४
आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् १६६७ चैत सुदी १३ पल्टू------सरकनपुर प्रतिष्ठितम्।

भावार्थ

विक्रम सवत् १६६७ चैत सुदी तेरस तिथि मे सरकनपुर निवासी पल्टू श्रावक ने प्रतिष्ठा कराई।

विशेष—सरकनपुर एक छोटा ग्राम है। यह अहार क्षेत्र का निकटवर्ती है। यहाँ आज भी जैन श्रावक रहते है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे पीतल धातु से निर्मित है। इसकी अवगाहना ४ इच तथा आसन की चौडाई ३ २ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४५
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २५०० फाल्गुण मासे
२. शुक्लपक्षे १२ भौमवासरे कु० कु० आ० (कुन्दकुन्द-आम्नाये) बला-
३ त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र

पृष्ठभाग

१ अहार टीकमगढ मण्डलान्तर्गते श्री पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य
२ परवरान्वये श्री कोमलचद ध० प० (धर्म पत्नी) मथराबाई छतरपुर म० प्र० वासी विम्व प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्य श्री ब्र० मूलचद अहार

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा छतरपुर निवासी गोदियावाले श्री कोमलचद ने कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। सिर पर सप्त फणावली है। इसकी अवगाहना ४ इच और चौडाई २॥ इंच है। लाछन स्वरूप आसन पर सर्प और उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे

वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४६

सिद्ध-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ नम· श्री कुंदकुदाचार्य आम्नाये मूलसघे वी० नि० सं० (वीर निर्वाण सवत्) २४८४ फाल्गुन शुक्ला ४ अहार-क्षेत्रे पचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया गोलापूर्व पटवारी भगवानदास खरगापुर मदिरे स्थापितम्।

भावार्थ

अहार क्षेत्र मे वी० नि० स० २४८४ मे हुए गजरथ महोत्सव मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा गोलापूर्व अन्वय मे पटवारी वंश के खरगापुर निवासी भगवानदास ने कराई।

विशेष

खरगापुर—अहार क्षेत्र का समीपवर्ती ग्राम है। यहाँ आज भी इस अन्वय के श्रावक रहते है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु की इस प्रतिमा की अवगाहना ५२ इच है आसन की चौडाई ३१ इच है। आसन पर उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४७

सिद्ध-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ नम सिद्धेभ्य· वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २५०० फाल्गुन शुक्ल १२

२ भौमवासरे श्री दि० (दिगम्बर) जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये प्रतिष्ठाप्य सोरई (झांसी) निवासी गोलापूर्व जातीय मरैया वशे श्री ब्र० (ब्रह्मचारी) दयाचद, कुंजीलाल, श्री कुदकुद दि० (दिगम्बर) जैन

३ स्वाध्याय मण्डल नित्य प्रणमति।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा गोलापूर्व के मरैया वश मे उत्पन्न ब्र० दयाचद और कुजीलाल ने वी० नि० स० २५०० में कराई।

प्रतिमा-परिचय

इस प्रतिमा का निर्माण पीतल धातु से हुआ है। इसकी अवगाहना ६॥ इंच तथा चौड़ाई ३.७ इंच है। आसन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। वर्तमान मे

यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४८

सिद्ध-प्रतिमालेख

मूलपाठ

श्री वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २४८७ फाल्गुन कृष्ण ८ बुधे महरौनी गजरथ प्रतिष्ठाया दिगम्बर जैन गोलापूर्व ब्र० प० (ब्रह्मचारी पण्डित) मूलचद तस्यात्मज पं० (पण्डित) कन्छेदीलाल साधेलीय द्वारा प्रतिष्ठापितम्।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा गोलापूर्व ब्र० मूलचद के पुत्र प० कन्छेदीलाल ने वी० नि० स० २४८७ मे कराई।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ५ इच और चौडाई ३॥ इच है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१४६

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् १६८८--------------शेष अपठनीय है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना फणावली सहित ३ २ इच तथा आसन की चौडाई १ ७ इच है। सिर पर ६ फण दर्शाये गये है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५०

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् १८६१ वैष (वैशाख) सुदि ५ सोमवासरे क्षेत्र पपौ----(रा मध्ये)

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा पपौरा क्षेत्र मे संवत् १८६१ मे हुई (और अहार क्षेत्र मे स्थापित की गई)।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित। इस प्रतिमा की अवगाहना फणावली सहित २॥ इच तथा आसन की चौडाई २ १ इच है। सिर पर सात फण है। आसन पर एक पक्ति का उक्त लेख है। सम्प्रति यह भोयरे मे वेदिका

की दूसरी कटनी पर स्थित है।

लेख संख्या २/१५१
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

प्रतिमा के पृष्ठभाग मे लेख उत्कीर्ण है जो अपठनीय हो गया है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से निर्मित यह प्रतिमा पद्मासनस्थ है। इसकी अवगाहना फणावली सहित २ ३ इच है। आसन की चौडाई १ ७ इच है। सिर पर नौ फण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५२
अर्हन्त-प्रतिमा-परिचय

पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ३ इच और आसन की चौडाई २ इच है। आसन पर लाछन और लेख दोनो नही है। प्रतिमा भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५३
अर्हन्त-प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना २ ७ इच और आसन की चौडाई २ इच है। लाछन और लेख नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५४
अर्हन्त-प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना २ ६ इंच है। आसन की चौडाई २ इच है। लाछन और लेख दोनो नहीं है। प्रतिमा भोयरे में वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५५
अर्हन्त-प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निमित है। इसकी अवगाहना २ ७ इंच और आसन की चौडाई २ इच है। लाछन और लेख नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५६
अर्हन्त-प्रतिमालेख
मूलपाठ

स० (संवत्) १६७१ वै० सु० (वैशाख सुदि) ५ (पचमी)।

प्रतिमा-परिचय

सवत् १६७१ मे प्रतिष्ठित पीतल की यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे है। इसकी आसन सहित अवगाहना २॥ इच तथा आसन की चौडाई २ इच है। आसन पर उक्त एक पक्ति का लेख है। लाछन नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५७
अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. स. (सवत्) १६६६ वर्षे चैत्र सुदि १५-----(भौमवासरे)

२ ---------अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

पीतल की पद्मासनस्थ इस प्रतिमा की अवगाहना आसन सहित २ इच है। आसन की चौडाई १ ७ इच है। दो पक्ति का उक्त लेख है। लांछन नहीं है। प्रतिमा भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१५८
रत्नत्रय-प्रतिमालेख

मूलपाठ

श्री वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २४६८ माघ सुदि ११ बुधवासरे मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे दि० (दिगम्बर) जैन कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये गुरोपदेशात् इन्दौर नगरे जिनबिम्व प्रतिष्ठितेद बडमणि (बडवानी) निवासी परवरान्वये श्री चौ० (चौधरी) प्यारेलाल, काशीप्रसाद, त्रैशाखिया अयोध्याप्रसाद प्रतिष्टाप्य अहार क्षेत्रे स्थाप्य नित्य प्रणमति।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा वी० नि० स० २४६८ में इन्दौर नगर मे हुई तथा अहार क्षेत्र मे विराजमान की गई। परवार अन्वय के चौ० प्यारेलाल काशीप्रसाद अयोध्याप्रसाद ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

पीतल के एक फलक पर क्रमश शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ तीर्थकरो की खड्गासनस्थ तीन प्रतिमाएँ निर्मित है। आसन पर क्रमश लाछन स्वरूप हरिण, बकरा और मच्छ उत्कीर्ण है। शाति और अरह की अवगाहना ४ ३ इच तथा कुन्थुनाथ की ५ इच है। आसन पर उक्त लेख है। प्रतिमा भोयरे मे दूसरी कटनी पर है।

विशेष

इस फलक मे प्रतिमाएँ काल क्रम मे दर्शाई गई है जबकि रत्नत्रय प्रतिमाओ मे मध्य मे शान्तिनाथ-प्रतिमा होती है तथा बायी ओर कुन्थुनाथ एव दायी ओर अरहनाथ-प्रतिमा। अहार मे यही क्रम दर्शाया गया है।

लेख संख्या २/१५६

रत्नत्रय-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवन्त (सवत्) ११०६

२ राउ वीहिनु देहिनु पोलु उजेण

३. कालू रोदी

प्रतिमा-परिचय

पीतल के एक फलक पर तीन प्रतिमाएँ निर्मित है। ये तीनो खड्गासन मुद्रा मे है। मध्य मे शान्तिनाथ तथा इसकी दायी ओर कुथुनाथ एव बायी ओर अरहनाथ तीर्थकर प्रतिमा है। यह प्रतिमा क्रम उचित नही है। कुथुनाथ प्रतिमा बायी ओर और अरहनाथ प्रतिमा दायी ओर होनी चाहिए थी। अहार के मुख्य मदिर की रत्नत्रय प्रतिमाओ का क्रम यही है। इन प्रतिमाओ लाछन और शासन देवियॉ भी अकित है। कुथुनाथ की शासन देवी कुथुनाथ प्रतिमा की दायी ओर, अरहनाथ की प्रतिमा की बायी ओर तथा शान्तिनाथ की शासन देवी नीचे अकित है। ये खड्गासन मुद्रा मे है। शान्तिनाथ प्रतिमा की आसन पर लाछन स्वरूप हरिण, कुथुनाथ-प्रतिमा की आसन पर बकरा और अरहनाथ प्रतिमा की आसन पर मच्छ अकित है। लेख-फलक के पृष्ठभाग मे उत्कीर्ण है। घिस जाने से अपठनीय हो गया है। धातु प्रतिमाओ मे यह यहॉ की सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा है। सम्प्रति यह भोयरे मे वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६०

पंच बालयति अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

सवत् १५२७ वर्षे माघ सुदि १५--------अपठनीय

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर स्थित है। पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इस फलक मे पॉच प्रतिमाएँ है। पद्मासनस्थ मूलनायक प्रतिमा के सिर पर छत्र अकित है तथा छत्र के ऊपरी भाग मे दुन्दुभिवादक। दोनो ओर सूंड उठाए एक-एक हाथी और हाथियो के नीचे पद्मासनस्थ एक-एक तथा एक-एक खड्गासनस्थ अर्हन्त प्रतिमाएँ है। नीचे चवर

लिए सेवारत सौधर्म और ऐशानेन्द्र खडे है। मूल नायक प्रतिमा की दायीं ओर सभवत उनका शासन देव और बायी ओर शासन देवी अकित है। उपासको की प्रतिमाएँ भी है। आसन पर एक पक्ति का उक्त अपठनीय लेख भी है। इस फलक की अवगाहना आसन सहित ६॥ इच और आसन की चौडाई ४ इच है।

लेख संख्या २/१६१

मेरु-लेख

मूलपाठ

स० (सवत्) १६८४ प० (पण्डित) श्री धर्मकीर्त्ति
उपदेशात् सेठ चतुर-----------------सुता एते नमत।

भावार्थ

इस मेरु की प्रतिष्ठा सवत् १६८४ मे पण्डित धर्मकीर्त्ति के उपदेश से सेट चतुराप्रसाद के पुत्रो ने कराई।

मेरु-परिचय

यह पीतल से निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ इच है। शीर्ष भाग मे चारो दिशाओ मे मुख किये एक एक खड्गासनस्थ अर्हन्त प्रतिमा है। नीचे उक्त लेख उत्कीर्ण है। यह मेरु भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६२

मेरु-लेख

मूलपाठ

सवत् १६५८---------------अपठनीय

मेरु-परिचय

इसकी अवगाहना ८॥ इच है। शीर्ष भाग मे हर दिशा की ओर मुँह किये एक-एक खड्गासनस्थ अर्हन्त प्रतिमा विराजमान है। नीचे उक्त लेख उत्कीर्ण है। मेरु भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर स्थित है।

लेख संख्या २/१६३

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

बहुत छोटे अक्षरो मे लिखे जाने से लेख पढा नहीं जा सका। तीन पक्ति के इस लेख मे वी० नि० सं० २५१४ श्री कैलाशचद सुभाषचद 'कोठिया' द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे पीतल से निर्मित है। इसकी अवगाहना ३.१

इच तथा आसन की चौडाई २ ३ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण अकित है। प्रतिमा भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६४
आदिनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

इस लेख मे भी बहुत छोटे अक्षर है अत पढा नही जा सका। तीन पक्ति के इस लेख मे प० बाबूलाल, अशोककुमार, सतोषकुमार, उपेन्द्रकुमार, ज्ञानचन्द्र टीकमगढ द्वारा सवत् २०४४ मे इस प्रतिमा के प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ३ इच और आसन की चौडाई २ २ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अकित है। प्रतिमा भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६५
त्रिमूर्ति-अर्हन्त-प्रतिमालेख
मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से निर्मित है। इसकी अवगाहना १४ इच और चौडाई ६ इच है। इस फलक मे तीन प्रतिमाएं है। तीन गधकुटियो मे विराजमान है। मध्य की प्रतिमा पद्मासनस्थ २ इच ऊँची है। इसकी दोनो ओर एक-एक खड्गासनस्थ प्रतिमा है। इनकी अवगाहना २-२ इच है। लाछन और लेख आसन पर नहीं है। अवशेष प्राचीन है। यह फलक भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६६
पंच बालयति-प्रतिमालेख
मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

यह पाषाण फलक देशी काले-मटमैले रग का है। इसकी ऊँचाई १० इच और चौडाई ५॥ इंच है। इस फलक मे पाच प्रतिमाएँ है। एक मूल नायक प्रतिमा तीन गधकुटी मे विराजमान है। इसके सिर पर तीन छत्र प्रदर्शित है।

दोनो ओर एक-एक उडते हुए मालाधारी देव, उनके नीचे हाथी सूड उठाये अकित है। मूल नायक प्रतिमा की अवगाहना २ इच है। यह प्रतिमा पद्मासनस्थ है। इसकी आसन पर लाछन स्वरूप विपरीत दिशाओ मे मुख किये सिह अकित है। इस प्रतिमा के ऊपरी भाग मे तीन प्रतिमाएँ गधकुटियो मे विराजमान है। इनके लाछन नहीं दर्शाए गये है। मूल नायक प्रतिमा की दायी बायीं ओर एक-एक खड्गासन प्रतिमा अकित की गयी है। इनकी अवगाहना दो-दो इच है। लाछन नहीं है। आसन पर लेख नहीं है। पच बाल यतियो मे महावीर भी एक है। प्रस्तुत फलक मे उनकी प्रधानता दर्शाने के लिए मूल नायक प्रतिमा के रूप मे उनकी प्रतिमा पृथक रूप से अकित की गयी है तथा उनका लाछन भी दर्शाया गया है। इस प्रकार मूल नायक प्रतिमा सहित कुल छ प्रतिमाएँ फलक मे है। यह अवशेष भोयरे मे वेदी पर दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६७

त्रिमूर्ति-प्रतिमालेख

मूलपाठ

नहीं है।

प्रतिमा-परिचय

यह पाषाण फलक देशी काले नीले रग का है। इसकी अवगाहना १३॥ इच और चौडाई ८ इच है। इसमे तीन प्रतिमाएँ अकित है। मध्यवर्ती प्रतिमा पद्मासनस्थ है। इसकी अवगाहना ३ २ इच है। सिर पर दो भागो मे विभाजित ९ फण अकित है। पीछे भामण्डल दर्शाया गया है। इसकी दायी बायी ओर एक-एक खड्गासनस्थ प्रतिमा है। इन प्रतिमाओ की अवगाहना ३॥ इच है। ये तीनो प्रतिमाएँ काले चिकने पालिश से सहित है। इनके कोई लाछन नहीं है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा बनाने के लिए उसे मध्य मे दर्शाया गया है। इस प्रतिमा सहित इस फलक मे तीन प्रतिमाएँ अकित है। लेख उत्कीर्ण नहीं है। यह फलक भोयरे मे वेदी की दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६८

त्रिमूर्ति-प्रतिमालेख

मूलपाठ

नहीं है।

एक शिलाखण्ड पर चार प्रतिमाएँ अकित है। मध्यवर्ती प्रतिमा पद्मासनस्थ है। इसकी अवगाहना २॥ इच है। इस प्रतिमा की दायी ओर एक तथा बायी ओर दो प्रतिमाएँ है। ये तीनो प्रतिमाएँ खड्गासन मुद्रा में है। प्रत्येक

की अवगाहना २ ३ इच है। सभी प्रतिमाएँ स्तम्भो से विभाजित होकर गन्धकुटियो मे विराजमान है। पाषाण खण्ड का ऊपरी अश मठाकार है। यह फलक १० इच ऊँचा और चौडा है। प्रतिमाओ के लाक्षन और लेख नहीं है। इस फलक मे मध्य की प्रतिमा मूलनायक प्रतिमा के रूप मे है। इसीलिए उसे पृथक रूप से अकित किया गया है। इस प्रकार यद्यपि कुल चार-प्रतिमाएँ है किन्तु मूलनायक प्रतिमा भी तीन मे एक है अत इसे त्रिमूर्ति फलक कहना उपयुक्त होगा। यह फलक भोयरे मे दूसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१६६
अर्हन्त-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १७५१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शुक्रवासरे मडलाचार्य श्री रत्नकार्भ जी (रत्नकीर्त्ति जी) तदाम्नाये खडेलवाला

२ न्वये-------त्तेनेद बिब प्रतिष्ठा कागापित नित्य प्रणमति ॥

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु के ३ ३ इच चौडे और ४॥ इच ऊँचे फलक पर यह प्रतिमा पद्मासनस्थ है। आसन पर दो पक्ति का उक्त लेख है, लाछन नही है। फलक भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७०
शीतलनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १८६१ वैसाष (वैशाख) शुक्ल पचम्या ५ सोमवासरे श्री जिन प्रतिमा प्रतिवृत (प्रतिष्ठा)

२ ग्यो (पिता) गोलापूरव वस (वश) पडेले सिघई राजसह तस्य पुत्र २ (द्वय) चद्रभान राष (ख) न।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा गोलापूर्व-पडेले वश सिघई राजसह के पुत्र चद्रभान और राखन ने सवत् १८६१ वैशाख शुक्ला पचमी सोमवार के दिन कराई।

प्रतिमा-परिचय

पीतल धातु से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की अवगाहना ५ ८ इच और आसन की चौडाई ६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप कल्पवृक्ष जैसी आकृति समझ मे आती है। पृष्ठ मे उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१७१
चन्दप्रभ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १८६१ वैसाष (वैशाख) सुक्ल (शुक्ल) पचम्य (पचम्या) ५ क्षेत्रे पपौरा प्रतिस्टत (प्रतिष्ठित) सिघई

२ वाजूराय डेरियामूर नित्य प्रनमति (प्रणमति)।

भावार्थ

सिघई वाजूराय डेरियामूर ने सवत् १८६१ वैशाख शुक्ल पचमी तिथि मे पपौरा क्षेत्र मे प्रतिष्ठा कराई।

विशेष–डेरिया मूर-परवार अन्वय का एक गोत्र है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ५ इच और आसन की चौडाई ३६ इच है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र और उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७२
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओ नमो वीतरागाय। वी० नि० (वीर निर्वाण) सवत् २४८४ वि० (विक्रम) २०१४ फाल्गुन शुक्ला पचम्या रविवासरे मूलसघे कुदकुदाम्नाये सरस्वतीगच्छे

२ ब० (बलात्कारगणे) गो० ज० (गोलापूर्व जाति) वश साधेलियस्य सिघई परमूलालात्मज प० मूलचद्रस्यात्मज कन्छेदीलाल दिनेशकुमार हीरापुर निवासी----------(श्री अहार पचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य शान्तिनाथ जिनालये अहारक्षेत्रे सस्थापितमिद बिम्बं) नित्य प्रणमति।

भावार्थ

वी० नि० स० २४८४ फाल्गुन शुक्ला पचमी रविवार के दिन अहार गजरथ महोत्सव मे गोलापूर्व-साधेलीय कछई परमूलाल के पौत्र और प० मूलचद के पुत्र कन्छेदीलाल दिनेशकुमार हीरापुर निवासी ने प्रतिष्ठा कराई और प्रतिमा शान्तिनाथ मन्दिर अहार में स्थापित की। उसे वे सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की अवगाहना ५॥ इच तथा चौडाई ४ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा उक्त दो पक्ति का

लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७३
महावीर-प्रतिमालेख
मूलपाठ

लेख पढा नहीं जा सका। साराश निम्न प्रकार है—

वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २५०१ शुक्ल पक्षे १२ रविवासरे ब्र० (ब्रह्मचारी) मूलचन्द्रस्यात्मज डॉ० कन्छेदीलाल पत्नी जमनाबाई पुत्र दिनेशकुमार महेशकुमार इत्येभि प्रतिष्ठापित प्रतिष्ठाचार्य प० शिखरचद भिण्ड प० बारेलाल टीकमगढ।

विशेष—लेख सख्या १७२ मे प० मूलचन्द्र और पुत्र डॉ० कन्छेदीलाल तथा पौत्र दिनेशकुमार को गोलापूर्व साधेलीय कहा गया है। प्रस्तुत प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावको मे इन्ही नामो का उल्लेख किया गया है अत इसकी प्रतिष्ठा भी गोलापूर्व श्रावको द्वारा हुई ज्ञात होती है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ इच है। सम्प्रति यह भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७४
कुन्थुनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुन शुक्ला चतुर्थ्या शनिवासरे मूलसघे कुदकुदाम्नाये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे टीकमगढ मण्डलान्तर्गते पठा ग्रामवासी दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालक गोलापूर्वजात्यन्तर्गते पाडेलीय वशोद्भव ब्रह्मचारी सेठ चिमनलाल तस्यात्मज सेठ चतुराप्रसाद दयाराम तत्पुत्रा ऋषभचद्र महेन्द्रकुमार सुमतचद वीरेन्द्रकुमार एतयो श्री अहार क्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री चन्द्रप्रभ नित्य प्रणमति। (प्रा० शि० ले० स० १२१ से साभार)

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे पीतल धातु से निर्मित है। इसकी अवगाहना ७ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप बकरा तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है। लेख मे प्रतिमा का नाम चन्दप्रभ बताया गया है। यह प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७५
शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

वि० स० (विक्रम सवत्) २०२७ फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे ६ भौमवासरे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्याम्नाये श्री दि० (दिगम्बर) जैनधर्म प्रतिपालके टीकमगढ निवासी गोलापूर्वान्वये पाडेलीय वशोद्भव श्री सेठ दामोदर तस्यात्मज कपूरचन्द लक्ष्मणप्रसाद विमलचद फूलचद राजाराम गुलाबचद इत्येभि श्री अहार क्षेत्रे पचकल्याणक ज्ञानरथोत्सव प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री अहारक्षेत्रे शान्तिनाथ जिनमन्दिरे सस्थाप्य नित्य प्रणमति।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा गिलट धातु से निर्मित है। पद्मासन मुद्रा मे है। इसकी अवगाहना ८ ६ इच तथा आसन की चौडाई ६ ३ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण अकित है। यह प्रतिमा गोलापूर्व-पाढेलीय गोत्र के सेठ दामोदरदास तथा उनके पुत्रो ने वि० स० २०२७ मे अहार मे प्रतिष्ठित कराकर वही स्थापित की। सम्प्रति यह भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७६
आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

वि० स० (विक्रम सवत्) २०२७ फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे ६ भौमवासरे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्याम्नाये धुवारा निवासी गडोले वशज पटवारी श्री दरयावलाल पुत्र प्यारेलाल ध० प० रूपाबाई श्री दि० जैन सिद्धक्षेत्र अहारे श्री पचकल्याणक प्रतिष्ठाया ज्ञानरथमहोत्सवे प्रतिष्ठाप्य अहारक्षेत्रे सस्थापितम् नित्य प्रणमति।

विशेष

गडोले वश—गोलापूर्व अन्वय का एक गोत्र है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे गिलट धातु से निर्मित है। इसकी अवगाहना ८ ६ इच तथा आसन की चौडाई ६ ३ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अकित है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७७

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ नम सिद्धेभ्य श्री कुदकुदाचार्याम्नाये मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे वी० नि० स० (वीर निर्वाण सवत्) २४८४ वि० स० (विक्रम सवत्) २०१४ फाल्गुन शुक्ला ४ शनिवासरे श्री अहारक्षेत्रे श्री गजरथ जिनबिम्ब पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाचार्य श्री प० सिद्धिसागर जी, श्री प० मूलचद्र जी, प० नन्हेलाल जी, प० दयाचद्र जी, प० पन्नालाल जी, प० गुलाबचद 'पुष्प' परवार सि० भगवानदास तस्यात्मज कमलकुमार, चितामन, बाबूलाल कारीग्रामे जिन मन्दिरे स्थापितम् नित्य प्रणमति।

भावार्थ

यह प्रतिमा सवत् २०१४ मे अहार गजरथ महोत्सव मे परवार सिघई भगवानदास और उनके पुत्र कमलकुमार, चितामन, बाबूलाल ने प्रतिष्ठा कराकर कारी ग्राम के जैन मन्दिर मे स्थापित कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ २ इच है। आसन की चौडाई ७ ४ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७८

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

पाच पक्ति का लेख आसन पर उत्कीर्ण है। इसमे सवत् २०३० फाल्गुन शुक्ला १२ भौमवार के दिन प्रान्तीय समस्त दिगम्बर जैन समाज के द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है। प्रतिष्ठाचार्यो के नाम—प० पन्नालाल शास्त्री, ब्र० प० मूलचद अहार, प० मुन्नालाल शास्त्री, प० गुलाबचद्र 'पुष्प', प० अजितकुमार शास्त्री और पं० सुखानन्द शास्त्री, बनाये गये है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा गिलट धातु से निर्मित है। पद्मासन मुद्रा मे इसकी अवगाहना ६ इच और आसन की चौडाई ७ १ इच है। लांछन स्वरूप आसन पर हरिण अकित है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे वेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१७९

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ नमो वीतरागाय स्वस्ति श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्योदय सवत् २०१४ फाल्गुण मासे, शुक्लपक्षे, पचम्या रविवासरे, मूलसघे कुन्दकुन्दाम्नाये सरस्वतीगच्छे, वलात्कारगणे, टीकमगढ मण्डलाऽन्तर्गते पठा ग्राम निवासिभि दि० जैनधर्म प्रतिपालक गोलापूर्व जात्यन्तर्गत पाडेलीय वशोद्भव सि० गुलाबचन्द्र वैद्यस्तस्यात्मज वैद्यरत्न प० भगवानदास तस्यात्मज तीर्थभक्त शिरोमणि राजवैद्य प० बारेलाल तस्य धर्मपत्नी सौ० सुन्दरबाई तयो पुत्रा डाक्टर कपूरचद B I M S, वैद्य विशारद बाबूलाल, डॉ० राजेन्द्रकुमार B I M S, जयकुमार, देवेन्द्रकुमार, सुरेन्द्रकुमार पौत्र अशोककुमारादय अशुभ कर्मक्षयार्थ श्री अहारक्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनबिम्ब नित्य प्रणमन्ति।

भावार्थ

यह प्रतिमा गोलापूर्व प० बारेलाल और उनके पुत्रो द्वारा अहार क्षेत्र मे सवत् २०१४ मे प्रतिष्ठापित कराई गई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ११ ७ इच और आसन की चौडाई ६ २ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा उक्त तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८०

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ स्वस्ति श्री वीर नि० स० २४८१ वि० स० २०११ फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे १० गुरुवासरे श्री वलात्कारगणे मूलसघे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये द्रौणगिरौ सिद्धक्षेत्रे विध्यप्रदेशे पठा निवासी गोलापूर्वान्वये मरैया गोत्रे श्री रामबगस जी कृत प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाचार्य द्रौणगिरि निवासी प० मोतीलाल फौजदार प्रतिष्ठाप्य ताभ्या सस्थापित शुभ भूयात्।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे पीतल धातु से निर्मित है। इसकी अवगाहना १२॥ इंच है। आसन की चौडाई १० इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा चार पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी

कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८१

आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ नम सिद्धेभ्य- वीर निर्वाण सवत् २४८४ विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला चतुर्थ्या शनिवासरे कुन्दकुन्दाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे टीकमगढ मण्डलाऽन्तर्गते वैसा ग्रामवासि दि० जैनधर्म प्रतिपालक गोलापूर्व जात्यन्तर्गत खागवशे सेठ छोटेलाल तस्य दत्तक पुत्र धनप्रसाद तस्यात्मज वीरेन्द्रकुमाराशुभ कर्मक्षयार्थ श्री अहारक्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक-प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाचार्य ब्र० प० मूलचन्द हीरापुर प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनबिम्ब नित्य प्रणमति।

भावार्थ

सवत् २०१४ मे वैसा ग्राम निवासी गोलापूर्व खाग वश के सेठ छोटेलाल के दत्तक पुत्र धनप्रसाद के पुत्र वीरेन्द्रकुमार अहार गजरथ पचकल्याणक महोत्सव मे प० मूलचन्द्र हीरापुर प्रतिष्ठाचार्य द्वारा प्रतिष्ठा कराकर शातिनाथ जिन प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना आसन सहित ६ इच और आसन की चौडाई ७ ४ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अकित है। सम्प्रति यह प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८२

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

श्रीमद् परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाछनम्। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासनम्॥ स्वस्ति श्री वीर नि० स० २५०० वि० स० २०३० फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे १२ भौमवासरे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री दि० जैनधर्म प्रतिपालके पठा (टीकमगढ) मध्यप्रदेश निवासी गोलापूर्वान्वये पाडेलीय गोत्रे तीर्थभक्त शिरोमणि प्रतिष्ठाचार्य ज्योतिषरत्न प० बारेलाल जैन राजवैद्य तस्यात्मज श्री डॉ० कपूरचन्द्र जी, वैद्य विशारद् बाबूलालजी, डॉ० राजेन्द्रकुमार जी, पं० जयकुमार शास्त्री, श्री देवेन्द्रकुमार बी० ए०, डॉ० सुरेन्द्रकुमार पौत्र अशोककुमार, नरेन्द्रकुमार, कैलाशचन्द्र, कुमारी मधु, सतोषकुमार, जिनेशकुमार, दिनेशकुमार, अनिलकुमार, धन्यकुमार, विनयकुमार,

उपेन्द्रकुमार, ज्ञानचन्द्र, नन्दराम तस्यात्मज शीलचद्र, दीपचद्र, हुकुमचद्र इत्येभि मध्यप्रदेशे टीकमगढ जिलान्तर्गते दि० जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्ये श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनालयस्थ त्रिकाल चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थकर चैत्यालयेद बिम्ब सकल कर्मक्षयार्थ सस्थापितम् नित्य प्रणमति। प्रतिष्ठाचार्य प० पन्नालाल जी शास्त्री सादूमल, प० ब्र० मूलचन्द्र जी अहार।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा पठा निवासी गोलापूर्व-पाडेलीय गोत्रोत्पन्न प० बारेलाल जैन राजवैद्य के पुत्र-पौत्र ने सवत् २०३० मे अहार पचकल्याणक महोत्सव मे कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा गिलट धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ इच है। आसन की चौडाई ७ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा उक्त पाच पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८३

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

ओ नमो वीतरागाय वीर नि० स० २४८४ वि० स० २०१४ फाल्गुन सुदी ४ शनिवासरे श्री सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये अहारक्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाचार्य श्री प० सिद्धिसागर जी, प० मूलचन्द्र जी, प० नन्हेलाल जी, प० दयाचन्द्र जी, प० पन्नालाल जी, प० गुलाबचन्द्र जी, गोलापूर्वान्वये साधेलीय वशे सि० गिरधारीलाल तस्यात्मज बुद्धेलाल जी अजनौर निवासी अहारक्षेत्रे गजरथ महोत्सवे प्रतिष्ठाप्य सस्थापितम् नित्य प्रणमति।

भावार्थ

सवत् २०१४ फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी शनिवार के दिन अजनौर निवासी गोलापूर्व - सांधेलीय वशोत्पन्न सि० गिरधारीलाल के पुत्र बुद्धेलाल अहार गजरथ महोत्सव मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना आसन सहित ६ इच है। आसन की चौडाई ७ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण तथा चार पक्ति मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे

बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८४

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १८६६ माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ६ भृगुवासरे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सर-

२ स्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्याम्नाये मोदी नैनसुख तस्यात्मज नदकिसोर तस्य भार्जा (भार्या) भागो

३ पुत्र· मानीकेलाल (मानिकलाल) नीत्य (नित्य) प्रनमति (प्रणमति)

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसके सिर पर सप्त फण दर्शाये गये है। प्रतिमा की अवगाहना आसन से फणावलि तक ११ इच है। सामने आसन की लम्बाई ७॥ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप फण फैलाए परस्पर मे आबद्ध दो सर्प अकित है। पृष्ठ भाग मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८५

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १८८१ सुभ (शुभ) व्रसे (वर्षे) नाम फाल्गुन शुक्ले ३ सोमवासरे ग्राम

२ अहारमीथे (मध्ये) सकल पचन प्रनमति(प्रणमति)।

भावार्थ

अहारवासी सभी पच सवत् १८८१ के शुभ वर्ष मे फाल्गुन सुदी तृतीया सोमवार के दिन इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर उसे प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निमित है। इसकी अवगाहना ८ इच और आसन की चौडाई ६ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर परस्पर मे आबद्ध दो सर्प अकित है। दो पक्ति का उक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा अहार के भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८६

अभिनन्दननाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १६०३ के वैसाष (वैशाख) सुदि १३ श्री मूलसघे वलात्कारगने (णे) सरसु (सरस्व)

२. तीगछे (गच्छे) कुदकुद आचार्जान्वऐ (आचार्यान्वये) गोलापुरव (गोलापूर्व) सिघई मानिक (माणिक)

३. तस्य भ्राता सरूप (स्वरूप) वलदेवगढमधे (मध्ये)।

भावार्थ

ग्राम बलदेवगढवासी गोलापूर्व सिघई माणिक (चद) और उनके भाई स्वरूपचद ने सवत् १६०३ के वैशाख सुदि त्रयोदशी को प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। आसन सहित इसकी अवगाहना ७॥ इच और सामने आसन की लम्बाई ६ २ इच है। केश राशि गुच्छक के रूप मे प्रदर्शित है। आसन के मध्य लांछन स्वरूप बदर और उक्त दो पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भोयरे मे बेदी की तीसरी कटनी पर विराजमान है।

लेख संख्या २/१८७
आदिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ श्री मूलसघे वलात्कारगन (णे) सरस्वति (गच्छे) ———— (कुदकुदाचार्याम्नाये)

२. सवत् १८५६ श्री सुभ (शुभ) नाम सवत्सर (रे) फागुन (फाल्गुन) मासे सुकल (शुक्ल) पक्षे तिथि १० गुर (गुरु) वासरे

३ ———श्री जिनचैत्यालय नग्र वाध (बधा) मध्ये।

भावार्थ

सवत् १८५६ फाल्गुन शुक्ला १० गुरुवार को बधा नगरवासियो ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पीतल से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अवगाहना ७ ६ इच और आसन की चौडाई ५ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर विपरीत दिशाओ मे मुख किये बैल अकित है। सम्प्रति प्रतिमा भोयरे की बेदी की तीसरी कटनी पर स्थित है। आसन पर उक्त तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या २/१८८
मेरु-लेख

मूलपाठ

स (सवत्) १९६७ चैत्र शुक्ला १३ पलटू दुलीचद सरकनपुरे प्रतिष्ठा करापत (कारापितम्)।

५

भावार्थ

सवत् १६६७ चैत शुक्ल त्रयोदशी के दिन पलटू और दुलीचद ने सरकनपुर मे इस मेरु की प्रतिष्ठा कराई।

मेरु-लेख

पीतल के इस मेरु की अवगाहना ४१॥ इच है। यह पॉच भागो मे विभाजित है। नीचे से प्रथम भाग की ऊॅचाई ६ इच, दूसरे भाग की भी ६ इच, तीसरे भाग की ७ इच, चौथे भाग की ७ ८ इच और पॉंचवे भाग की ६ इच है। कलश की ऊॅचाई ६॥ इच तथा आसन की ऊॅचाई २ ४ इच है। नीचे से पहले और दूसरे भाग की गुलाई २६-२६ इच है। तीसरे भाग की २१ इच चौथे भाग की १६ ८ इच और अतिम पॉचवे भाग की ११ ८ इच है। सर्वोपरि भाग मे एक इच अवगाहना की पद्मासनस्थ, ऊपर से दूसरे भाग मे १३ इच अवगाहनावाली पद्मासनस्थ, ऊपर से तीसरे भाग मे १४ इच अवगाहना की पद्मासनस्थ, ऊपर से चौथे भाग मे २ इच अवगाहना की पद्मासनस्थ प्रतिमाऍ चारो दिशाओ मे एक-एक गधकुटियो मे विराजमान है। गधकुटियो के बीच मे विमानाकृतियॉ अकित है। विमानो में प्रतिमाएँ नहीं है। नीचे उक्त लेख है। मेरु भोयरे मे स्थित है।

सिद्ध क्षेत्र अहार के यंत्र लेख

मध्यप्रदेश के टीकमगढ जिले मे जैन पुरातत्व की दृष्टि से सिद्ध क्षेत्र अहार का मौलिक महत्त्व है। यहॉ चन्देलकालीन स्थापत्य एव शिल्प कला का अपार वैभव सग्रहीत है। निश्चित ही यह स्थली अतीत मे जैनो की उपासना का केन्द्रस्थल रही है।

मध्यकाल मे श्रावको ने भिन्न-भिन्न प्रकार के व्रतो की साधनाएँ की तथा उन व्रतो से सम्बन्धित यत्र भी प्रतिष्ठापित किये। अहार क्षेत्र मे जिन व्रतो की साधनाएँ हुई तथा उनसे सम्बन्धित जो यत्र प्राप्त हुए है, उनकी सख्या इकतीस है। इन यत्रो मे पीतल और तॉबा धातु व्यवहृत हुई है। पीतल धातु से निर्मित फलक तेरह और तॉबा धातु के फलक अठारह है। इनके आकार दो प्रकार के है—गोल और चौकोर। पीतल धातु के गोल आकार मे बारह और एक चौकोर यत्र है। इसी प्रकार ताम्र धातु के गोल यत्र दस तथा आठ चौकोर यत्र है। इन यत्रो का विवरण निम्न प्रकार है—

लेख संख्या २/१८६

ऋषिमण्डल यंत्र

यह यत्र पीतल धातु के तेरह इच वाले गोल फलक पर निर्मित है। इसमे निर्माण काल आदि से सम्बन्धित कोई लेख नहीं है।

लेख संख्या २/१६०
चिन्तामणि पार्श्वनाथ यंत्र

यह यत्र पीतल धातु से निर्मित चौदह इच वर्तुलाकार फलक पर उत्कीर्ण है। इस यत्र पर भी निर्माण काल आदि से सम्बन्धित कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। यंत्र प्राचीन प्रतीत होता है।

लेख संख्या २/१६१
श्री वृहद् सिद्धचक्र यंत्र लेख

मूलपाठ

सवत् २०२६ श्री सिद्धक्षेत्र अहारमध्ये गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठाप्य इह श्री सिद्धचक्र यत्र नित्य प्रणमति टीकमगढ म० प्र०

यंत्र परिचय

यह यत्र १३ इच के वर्तुलाकार ताम्रधातु के एक फलक पर उत्कीर्ण है। गुलाई मे एक पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है। इस लेख की लेखन शैली आधुनिक लेखन-शैली से भिन्न है। उर्दू भाषा के समान इसमे दायी से बायी ओर लिखा गया है। शब्द् रचना मे वर्णो का प्रयोग दायी ओर न किया जाकर बायी ओर किया गया है। शब्द के आदि का वर्ण अत मे प्रयुक्त हुआ है। जैसे टीकमगढ निम्न वर्ण क्रम मे लिखा गया है– 'ढ ग म क टी'। यत्र भोयरे मे रखा है।

लेख संख्या २/१६२
सरस्वती यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या
२ रविवासरे अहार क्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पच-
३. कल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापि-
४ तम्।

सरस्वती यंत्र-परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के एक चौकोर फलक पर उत्कीर्ण है। इस फलक की ऊँचाई सत्रह इच और चौडाई दस इच है। इसके शिरोभाग पर चार पक्ति का संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में उक्त लेख उत्कीर्ण है। यत्र भोयरे मे रखा गया है।

लेख संख्या २/१६३
मातृका यंत्रलेख
मूलपाठ

१. विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या रवि-
२ वासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पञ्चकल्या-
३ णक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापि-
४ तम्।

मातृक यंत्र-परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के एक चौकोर फलक पर उत्कीर्ण है। इस फलक की लम्बाई-चौडाई दस इच है। इसके शिरोभाग पर सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त चार पक्ति का लेख है।

लेख संख्या २/१६४
अचल यंत्र-लेख
मूलपाठ

१ सवत् १६६६ फागुण (फाल्गुन) वदी ११
२. प्रतिष्टत नग्र सरकनपुर

यंत्र-परिचय

यह यत्र पीतल धातु के फलक पर उत्कीर्ण है। फलक दस इच ऊँचा और ६ ३ इच चौडा है। नीचे दो पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त लेख अकित है। इसमे इस यत्र के सवत् १६६६ मे सरकनपुर नगर मे प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/१६५
ऋषिमंडल यंत्र-लेख
मूलपाठ

सवत् १७६१ वर्षे फागुन (फाल्गुन) सुदि ६ बुधवासरे श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० (भट्टारक) श्री देवेन्द्रभूषणदेवास्तत्पट्टे श्री सुरेन्द्रभूषणदेवास्तदाम्नाये लबकचुकान्वये सा० (साधु) परता पु०---प्रासापति पा० सुभा (शुभा) एते नित्य प्रणमति श्री -----

यंत्र-परिचय

पीतल धातु से यह यत्र वर्तुलाकार निर्मित है। इसका आकार ६.६ इच है। नीचे सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त लेख अकित है। यत्र भोयरे मे स्थित है।

लेख संख्या २/१६६
सिद्धचक्र यंत्र-लेख

मूलपाठ

श्री सिघई वृन्दावन शिखरचद जी लार।

यंत्र-परिचय

यह यत्र पीतल धातु के १०.३ इच वर्तुलाकार फलक पर उत्कीर्ण है। नीचे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि मे उक्त सवत् विहीन एक पंक्ति का लेख अकित है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/१६७
कल्याण त्रैलोक्यसार यंत्र-लेख

मूलपाठ

विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या रविवासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पचकल्याणक गजरथप्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापितम्।

भावार्थ

इस यत्र की वि० स० २०१४ फाल्गुन शुक्ला पचमी रविवार को अहार क्षेत्र मे हुए पचकल्याणक महोत्सव मे इसकी प्रतिष्ठा कराई गई।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ६ इच के वर्तुलाकार ताम्र धातु से निर्मित फलक पर उत्कीर्ण है। यत्र की गुलाई मे सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त लेख अकित है। यत्र सम्प्रति भोयरे में विराजमान है।

लेख संख्या २/१६८
मोक्षमार्ग चक्र-यंत्र

मूलपाठ

विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या रविवासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापितम्।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ताँबे के वर्तुलाकार ८ इच के एक फलक पर उत्कीर्ण है। उक्त लेख इसके निचले भाग मे उत्कीर्ण है। इसमे सवत् २०१४ मे अहार क्षेत्र मे हुए गजरथ महोत्सव मे इस यत्र की प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है। यत्र भोंयरे मे स्थित है।

लेख संख्या २/१६६
निर्वाण संपत्कर यंत्र-लेख
मूलपाठ

विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या रविवासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापितम्।

यंत्र-परिचय

यह यत्र वर्तुलाकार ६ इच के ताम्र फलक पर उत्कीर्ण है। इसके निचले भाग मे गुलाई मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह लेख भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२००
वर्द्धमान-यंत्र-लेख
मूलपाठ

विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या रविवासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापितम्।

यंत्र-परिचय

यह यत्र वर्तुलाकार ६ ६ इच के ताम्र फलक पर निर्मित है। नीचे गुलाई मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०१
नयनोन्मीलन-यंत्र-लेख
मूलपाठ

१ विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पचम्या
२ रविवासरे अहारक्षेत्रे श्री इन्द्रध्वज पचकल्याणक
३ गजरथ प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठापितम्।

यंत्र-परिचय

यह यत्र आठ इच के वर्तुलाकार ताम्र फलक पर निर्मित है। तीन पक्ति का उक्त लेख भी अकित है। सम्प्रति यह लेख भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०२
पूजा-यंत्र-लेख
मूलपाठ

स० (सवत्) २०१४ फाल्गुण शुक्ला ५ रविवासरे अहारक्षेत्रे गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितम्।

यंत्र-परिचय

यह यत्र आठ इच के वर्तुलाकार ताम्र फलक पर निर्मित है। गुलाई मे

उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०३

विनायक-यंत्र-लेख परिचय

इस यत्र को आठ इच के वर्तुलाकार ताँबे से निर्मित एक फलक पर निर्मित किया गया है। निचले भाग मे उत्कीर्ण लेख मे लाला राजकुमार सुशीलकुमार बहरामघाट जिला बाराबकी द्वारा सवत् २०२५ कार्तिक शुक्ला ८ अष्टमी मगलवार को इस यत्र की प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है।

लेख संख्या २/२०४

पंच परमेष्ठी-यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ सवत् १८५६ श्री ------(सुभ (शुभ) नाम समये वर्षे) फागुन (फाल्गुण) मासे सुक्ल (शुक्ल) पक्षे तिथि १० मी गुर (गुरु) वासरे पुष (पुष्य) नक्षित्रे (नक्षत्रे) श्री मूलसघे बलात्कारगने (णे)

२ सरस्वतीगछे (गच्छे) कुदकुद आचार्यन्वये श्रीमत् सा (शा) स्त्रोपदेशात् जिनविव जत्रोपतिष्ठत परगनौ ओडछो नग्र बाध (बधा) श्री महाराजाधिराजा श्री महोराजा

३ श्री महेद्र महाराज विक्रमाजीत राज्योदयात् ज्यात् (जात) गोलापूरब बैक षु (खु) रदेले मनीराम ततृ भार्जा (भार्या) मौनदेतवो पुत्र २ जेष्ठ पुत्र लले भार्या भगुती तयो पुत्र-३ दीपसा लारसा झुनारे

४ द्वितीय पुत्र उमेद भार्या स्याणे (सयानी) तयो पुत्र ४ एवसुष (ख) दुलारे गुडातन लाडिले नित्य प्र-(ण) त (म) ति।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे 'ख' वर्ण के लिए 'ष' का प्रयोग हुआ है।

विशेष—प्रस्तुत लेख मे उल्लिखित मनीराम का नामोल्लेख चन्द्रप्रभ मदिर सोनागिर के सवत् १८८३ के हिन्दी शिलालेख की सातवी पक्ति मे भी हुआ है। समय की दृष्टि से दोनो नाम अभिन्न ज्ञात होते है।

यंत्र परिचय

यह यंत्र पीतल धातु के ६ इच वर्तुलाकार एक फलक पर निर्मित है। इस पर उक्त चार पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह लेख भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०५
सोलहकारण-यंत्र-लेख
मूलपाठ

सवत् १६६६ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे प्रतिष्टत (प्रतिष्ठतं) नग (नग्र) सरकनपुरमध्ये माथै (माधौ) सेठ मूलच-(द) पलटू।

यंत्र परिचय

यह यत्र पीतल के ६ ६ इच के वर्तुलाकार एक फलक पर निर्मित है। निचले भाग मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०६
सोलहकारण-यंत्र-लेख
मूलपाठ

१ सवत् १८५६ श्री सुव (शुभ) नाम समये व्रषे (वर्षे) फाल्गुन मासे सुक्ल (शुक्ल) पक्षे तिथ (थि) १० दसमी गुर (रु) वासरे श्री मूलसघे वलात्कारगने (णे) सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुद आचार्ज (र्य) न्वये श्रीमत्

२ सा (शा) स्त्रोपदेशात् श्री जिनबिब जत्रोपतिष्टत (प्रतिष्ठित) परगनौ ओडछौ नग्र बाध (बधा) श्री महाराजाधिराजा श्री महाराजा श्री महेद्र महाराजा विक्रमाजीतदेवराज्योदयात् ज्ञात् (जाति) गोलापूरब बैक षु (खु) रदेले मनीराम तत् भार्या मौनदे तयो पुत्र– (२)

३ जेष्ट (ज्येष्ठ) पुत्र लले भार्या भगुती तयो पुत्र-३ दीपसा --------(लारसा, झुनारे) दुतिय पुत्र उमेद भार्या स्यामेतयो पुत्र-४ सवसुष (ख) दुलारे, जुगवत (गुडातन) लाडिले नित्य प्रन (ण) म (मं) ति।

भावार्थ

बधा नगर निवासी गोलापूर्व-खुरदेले मनीराम उनकी पत्नी मौनदे ज्येष्ठ पुत्र लले पुत्रवधू भगुती द्वितीय पुत्र उमेद पुत्रवधू स्याम लले पुत्र दीपसा, लारसा, झुनारे और उमेद पुत्र-सबसुख, दुलारे, जुगवत, तथा लाडिले सवत् १८५६ मे इस यत्र की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते है।

यंत्र परिचय

यह यत्र पीतल धातु के ६ इच वर्तुलाकार फलक पर उत्कीर्ण है। इस पर उक्त तीन पक्ति का लेख अंकित है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०७
दशलक्षणधर्म यंत्र-लेख
मूलपाठ

सवत् १८५६ श्री सुव (शुभ) नाम समए (ये) व्रषे (वर्षे) नाम फाल्गुन

(ण) मासे सु (शु) क्ल पक्षे तिथौ १० गुर (रु) वासरे श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगछे (गच्छे) श्री कुदकुदाचार्ज (र्य) न्वये श्रीमत् सा (शा) स्त्रोपदेशात् श्री जिनबिंबं जत्रोपतिष्ठतं (प्रतिष्ठितं) जुडावन लाउिले नित्य प्रन (ण) मति।

भावार्थ

सवत् १८५६ फाल्गुन शुक्ला १० गुरुवार को शास्त्रो के उपदेश से जिन बिम्ब और यत्र की प्रतिष्ठा कराकर जुडावन और लाडिले (गोलापूर्व) नित्य प्रणाम करते है।

यंत्र परिचय

यह यत्र पीतल धातु के ६॥ इच वर्तुलाकार फलक पर अकित है। उक्त लेख भी गुलाई मे उत्कीर्ण है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०८

दशलक्षणधर्म यंत्र-लेख

मूलपाठ

सवत् १६६६ फाल्गुन सु (शु) क्ल ११ प्रतिष्ठत नग्र सरकनपुर मध्ये माधौ सेठ मूलचद पलटू।

यंत्र परिचय

यह यत्र ८॥ इच के वर्तुलाकार पीतल-फलक पर अकित है। गुलाई मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२०६

विनायक सिद्धयंत्र-लेख

मूलपाठ

१ सवत् १६८१ जेष्ट (ज्येष्ठ) कृष्ण १० सेठ पल्टूलाल श्री कुदकुदाचार्यान्वये—————

२ —————————सरकनपुर——

यंत्र परिचय

सरकनपुर के सेठ पल्टूलाल ने इस यत्र की प्रतिष्ठा सवत् १६८१ मे कराई। यह यत्र पीतल धातु के ७ ३ इंच वर्तुलाकार फलक पर अकित है। नीचे उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१०

अष्टांग सम्यग्दर्शन यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ शके (शक सम्वते) १६०७ मार्गसिर (मार्गशीर्ष) शुक्ल १० बुधे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाच्चर्यो (चार्यो) भट्टारक श्री

विशालकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मकीर्तिस्तयो, उपदेशात् ज्ञानी-(सो) हीत
२ वान् सीवनकारे सेमवा भार्या निवाउभागा ३ एतयो· पुत्र यादोजी भार्या
देवाउ प्रणमती (ति)।

भावार्थ

शक सवत् १६०७ मे मूलसघ सरस्वतीगच्छ वलात्कारगण कुदकुदाचार्यान्वय के भट्टारक विशालकीर्ति पद्मकीर्ति के उपदेश से ज्ञानवान् सोहितवान्, सीवनकार और सेमवा तथा उसकी पत्नी निवाउभागा और पुत्र यादोजी तथा पुत्रवधू देवाउ नित्य प्रणाम करते है।

यंत्र परिचय

यह यत्र ५ ३ इच के वर्तुलाकार पीतल फलक पर निर्मित है। अहार मे एक मात्र यह लेख है जिसमे शक सवत् प्रयुक्त हुआ है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे स्थित है।

लेख संख्या २/२११

सम्यक् चारित्र यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ सवत् १६८३ फागुन (फाल्गुण) सु० (सुदि) ३ श्री धर्मकीति उपदेशात् ॥
समुकुट भा० (भट्टारक) किसुन ॥ पुत्र मोहन-स्याम (श्याम) रामदास
नदराम सुषा (खा) नद भगवानदास पुत्र आसा (शा) ही ॥
२ जात सि-------(याराम) द (दा) मोदर हिरदेराम किसुनदास वैसा (शा) ष
(ख) नदन परवार एते नमति।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे सुदि शब्द के लिए सु०, भट्टारक के लिए भ०, ख वर्ण के लिए 'ष' तथा 'श' वर्ण के लिए 'स' का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

सवत् १६८३ की फाल्गुन सुदी तृतीया को श्री धर्मकीर्ति के उपदेश से समुकुट, भट्टारक किशुन, उनके पुत्र मोहन, श्याम, रामदास, नदराम, सुखानन्द, भगवानदास तथा भगवानदास के पुत्र आशाही, जातसिया, राम दामोदर, हिरदेराम, किशुनदास और वैशाखनन्दन ये परिवार जन इस यत्र को नमस्कार करते है।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ताम्र धातु से ६ इच के वर्तुलाकार फलक पर निर्मित है। यत्र के बाह्य भाग मे उक्त दो पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह यत्र भोंयरे में विराजमान है।

लेख संख्या २/२१२
सोलहकारण-यंत्रलेख
मूलपाठ

१. सवत् १७२० वर्षे फागुन (फाल्गुन) सुदि १० शुक्रे श्री व० वलात्कारगणे स० (सरस्वतीगच्छे) कुदकुदाचार्यान्वये भ० (भट्टारक) श्री सकलकीर्त्ति उपदेशात् गोलापूर्वान्वये गोत्र पेथवार प० (पण्डित) वसेदास भा० (भार्या) परवति (पार्वती) तत्पुत्र ५ जेष्ठ (ज्येष्ठ) डोगरुदल, विसु (शु) न चैन उग्रसेनि नित्यं प्रन (ण) म

२ ति ॥ सि० (सिघई) ष (ख) रगसेनिक (खरगश्रेणिक)। यत्र-प्रतिष्ठामैइ यत्र प्रतिष्ठित ॥ सुष (ख) चैन ॥

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे व, स, भ०, प०, सि०, शब्दो के प्रथम वर्ण के रूप शब्दो के सक्षिप्त रूप दर्शाये गये है। इनके पूर्ण शब्द लेख मे कोष्ठक मे दर्शाए गये है। श के स्थान मे स और ख के लिए ष प्रयुक्त हुआ है।

भावार्थ

(मूलसघ) वलात्कारगण सरस्वतीगच्छ कुन्दकुदाचार्यान्वय के भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के उपदेश से गोलापूर्व अन्वय मे पेथवार गोत्र के पण्डित वसेदास, उनकी पत्नी पार्वती और उनके पाच पुत्र सर्व ज्येष्ठ डोगर, ऊदल, विशुनचैन, उग्रसेन और सुखचैन ने सवत् १७२० के फाल्गुन सुदि १० शुक्रवार को सिघई खरगसेन की यत्र-प्रतिष्ठा मे इस यत्र की प्रतिष्ठा कराई तथा उसे नित्य नमस्कार करते है।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ७ ३ इच के वर्तुलाकार ताम्र फलक पर अकित है। यत्र का मध्य भाग कुछ ऊपर उठा हुआ है। दो पक्ति का उक्त लेख यत्र मे उत्कीर्ण है। सम्प्रति यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१३
सिद्धचक्र-यंत्र-लेख
मूलपाठ

१ प० (पण्डित) मौजीलाल जैन देवराहा मदिर जी को भेट

२ फाल्गुन सुदी १२ रविवार सवत् २०२१ पपौरा जी

३ गजरथ महोत्सव।

भावार्थ

पपौरा क्षेत्र में सवत् २०२१ के फाल्गुन शुक्ल द्वादशी रविवार को हुए

गजरथ महोत्सव मे देवराहा निवासी पडित मौजीलाल जैन ने यह यत्र मंदिर जी को भेट मे दिया।

यंत्र परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के ६ इच चौकोर फलक पर अकित है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१४

विनायक-यंत्र-लेख

यह यत्र ५ इच के चौकोर ताम्रफलक पर अकित है। इस पर लेख नही है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१५

सम्यकुचारित्र-यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ सवत् १६४२ फाल्गुन सित (शुक्ला) १० गुरौ मृगे (मृगसिरे) अवरजलालराज्ये पेरोजाबादे श्रीमूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये भट्टारक श्री ध

२ णकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्री भट्टारक शीलसूत्रनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानसूत्रनदेवास्तदाम्नाये लवकचुक जातौ साधु

३ श्री हरुजु पुत्रौ २ दौदि नगरू तत्र दौदि भार्या प्रभा तत्पुत्रा ५ लोहगु धरणीध

४ र भायारु दासीजो श्री कमलै तत्र लोह-(गु) भार्या

५ ---कमलापति भार्या मता तत्पुत्रा ३ मित्रसेनि चद्रसेनि उदयसेनि। तत्र मित्रसेन भार्य (र्या) पराणमती तत्पुत्रौ मथुरमल्ल चदसेन भार्या कल्हण एतेषा---------------

६ ---------सम्यकचारित्र।

भावार्थ

सवत् १६४२ के फाल्गुन सुदि १० गुरुवार मृगसिर नक्षत्र मे अकबर जलालुद्दीन महाराज के राज्य मे (उत्तर प्रदेश के) फिरोजाबाद नगर मे श्री मूलसघ, वलात्कारगण, सरस्वतीगच्छ, कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय के भट्टारक श्री धणकीर्त्तिदेव के पट्टाधिकारी भट्टारक शीलसूत्रनदेव और इनके पट्टाधिकारी भट्टारक ज्ञानसूत्रनदेव की आम्नाय के शाह हरजू के पुत्र दौदि और नगरु इनमे दौदि के पाच पुत्र-लोहगु, धरणीधर, भायारु, दासीजो और श्री कमलै। इनमे कमलापति के तीन पुत्र-मित्रसेनि, चन्द्रसेनि, उदयसेनि। इनमे मित्रसेनि की पत्नी पराणमती तथा उसके दोनो पुत्र-मथुरा और मल्ल, चन्द्रसेनि की पत्नी कल्हण

(और उसके पुत्र इसी प्रकार उदयसेनि की पत्नी और उसके पुत्र) सभी ने इस सम्यक्चारित्र यत्र की प्रतिष्ठा कराई। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के ६ २ इच चौकोर एक फलक पर अकित है। यत्र का भाग ४॥ इंच का फलक के मध्य मे वर्तुलाकार है। बाह्य भाग मे गुलाई मे संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में उक्त छ पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह यत्र के टूटे हुए अंश से आरम्भ होता है। सम्प्रति यह लेख भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१६
सोलहकारण-यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ इ (ऐ) द्र पद प्राप्य पर प्रमोद धन्यात्मतामात्मनि मन्यमाना (न) ॥ ----(दृक्) शुद्धि

२ मुक्षादि (मुख्यानि) जिनेद्रलक्ष्म्या महामह (महाम्यह) षोडश कारणानि ॥ १ ॥ अथ सवत्--------------

भावार्थ

परम प्रमोद रूप इन्द्र के पद को धारण कर अपने अदर अपने आपको धन्य मानता हुआ तीर्थकर लक्ष्मी की कारणभूत दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारण भावनाओ की मै पूजा करता हूँ (ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि से साभार)।

यंत्र-परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के ६ इच चौकोर एक फलक के मध्य मे ऊपर उठे हुए भाग पर सोलह भागो मे उत्कीर्ण है। यत्र के ऊपरी भाग मे दो पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त लेख अकित है। इस लेख मे सवत् सूचक अक नहीं है। सम्प्रति लेख भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१७
अष्टांग सम्यग्ज्ञान-यंत्र-लेख

मूलपाठ

१ कल्पनातिगता बुद्धि परभावाविभाविका। ज्ञान निश्चयतो ज्ञे-

२ य तदन्य व्यवहारतः ॥ सवत् १५०२ वर्षे का

३ र्त्तिग सुदि ५ भौमदिने श्री का-

४ ष्ठासंघे भट्टारक श्री गु-

५ णकीर्त्तिदेव तत्प-

६. ट्टे श्री यस (श) की
७. र्त्तिदेव
८ तत्पट्टे श्री मलैकी-
६ र्त्तिदेवा. अग्रोत्का
१० न्वये सा० (साहु) वरदेवास्तस्य भार्या सा० (साहुणी)
११. जैणी तयेः (तयोः) पुत्र स० (साहु) विहराज तस्य भार्या साध्वी हरसो स० (साहु) वरदेव-
१२ भ्राता स० (साहु) रूपचदु तस्य पुत्र स० (साहु) नालिगु द्वितीय समलू। स० (साहु) नालिगु पु-
१३. त्र आदू प्रतिष्ठ (तम्)।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे साहु अर्थ मे स० तथा साहुणी अर्थ मे सा० सक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए है।

भावार्थ

संवत् १५०२ के कार्तिक सुदी पचमी भौमवार को काष्ठासघ के भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेव के प्रशिष्य और श्री यशकीर्त्तिदेव के शिष्य भट्टारक **मलयकीर्त्तिदेव** की आम्नाय के अग्रवाल शाह वरदेव के पुत्र शाह विहराज और पुत्रवधू हरसो ने तथा वरदेव के भाई शाह रूपचद के नालिगु और समलू दोनो पुत्रो तथा नालिगु के पुत्र आदू ने इस यत्र की प्रतिष्ठा कराई।

यंत्र परिचय

यह यत्र ताम्र धातु के ५॥ इच चौकोर एक फलक पर अकित है। इसकी तीन कटनियाँ है। मध्य की दो कटनियॉ ऊपर की ओर उठी हुई है। इनमे प्रथम कटनी सर्वाधिक ऊँची है। ऊपरी भाग मे सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उक्त तेरह पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह लेख ही बीजाक्षर की ओर से आरम्भ हुआ है। यह यहाँ का सर्वाधिक प्राचीन यत्रलेख है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१८

धर्मचक्र यंत्र

यह पीतल धातु के ७ इच वर्तुलाकार फलक पर ४६ आरे बनाकर निर्मित किया गया है। इस पर लेख अकित नहीं है। इस यत्र के आरे ७-७ दिन तक सात प्रकार की मेघवृष्टि के पश्चात् नयी सृष्टि के धर्म और काल परिवर्तन के चक्र की ओर ध्यानाकृष्ट करते है।

लेख संख्या २/२१६ (अ)
श्री पार्श्वनाथ चिंतामणि यंत्रलेख
मूलपाठ

णमो अरिहंताण
णमो सिद्धाण

६८	७५	२	७
६	३	७२	७१
७४	६९	८	१
४	५	७०	७३

णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाण

णमो लोए
सव्व साहूण

यंत्र-परिचय

यह यत्र चौकोर दो इच के एक ताम्र फलक पर अकित है। कोई लेख नहीं है। यत्र सोलह भागो मे विभाजित है। प्रत्येक भाग मे ऐसी सख्या है जिसका बाये से दाये अथवा ऊपर से नीचे चार खण्डो का योग १५२ आता है। सम्प्रति यह यत्र भोयरे मे विराजमान है।

लेख संख्या २/२१६ (ब)
भक्तामर यंत्र

इस यत्र मे भक्तामर काव्य के अड़तालीस मत्रो का उल्लेख किया गया है।

लेख संख्या २/२१६ (स)
शान्तिनाथ प्रतिमालेख
मूलपाठ

लेख मे प्रतिमा-प्रतिष्ठा का समय वीर निर्वाण सवत् २४६३, प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावक ब्रह्मचारी मोहनलाल और ब्रह्मचारी लालचन्द्र भोती निवासी तथा प्रतिष्ठाचार्य पण्डित शिखरचन्द्र भिण्ड का नाम अकित किया गया है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद गिलट धातु से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित की गयी है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण तथा लेख उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा की ऊँचाई ६ इच है।

विशेष–यह प्रतिमा मूलत. दि० जैन सिद्धक्षेत्र अहार म० प्र० के भोयरे मे विराजमान थी। सिजोरा (टीकमगढ) म० प्र० की दिगम्बर जैन समाज के

नम्र निवेदन पर दर्शन-पूजन हेतु यह प्रतिमा दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहार म० प्र० की प्रबन्धकारिणी कमेटी ने सिजोरा जैन समाज को दे दी है। फलस्वरूप यह प्रतिमा सम्प्रति ग्राम सिजोरा (टीकमगढ) म० प्र० मे विराजमान है।

मन्दिर क्रमांक-३
वर्द्धमान-मन्दिर

यह मन्दिर सग्रहालय के ऊपर है। यहाँ उत्तराभिमुखी एक वेदी है जिस पर तीन प्रतिमाएँ विराजमान है। यह मदिर ईसवी सन् १९५८ मे क्षेत्रीय कमेटी द्वारा बनवाया गया है।

लेख संख्या ३/२२०
चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख

मूलपाठ

१　पापडीवाल---------मल (मूल) सघे
२　॥ सवत् १५४८ वरष (वर्षे) वासष (वैशाख) स्य सुद (सुदि) २ सु (शु) क्रवासरे
३　--------------सुत--------

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे 'श' वर्ण के लिए स और ख वर्ण के स्थान मे ष वर्ण के प्रयोग हुए है।

भावार्थ

सम्वत् १५४८ वैशाख सुदि द्वितीया तिथि मे (धरमदास) के पुत्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा सिर से आसन तक १३ इच ऊँची है। आसन ११ इच लम्बी है। लाछन स्वरूप आसन पर अर्द्ध चन्द्र रेखाकित है इसके नीचे सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे उत्कीर्ण तीन पक्ति का उपरोक्त लेख है। प० गोविन्द दास कोठिया ने भी अपनी कृति प्राचीन शिलालेख मे लेख सख्या ६६ से इसका उल्लेख किया है और अच्छर घिस जाने से इसे अपठनीय बताया है केवल यही अंश उन्होने भी पढा है। यह प्रतिमा सम्प्रति वर्द्धमान जिनालय मे मूलनायक प्रतिमा की बायी ओर विराजमान है।

लेख संख्या ३/२२१
सुपार्श्वनाथ प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ संवत् (सम्वत्) १८३६ श्री मूलसघे वलात्का (चिह्न) र गणे सरस्वती गछे (गच्छे) कुदकुदा (कुन्दकुन्दा) चा

२ र्य्यान्वये भट्टारक श्री जिनेद्र (जिनेन्द्र) भूष (चिह्न) णोपदेसात् गोलापूर्वान्वये षु (खु) र

३ देले उमेद सव (सर्व) सुष (ख) द्रा (करा) किसु (शु) (चिह्न) न नित्य प्रणमेत् (प्रणमति) ष (ख) रगापुर मधे (मध्ये)।

प्रतिमा के पृष्ठभाग का एक पंक्ति लेख

प० (पण्डित) भ० (भट्टारक) श्री ज (जिनचद्र (चन्द्र) उपदेसा (शा) तु जावेराजे (जीवराज) पापरीवाले (पापडीवाले) नीते परण धाते सेहर मम सा राजा श्री सोम साहोजी।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे न अनुनासिक का अनुस्वार के रूप मे, ष का ख के स्थान मे और स का श के स्थान मे प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १८३६ मे श्री मूलसघ वलात्कारगण सरस्वतीगच्छ कुन्दकुन्दाचार्य आम्नाय के जिनेन्द्रभूषण भट्टारक के उपदेश से गोलापूर्व अन्वय के खुरदेले गोत्र मे उत्पन्न उमेद सर्व सुख कारी किशुन खरगापुर ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

यह प्रतिमा जीवराज पापडीवाल द्वारा लायी गयी थी ऐसा पृष्ठभाग के लेख से ज्ञात होता है। सम्प्रति यह प्रतिमा वर्द्धमान मन्दिर मे मूलनायक महावीर प्रतिमा की दायी ओर विराजमान है।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा आसन से सिर तक १४॥ इच ऊँची है। आसन १० इच चौडी है, आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप उल्टा स्वस्तिक अंकित है। प्रतिमा की हथेलियो पर चार दल की कमलाकृति है। आसन पर उपरोक्त तीन पक्ति का और प्रतिमा के पृष्ठभाग पर एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या ३/२२२
महावीर प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. ओं नम: सिद्धेभ्य श्री कुन्दकुन्दा (चिह्न) म्नाये मूलसघे बलात्कर (कार) गणे-

२. सरस्वतीगच्छे वीर नि० (निर्वाण) स० (सम्वत्) २४८४ (चिह्न) विक्रम स० (सम्वत्) २०१४ फाल्गुण शुक्ला चतुर्थ्या

३ मोदी धरमदास तस्यात्मज नाथूराम (चिह्न) फुटेर नि० (निवासी) परवार जाति वैसाखिया मूये (रे) गोयल्ल गोत्र।

भावार्थ

सिद्धो को नमस्कार हो। मूलसघ, बलात्कारगण, सरस्वतीगच्छ और कुन्दकुन्द आचार्य की आम्नाय के फुटेर निवासी परवार जाति के वैसाखिया मूर और गोयल गोत्र के मोदी धरमदास के पुत्र नाथूराम ने वीर निर्वाण सम्वत् २४८४ विक्रम सम्वत् २०१४ के फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी तिथि के दिन प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे आसन से सिर तक १७ इच ऊँची और आसन से १३ इच चौडी है। हथेली पर अनेक शुभ लक्षण अकित है। लाछन स्वरूप आसन पर पृछ उठाये सिह रेखांकित है और इसके नीचे तीन पक्ति मे उपरोक्त लेख उत्कीर्ण है। यह लेख प्राचीन शिलालेख-अहार पुस्तक मे लेख सख्या ११५ से दिया गया है। सम्प्रति यह प्रतिमा वर्द्धमान जिनालय मे मूलनायक प्रतिमा के रूप मे विराजमान है।

लेख संख्या ४/२२३
मन्दिर क्रमांक-४
मेरु-मन्दिर

यह सग्रहालय की बायी ओर स्थित है। इसमे तीन परिक्रमा हेतु तीन कटनिया बनी है। प्रथम कटनी के लिए तीन सीढियाँ चढनी पडती है। इस परिक्रमा के बाद तीन सीढियॉ चढने पर दूसरी परिक्रमा प्राप्त होती है। तीसरी परिक्रमा के लिए दूसरी परिक्रमा से छह सीढियॉ चढनी होती है।

इस भाग के शीर्ष भाग मे पूर्व की ओर मुख किये कृष्ण पाषाण की पद्मासन मुद्रा मे एक ही प्रतिमा वेदी पर विराजमान है। इसका पालिश चिकना है। आसन से सिर तक इसकी अवगाहना १७॥ इच है। आसन १५॥ इच लम्बी है। पादपीठ पर लेख और लाछन दोनो ही नहीं है। यह प्रतिमा अहार क्षेत्र

निवासी श्री शिवलाल कोठिया को स्वप्न देकर क्षेत्र मे ही भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। यह मन्दिर वडमाडई पचायत द्वारा निर्मित कराया गया था।

मन्दिर क्रमांक-५

चन्द्रप्रभ मन्दिर

यह मन्दिर दूसरी मंजिल पर है। इसका निर्माण ईसवी १६५४ मे कराया गया था। इसमें देशी पाषाण की कलापूर्ण वेदिका है। इस वेदिका पर चार संगमरमर पाषाण की और एक देशी पाषाण की कुल पाँच पद्मासनस्थ प्रतिमाएँ विराजमान है। ये सभी प्रतिमाएँ उत्तर की ओर मुख किये है। इनका विवरण निम्न प्रकार है—

लेख संख्या ५/२२४

अर्हन्त-प्रतिमालेख

देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा उत्तराभिमुख विराजमान है। इसकी अवगाहना एक फुट दो इच है। इसकी दोनो ओर एक-एक खड्गासनस्थ प्रतिमा अकित है। मुख्य प्रतिमा का पादपीठ हाथियो के मस्तक पर आश्रित है। बायी ओर के हाथी पर महावत भी अकित है। लाछन और लेख दोनो नहीं है। नीचे अंकित त्रिछत्र वहाँ प्रतिमा रहने का सकेत करते है। यह प्रतिमा चन्द्रप्रभ मदिर मे मूलनायक प्रतिमा की बायी ओर अत मे विराजमान है।

लेख संख्या ५/२२५

पद्मप्रभ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् (सम्वत्) १५४८ वरषे (वर्षे) वेसष (वैशाख) (चिह्न) सुदि ३ स्री (श्री) मुल (मूल) सघ (सघे) भट्टारक

२ श्री जी (जि)नचद्रदेव साहु जीवराज पा----(पडीवाल)----

३ प्रतिष्ठापित------------ (एते प्रणमति)

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे वरषे, वेसष, मुशास शब्दो के प्रयोग से प्रशस्ति उत्कीर्ण करनेवाला अनभिज्ञ एव कम शिक्षित रहा प्रतीत होता है। वेसष मे श के लिए स और ख के लिए ष वर्ण का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

अभयदानी और मौनी (भट्टारक) जिनचन्द्रदेव और शाह जीवराज पापडीवाल ने इस प्रतिमा की सम्वत् १५४८ के वैशाख सुदी तृतीया के दिन प्रतिष्ठा कराई। वे प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे अंकित इस प्रतिमा की अवगाहना १० इच है। आसन ७॥ इच लम्बी है। लाछन स्वरूप पाच दल का कमल आसन पर अकित है। लाछन की दोनो ओर उपरोक्त तीन पक्ति का लेख है। इस लेख में प० गोविन्ददास कोठिया ने प्रथम पक्ति मे मूल सघे भट्टारक के स्थान मे भौमे सघ भट्टारक पढा है। द्रष्टव्य है प्राचीन शिलालेख पुस्तक का लेख क्रम ६७। यह प्रतिमा मूल नायक प्रतिमा की दायी ओर अत मे विराजमान है।

लेख संख्या ५/२२६

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. सवत् (सम्वत्) १८२६ मीती (मिति) वैसाष (वैशाख) सुदि ६ उददत्त

२ भट्टारक श्री सुरेद्रकीर्त्ति (चिह्न) प्रतिष्ठितेद नदलाल

३. प्रणमती (प्रणमति) ॥

पाठ-टिप्पणी

प्रस्तुत लेख मे तिथि के लिए देशी शब्द मिति का प्रयोग उल्लेखनीय है।

भावार्थ

सम्वत् १८२६ वैशाख सुदि ६ तिथि की उदय दशा मे नन्दलाल ने भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति से इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वह नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा चन्द्रप्रभ मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा की बायी ओर विराजमान है। पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की अवगाहना १० इच है। इसकी आसन ८ इच लम्बी है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप अर्द्ध चन्द्र रेखाकित है। लाछन की दोनो ओर उपरोक्त तीन पक्ति का लेख है। प० गोविन्ददास कोठिया कृत प्राचीन शिलालेख पुस्तिका मे इस लेख का उल्लेख नहीं हुआ है।

लेख संख्या ५/२२७

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ॥ संवत् (सम्वत्) १८२६ मीती (मिति) वसा (वैशाख) सुदी (सुदि) ६ उददत्त माधोपु० ॥

२ भट्टारक श्री सुरेद्रकीर्त्ति (चिह्न) ------ (तस्तस्य सघे) प्रतिष्ठितेद नदलालेन

३ प्रणमती (प्रणमति) ॥

पाठ-टिप्पणी

चन्द्रप्रभ और इस शान्तिनाथ प्रतिमा का लेख दोनो एक ही समय के है। लिपिकार भी दोनो का एक ही रहा ज्ञात होता है। प्रतिष्ठाचार्य और प्रतिष्ठापक श्रावक दोनो के समान है।

भावार्थ

सम्वत् १८२६ मिति वैशाख सुदि ६ के उदयकाल मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के सघ के नन्दलाल द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गयी।

प्रतिमा-परिचय

मूलनायक प्रतिमा की दायी ओर विराजमान सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा १०॥ इच अवगाहना की है। इसकी आसन ८॥ इच लम्बी है। इसकी हथेली पर चार दल का कमल अकित है। आसन के मध्य में लाछन स्वरूप हरिण रेखाकित है। उपरोक्त तीन पक्ति का लेख लाछन की दोनो ओर उत्कीर्ण है।

लेख संख्या ५/२२८
चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओ नम· सिद्धेभ्य·। वी० (वीर निर्वाण सम्वत्) २४६३ फाल० (फाल्गुन) (चिह्न) शु० (शुक्ला) ५ गुरु (गुरुवासरे) मू० स० (मूलसघे) व० (वलात्कारगणे) कुन्दकुन्दाम्नाये जबलपुर

२ न (नगर) स० (सकल) दि० (दिगम्बर) जैन कृत पचकल्याणक (चिह्न) प्रतिष्ठाया प्र० (प्रतिष्ठाचार्य) वा० (वाणीभूषण) मू० (मूलचन्द्र) प० (पण्डित) शिखरचन्द्र जैन भिण्ड निवासिना

३ प्रतिष्ठितमिद जिनबिम्ब दिगम्बर जैन (चिह्न) गोलापूर्वोपजाती राधेलीय गोत्रे समुत्पन्नस्य सवाई सिघई वशीधरस्य सुपुत्रस्य

४ स (सवाई) सि० (सिघई) तुलसीरामस्य धर्मपत्न्या (चिह्न) श्री चम्पाबाई नामिरया तज्ज्येष्ठस्य सुपुत्रौ कोमलचन्द्र देवकुमार धन्यकुमारै (ए) ता अहार क्षेत्र दि० (दिगम्बर) जै० (जैन) प्रतिष्ठापितम्।

नोट–चम्पाबाई नामोल्लेख के बाद का लेख पृष्ठ भाग मे उत्कीर्ण है।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे कोष्ठको मे दर्शाये गये शब्दो के संक्षिप्त शब्द कोष्ठक के पूर्व में दिये गये है।

भावार्थ

वीर निर्वाण सम्वत् २४६३ फाल्गुन सुदी पञ्चमी गुरुवार के दिन मूलसघ, बलात्कारगण, कुन्दकुन्द आचार्य के आम्नाय की जबलपुर दिगम्बर जैन समाज द्वारा करायी गयी पचकल्याणक प्रतिष्ठा मे वाणीभूषण प० मूलचद और पं० शिखरचन्द्र भिण्ड प्रतिष्ठाचार्यो द्वारा दिगम्बर जैन गोलापूर्व उपजाति के राधेलीय गोत्र मे उत्पन्न सवाई सिघई वशीधर के सुपुत्र सवाई सिघई तुलसीराम की पत्नी चम्पाबाई के ज्येष्ठ सुपुत्र कोमलचन्द्र और देवकुमार, धन्यकुमार ने दिगम्बर जैन अहारक्षेत्र मे प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित है। इसकी अवगाहना २०॥ इच और आसन की लम्बाई १६ इच है। हाथ-पैर की हथेलियो मे शारीरिक शुभ लक्षण अकित है। आसन पर मध्य मे लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अकित है। लाछन की दोनो ओर उपरोक्त चार पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख का भी 'प्राचीन शिलालेख' पुस्तिका मे उल्लेख नही किया गया है। इस मन्दिर की यह मूलनायक प्रतिमा है।

मन्दिर क्रमांक ६

पार्श्वनाथ मन्दिर

दूसरी मजिल पर निर्मित इस मन्दिर मे पूर्वाभिमुखी वेदी है। इस वेदी के तीन खण्ड है। प्रथम खण्ड मे दो, मध्यवर्ती खण्ड मे एक और तीसरे खण्ड मे तीन कुल छ प्रतिमाएँ है। ये छहो तीर्थकर पार्श्वनाथ की है। यही कारण है कि यह मन्दिर पार्श्वनाथ-मन्दिर के नाम से विश्रुत हुआ। प्रतिमाओ का वर्णन निम्न प्रकार है—

लेख संख्या ६/२२६

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् १५ सो २ (१५०२) वे वैसाष (वैशाख) सुदी (सुदि) ३ साहो गोधराज पहाडे

२ वेसल------साहापुर निवा० (निवासी) प्रणमत (ति)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे 'श' के लिए स का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्वत् १५०२ वैशाख सुदी तृतीया को शाह गोधराज पहाडे तथा साहापुर निवासी वेसल (प्रतिष्ठा कराकर) प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा आसन से फणावली तक १३ इच ऊँची है । इसकी आसन ८॥ इच लम्बी है। हथेली पर चार दल का कमल अकित है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप सर्प उत्कीर्ण है। प्रतिमा के सिर पर सप्त फणावलि भी दर्शायी गयी है। यह प्रतिमा मध्य वेदी की दायी ओर वेदी की प्रथम कटनी पर विराजमान है। इसके बाये पैर का अंगूठा खण्डित है।

लेख संख्या ६/२३०

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

यह प्रतिमा देशी लाल (सिलहटी) पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे अकित है। पूर्ण शिलाफलक की अवगाहना १६ इच है। आसन १३ इच लम्बी है। सिर पर खण्डित सप्त फणावलि है। आसन स्वरूप सर्प अकित है। लाछन स्वरूप पृथक रूप से सर्प का अकन नहीं हुआ है। आसन पर कोई लेख भी नही है। नासिका और दाढी खण्डित है। कर्ण स्कन्ध भाग का स्पर्श करते है। इस प्रतिमा के सिर के ऊपरी भाग मे दोनो ओर एक-एक अलकृत हाथी अकित है। इनके महावत खण्डित हो गये है। हाथियो के नीचे माला हाथो मे धारण किये अलकृत वेष मे खडी देव प्रतिमाएँ है। इन देवो के नीचे दोनो ओर एक-एक दो इच अवगाहना की पद्मासनस्थ तीर्थकर प्रतिमा है। इन प्रतिमाओ के नीचे चँमरवाही देव-प्रतिमाओ का अकन हुआ है। बायी ओर के देव का मुख खण्डित है। यह प्रतिमा भी मध्य वेदी की दायी ओर वेदी की प्रथम कटनी पर विराजमान है। प्रतिमा के सिर पर तीन छत्र तथा गले मे तीन रेखाएँ प्रदर्शित है।

लेख संख्या ६/२३१

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

पूर्वाभिमुखी बीच की वेदिका पर विराजमान यह प्रतिमा देशी काले-लाल पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसके सिर पर सप्त फणावलि अकित है। इसकी अवगाहना २ फुट है। आसन १७ इच लम्बी है। अग विन्यास से यह प्रतिमा प्राचीन प्रतीत होती है। कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है।

लेख संख्या ६/२३२

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. सवत् (सम्वत्) १५ सौ २ वेषसाष (वैशाख) (चिह्न) सुदी (सुदि) ३ सद—

२ -----------(अपठनीय)।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे श के लिए स का और ख के लिए ष वर्ण का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

इस प्रतिमा की सम्वत् १५०२ वैखाख सुदी तृतीया के दिन प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिमा परिचय

मध्य वेदिका की बायी ओर निर्मित वेदिका की प्रथम कटनी पर विराजमान यह प्रतिमा सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित आसन से फणावलि तक १० इच ऊँची है। आसन ६॥ इच लम्बी है। आसन पर लाछन स्वरूप सर्प अकित है। सिर पर सप्त फणावलि है। उपरोक्त दो पक्ति का लेख आसन पर उत्कीर्ण किया गया है। इस सम्वत् की इस मदिर मे यह दूसरी प्रतिमा है।

लेख सख्या ६/२३३

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ सवत् (सम्वत्) १७१३ वर्षे मार्गसिर सुदि १० रवऊ (रवौ) (चिह्न) भट्टा
२ र्क श्री ५ पद्मकीर्त्ति भट्टा० (भट्टारक) श्री ५ सकलकीर्त्ति
३ ॥ प्रणमति (प्रणमन्ति) नित्य (नित्यम्) ॥

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे औ स्वर के लिए ऊ स्वर का प्रयोग हुआ है। भट्टारक के लिए भट्ट, और पण्डित के अर्थ मे केवल प० वर्ण व्यवहृत हुआ है। अक ५ पाच भट्टारको के लिए प्रयुक्त पाच श्री का बोधक है।

भावार्थ

सम्वत् १७१३ मार्गसिर सुदी दसवी रविवार के दिन मघा के सूर्य काल मे पद्मकीर्ति और भट्टारक सकलकीर्त्ति ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

पार्श्वनाथ मन्दिर मे मध्य वेदिका की बायी ओर निर्मित वेदिका पर विराजमान पूर्वाभिमुखी यह प्रतिमा देशी काले-लाल पत्थर से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसका पालिश चमकदार है। इसके सिर पर नौ फण दर्शाये गये है। आसन से फणावलि तक इसकी अवगाहना ११ इच है। आसन ७ इच लम्बी है। लाछन स्वरूप सर्प का पृथक अंकन नहीं किया गया है। आसन पर पूर्वोक्त तीन पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

प० गोविन्ददास कोठिया की कृति प्राचीन शिलालेख मे ले० स० १०७ से दर्शाया गया यह प्रतिमा लेख अपूर्ण है तथा पद्मकीर्त्ति के स्थान मे धवलकीर्त्ति पढा गया है।

लेख संख्या ६/२३४

पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. सवत् (सम्वत्) १८६६ फाल्गुन सु (चिह्न) दि ७ भौम श्री मूलसघे-
२. वलात्कारगने (णे) सरस्वती(चिह्न) गच्छे कुदकुदचार्यानवये (कुन्दकुन्दचार्यान्वये)–
३ श्री चौधरी धुरमगद त (चिह्न) स्य भ्रात - सबराधु चौ० (चौधरी) ग
४ नेस (श) प्रम (ण) मति।

पाठ-टिप्पणी

इस अभिलेख मे न अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार का और श के स्थान मे स का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १८६६ फाल्गुन सुदि सप्तमी भौमवार को मूलसघ, वलात्कारगण, सरस्वतीगच्छ, कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय मे हुए चौधरी धुरमगद और उसके भाई के समान चौधरी गनेश ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। चौधरी गनेश प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

मध्य वेदिका की वायी ओर निर्मित वेदी पर विराजमान पूर्वाभिमुखी पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा देशी लाल पत्थर से निर्मित है। यह १६॥ इच ऊँचे और १० इच चौडे शिलाफलक पर अकित है। प्रतिमा के सिर पर नौ फणो का प्रदर्शन किया गया है। लाछन स्वरूप आसन के मध्य मे सर्प उत्कीर्ण है। लाछन की दोनो ओर उपरोक्त चार पक्ति का लेख है।

मन्दिर क्रमांक ७

महावीर मढिया मन्दिर

कहा जाता है कि शान्तिनाथ प्रतिष्ठा के समय यहाँ आठ खम्भो का एक मठ था तथा इसमें हवनकुण्ड था। उस समय की सभवत· यह यज्ञशाला थी। अब इसे मन्दिर का रूप दे दिया गया है। इस मन्दिर की वेदी पूर्वाभिमुख है। मकराने के पत्थर से जटित है। सम्प्रति इस पर तीन प्रतिमाएँ विराजमान है।

लेख संख्या ७/२३५
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१. सवत् (सम्वत्) १५ सौ २ वरष (वर्षे) वसाष (वैशाख) सुदी ३ जीवराजे पापरीवाल
२ तात परं (प) रया - नि भट्टारक जिनचद्रदेव सहर ---
३. ------श्री

प्रतिमा परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा १३ इच अवगाहना से युक्त है। इसके सिर पर सप्त फणावलि है। हथेली पर चार दल का कमल अकित है। लाछन स्वरूप आसन पर सर्प रेखांकित है। लाछन की दोनो ओर तीन पक्ति का उक्त लेख है। प्रतिमा वेदी की प्रथम कटनी पर दक्षिण की ओर विराजमान है।

लेख संख्या ७/२३६
पार्श्वनाथ-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ सवत् १५ सौ २ वसाष (वैशाख) सुदी ३
२ सहर ---सार। गासल साह।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना १३ इच है। इसके सिर पर भी सप्त फणावलि का अकन किया गया है। इसकी हथेली पर चार दल की कमलाकृति है। लाछन स्वरूप सर्प अकित है। इसकी आसन ६ इच लम्बी है। आसन पर दो पंक्ति का उक्त लेख भी है। प्रतिमा वेदी की प्रथम कटनी पर उत्तर की ओर विराजमान है।

लेख संख्या ७/२३७
महावीर-प्रतिमालेख
मूलपाठ

१ स्वस्तिश्री वीर निर्वाण सवत् २५०० (चिह्न) विक्रम सवत् २०३० फाल्गुन मासे
२ शुक्ल पक्षे १२ भौमवासरे श्री मूलसघे (चिह्न) कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतीगच्छे
३. --------वलात्कारगणे ---------------

प्रतिमा के पृष्ठ भाग का लेख

सागौनी–तेदूखेडा निवासी गोलापूर्वान्वये साधेलीय गोत्रोद्भवे ब्र० प्र० मूलचन्द्रस्यात्मज डॉ० कन्छेदीलालेन प्रतिमा स्थापिता।

भावार्थ

संवत् २०३० फाल्गुन सुदि १२ भौमवार को मूलसघ, सरस्वतीगच्छ, वलात्कारगण और आचार्य कुन्दकुन्द की आम्नाय के सागौनी-तेदूखेडा निवासी गोलापूर्व जाति के साधेलीय गोत्र मे उत्पन्न प० ब्र० मूलचन्द्र के पुत्र डॉ० कन्छेदीलाल के द्वारा यह प्रतिमा प्रतिष्ठापित करायी गयी।

प्रतिमा-परिचय

यह इस मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा है। इसका निर्माण सफेद सगमरमर पाषाण से हुआ है। पद्मासन मुद्रा मे पूर्वाभिमुख विराजमान इस प्रतिमा की अवगाहना १३॥ इच है। आसन की लम्बाई ११ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर सिह अकित है। यह प्रतिमा कमल पुष्प पर आसीन है। आसन पर उपरोक्त तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह मूलनायक प्रतिमा के रूप मे प्रथम कटनी पर विराजमान है।

मन्दिर क्रमांक ८

बाहुबली-मन्दिर

यह मन्दिर ईसवी १९५८ मे निर्मित कराया गया था। इस मन्दिर मे प्रथम कामदेव बाहुबलि की प्रतिमा विराजमान होने से इसे बाहुबली-मन्दिर नाम से पुकारा जाता है।

लेख संख्या ८/२३८

बाहुबली-प्रतिमालेख

मूलपाठ

१ ओ ह्री अनन्तानन्त परम सिद्धेभ्यो नम ।

२ श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य

३ शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥ सकल नृप समाजे दृष्टि मल्लाम्बु युद्धे,

४ विजित भरतकीर्त्तिर्यप्रवव्राजमुक्त्यै ॥ तृणमिव विगणय्य प्राज्य सोम्राज्यभार,

५ चरम तनुधराणामग्रणी सोऽवतादव ॥ २ ॥ विक्रम समत् (सवत्) २०१४
फाल्गुण शुक्ला पचम्यां

६. रविवासरे स्वतन्त्रभारतगणराज्ये टीकमगढ मण्डलान्तर्गते श्री मूलसघे कुन्दकुन्दाचार्यम्नये (कुदकुदाचार्याम्नाये) स्वरस्वती (सरस्वती) गच्छे वलात्कारगणे अहारक्षेत्रे लार ग्राम निवासिनी

७. गोलापूर्वान्वये सान्धेलीयागोत्रे दिवगत सिघई मोतीलालस्य धर्मपत्नी (धर्मपत्नी) गणेशीबाई तस्यात्मजौ सिघई (सिघई) हरप्रसाद मोजीलाल सिघैयौ पौत्रश्चि

८ रजीव कुन्दनलाल इत्येतै श्रीमद्बाहुबलि स्वामिन नित्य प्रणमन्ति ॥

भावार्थ

विक्रम सवत् २०१४ फाल्गुन शुक्ला पचमी रविवार के दिन (अहारक्षेत्र के गजरथ पचकल्याणक प्रतिष्ठा में) ग्राम लार के निवासी गोलापूर्वान्वय के साधेलीय गोत्र मे हुए दिवगत सिघई मौजीलाल की पत्नी गणेशीबाई के पुत्र हरप्रसाद और मौजीलाल तथा चिरजीव पौत्र कुन्दनलाल ने प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई। ये सब बाहुबलि स्वामी की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित खड्गासन मुद्रा मे यह प्रतिमा ८६ इच ऊँची है। यह जिस कमल पर आसीन है वह १८ इच ऊँचा है। फलक की चौडाई २६॥ इच है। मूर्त्ति पर पारम्परिक माधवी लताएँ लिपटी है। आसन पर पूर्वोक्त आठ पक्ति की प्रशस्ति अकित है।

मन्दिर क्रमांक ६

लेख संख्या ६/२३६

उत्तरी मानस्तम्भ

बाहुबलि मन्दिर के सामने उत्तर की ओर का मानस्तम्भ लाल पाषाण के एक ही शिलाखण्ड से निर्मित है। यह जिस चबूतरे पर विराजमान है वह चबूतरा चार भागो मे उत्तरोत्तर ऊँचा होता गया है। चबूतरे का प्रथम भाग भूमि से ४४ इच ऊँचा और ११७ इच लम्बा तथा इतना ही चौडा है। इसके ऊपर स्थित दूसरा चबूतरा १४ इच ऊँचा और ६० इच लम्बा-चौडा है। दूसरे चबूतरे पर निर्मित तीसरे चबूतरे की ऊँचाई ११॥ इच तथा लम्बाई चौडाई ६६-६६ इच है। तीसरे चबूतरे पर निर्मित चौथा चबूतरा ८॥ इच ऊँचा तथा ४५-४५ इच लम्बा-चौडा है। मानस्तम्भ इसी चौथे चबूतरे पर स्थित है। कुल आधार चौकी की ऊँचाई ७८ इच है। मानस्तम्भ का नीचे से ३७ इच का भाग चौकोर है। इस भाग की मोटाई ४७ इच है। इस भाग मे चारो ओर देवियो की प्रतिमाएँ अकित है।

पूर्व की ओर खड्गासन मुद्रा मे अकित देवी मुकुटबद्ध है। इसके गले मे हार, हाथो मे कगन, कटि प्रदेश में करधन और पैरो मे कड़े आभूषण है। यह चतुर्भुजी है। दाये ऊपरी हाथ मे गदा तथा नीचे के हाथ मे कोई वस्तु धारण किये है। बायें ऊपरी हाथ मे चक्रदण्ड तथा नीचे के हाथ मे कोई अपरिचित

वस्तु लिए है। चक्र धारण करने से यह प्रतिमा चतुर्भुजी चन्द्रेश्वरी ज्ञात होती है। इसका मुख और वक्षस्थल छिल गया है।

दक्षिण की ओर भी खड्गासन मुद्रा मे चतुर्भुजी देवी है। इसके सिर पर सप्त फण फैलाये सर्प अंकित है। मुकुटबद्ध है। कानो मे कुण्डल, गले मे हार, हाथो मे कगन, कमर मे करधन और पैरो में यह पायल धारण किये है। इसके निचले बाये हाथ मे कमण्डल और ऊपरी हाथ मे कोई वस्तु अकित है। दॉया नीचे के हाथ मे भी कोई वस्तु लिए है और ऊपर का हाथ टूट गया है। सर्प फणावलि से यह पद्मावती देवी की प्रतिमा ज्ञात होती है। इसके नीचे एक पक्ति का निम्न लेख है–सवत् १०११ वैसाष वदी १३।

पश्चिम की ओर १४ इच ऊँची खडी चतुर्भुजी देवी है। इसका मुख छिल गया है। ऊपरी दोनो हाथ खण्डित हो गये है। बायॉ नीचे के हाथ मे कमण्डल और निचले दायें हाथ मे सभवत पुस्तक है। सभी आभूषण पूर्व देवी के समान है। यह सिद्धायिका देवी प्रतीत होती है।

उत्तर की ओर १४ इच ऊँची एक देवी का अकन है। इसके बाये हाथ मे एक बालक है और दॉया हाथ टूटा हुआ है। मुख और स्तन छिल गये है। आभूषण अन्य देवियो के समान है। एक हाथ मे शिशु के होने से यह अम्बिका देवी ज्ञात होती है।

इन देवियो के ऊपर का भाग अष्ट कोण का है। इसकी मोटाई ३८ इच है। अष्ट कोण का भाग २७॥ इच ऊँचा है। इस भाग के ऊपर स्तम्भ चौकोर हो गया है। पूर्व की ओर इस भाग मे एक पक्ति का एक अपठनीय लेख है। इसी भाग मे उत्तर की ओर ३ इच की खड्गासन मुद्रा मे एक तीर्थकर प्रतिमा है।

इसके ऊपर सात इच की ऊँचाई तक मानस्तम्भ गोल हो गया है। गुलाई ३७ इच है। इसके ऊपर चौकोर चौकी है। इसी चौकी के ऊपर चारो दिशाओ मे पद्मासन प्रतिमाएँ है। प्रतिमाये लाछन विहीन होने से उनकी पहिचान के लिये उनकी शासन देवियॉ उनके नीचे अकित की गई है। आदिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर। पूर्व दिशा की प्राचीन प्रतिमा खण्डित हो जाने से सफेद सगमरमर की नयी तीर्थकर आदिनाथ की प्रतिमा स्थापित की गयी है। इसके नीचे एक पक्ति का लेख है–

स (सम्वत्) १८२६ वैसा (शा) ख सुदि ६ उदिदन्त भट्टारक सूर्यकीर्त्ति। स्तम्भ की आधार चौकी ६॥ फुट तथा आधार चौकी से अर्हन्त प्रतिमाओ के नीचे तक का भाग ६ फुट कुल मानस्तम्भ की ऊँचाई १२॥ फुट है।

मन्दिर क्रमांक १०

लेख संख्या १०/२४०

दक्षिणी मानस्तम्भ

इसकी रचना प्रथम स्तम्भ के समान है। दक्षिण दिशा की ओर स्थित देवी प्रतिमा के नीचे एक पंक्ति का लेख है–

संवत् १०११ वैसाष (वैशाख) वदी १३। पूर्व की ओर की देवी के नीचे और ऊपर चौकोर भाग मे लेख है किन्तु चूने की सफेदी के कारण अपठनीय है। इस स्तम्भ की पूर्व दिशावर्ती प्रतिमा खण्डित हो जाने से उसके स्थान मे नयी सफेद सगमरमर से निर्मित प्रतिमा स्थापित की गयी है। नीचे लाछन स्वरूप कछुआ अकित होने से यह प्रतिमा तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ की ज्ञात होती है।

प बलभद्र जैन के अनुसार उत्तर के मानस्तम्भ की आधार चौकी ६ फुट ६ इच तथा मानस्तम्भ १२ फुट ऊँचा है और दक्षिण मानस्तम्भ की आधार चौकी ७ फुट ऊँची है तथा मानस्तम्भ ११ फुट ऊँचा है।[1]

विशेष–अब तक ये मानस्तम्भ सम्वत् १०१३ वैशाख शुक्ला पञ्चमी के दिन प्रतिष्ठित हुए बताये गये है[2] किन्तु प्रस्तुत अध्ययन से ये सम्वत् १०११ वैशाख वदी त्रयोदशी के दिन प्रतिष्ठित हुए प्रमाणित होते है।

मन्दिर क्रमांक ११

संग्रहालय

(१)

लेख संख्या ११/२४१

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२४)

मूलपाठ

१ ---------अपठनीय

२ ---------समत् (सवत्) ११६३

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निमित है। इसके घुटनो के नीचे के पैर मात्र शेष है। आसन पर लाछन स्वरूप हरिण और उक्त दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। केवल सवत् पढने मे आता है जिससे कहा जा

---

१. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग ३, वही, पृ० १२५।

२. अहार क्षेत्र परिचय, स्तोत्र एव पूजन पृ० १०।

सकता है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् ११६३ मे हुई थी।

इस प्रतिमा-अवशेष की दोनों ओर एक-एक प्रतिमा के होने का सकेत मिलता है। दोनो ओर प्रतिमाएँ तो नहीं है सभवत वे भग्न हो गई है किन्तु उन प्रतिमाओ के चरण आज भी विद्यमान है। मध्य मे शान्तिनाथ-प्रतिमा के होने से दाये बाये अवशेष कुन्थुनाथ और अरहनाथ के होने का सकेत करते है। अतः यह अवशेष रत्नत्रय प्रतिमा का समझ मे आता है। सभवत. इसी अवशेष से प्रभावित होकर यहाँ ऐसी इतर मूर्तियाँ भी प्रतिष्ठित हुई। आसन की चौडाई ५ इच है। यह सग्रहालय का सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमालेख है।

(२)

लेख संख्या ११/२४२

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८ अ)

मूलपाठ

१ सवत् ११६६ परवाडान्वये साधु सोमएल भाया (भार्या) जसहाणि तत्सुतो देल्हत साल्हे एते प्रणमति (मन्ति) नित्य (नित्यम्)।

२ फाल्गुन वदि ७ ॥

भावार्थ

सम्वत् ११६६ फाल्गुन वदि सप्तमी के दिन परवार अन्वय के शाह सोमएल और उनकी पत्नी यशहानि के पुत्र देल्हत और साल्हे ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा का पालिश काला चमकदार है। प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे है। इसकी आसन मात्र शेष है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अकित है। लेख का भाग १५ इच लम्बा है। उपरोक्त दो पंक्ति का लेख आसन पर उत्कीर्ण है। आसन की चौडाई ४ इच है। यह सग्रहालय का सर्वाधिक दूसरा प्राचीन प्रतिमालेख है।

प्राप्ति स्थान परिचय

यह प्रतिमा कुडीला (टीकमगढ) से प्राप्त हुई है। कुड़ीला ग्राम टीकमगढ़ से ४५ किलोमीटर दूर है। यह प्रतिमा यहाँ के निवासी श्री गोकुलचद जैन के कथनानुसार एक खण्डहर की खुदाई मे प्राप्त हुई थी। सम्प्रति यहाँ परवार जैन नहीं है। कुछ घर गोलापूर्व जैनो के है।

(३)

लेख संख्या ११/२४३

धर्मनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८५)[1]

मूलपाठ

संम (व) त् ११६६ चैत्र सुदि १३ गर्ग्गराटान्वये साहुः वाछ तस्य सुत साहु· लाल (ले) साहुणि नायव्व (इति) तस्य सुत साहु मालुराजु आमदेव (कामदेव) एते प्रणमति (प्रणमन्ति) नित्यं (नित्यम्)।

पाठान्तर

प० गोविन्ददास कोठिया ने मालुराजू के बाद 'सोमदेव एते नित्य प्रणमन्ति' पढा है।

भावार्थ

सम्वत् ११६६ चैत सुदी त्रयोदशी तिथि मे गर्गराट अन्वय के शाह वाछ के पौत्र और शाह लाल साहुणी नायव्व के पुत्र शाह मालुराज और आमदेव ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

सग्रहालय मे विराजमान देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर खण्डित है। गले तक की अवगाहना १५ इच है। इसकी आसन १६ इच है। ॲगुलियॉ छिल गयी है। जगह-जगह से जोडी गयी है। लाछन स्वरूप आसन पर वज्रदण्ड अकित है। आसन पर एक पक्ति का उपरोक्त लेख भी उत्कीर्ण है।

(४)

लेख संख्या ११/२४४

धर्मनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५७)

मूलपाठ

सवत् (सम्वत्) ११६६ चैत्र सुदि १३ गर्ग्गराटान्वये साधु वाछ सुत साहु लाल (ले) साहुणि नायव्व (इति) तस्य सुत साधु मालु---(राजु)[2] ---- अपठनीय।

---

१. प० गोविन्ददास कोठिया कृत प्राचीन शिलालेख पुस्तक की लेख सख्या प्रा० शि० पु० ले० स० इस सक्षिप्त रूप से लिखी गयी है।

२. पाठान्तर-आल्हण (प० गोविन्ददास कोठिया द्वारा पठित)।

पाठ-टिप्पणी

प्रस्तुत लेख और लेख सख्या २४३ मे नायव्व के बाद दर्शाई गयी दो विन्दु 'इति' सूचक है।

भावार्थ

सम्वत् ११६६ चैत सुदी त्रयोदशी तिथि मे गर्गराट अन्वय के शाह वाछ के पौत्र और शाह लाल तथा साहुणी नायव्व के पुत्र मालुराज ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा चमकदार काले पाषाण से युक्त है। इसकी आसन और कुहनी के नीचे के हाथ मात्र शेष है। लाछन स्वरूप वज्रदण्ड रेखाकित है। आसन पर एक पक्ति का सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे पूर्वोक्त लेख उत्कीर्ण है।

विशेष–सम्वत् ११६६ के इन दोनो प्रतिमालेखो से ज्ञात होता है कि इन प्रतिमाओ के प्रतिष्ठाता श्रावक मालुराज और आमदेव सहोदर थे। वे साथ रहते थे। दोनो ने मिलकर ये दोनो प्रतिष्ठाएँ कराई थीं।

(५)

लेख संख्या ११/२४५

अदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७५)

मूलपाठ

--------(सवत् (११)६६) महिषणपुर पुरवाडान्वये साधु (छु) स्री (श्री) लाषण (लाखण) सुत वीट्टइ ------- भार्या साध्वी जसकरि (यशकरी) सुत साढ्ढ प्रणमति (नित्यं)।

पाठान्तर

१ गोविन्ददास कोठिया द्वारा पठित–

सवत्----६६ महिषणपुर पुरवाडान्वये साहु श्री लाखण सुत श्री वठई भार्या साऊ जसकरी सुत साहु प्रणमन्ति।

भावार्थ

सम्वत् ११६६ मे महिषणपुर के निवासी पुरवाड (पोरवाल) अन्वय के शाह लाखण के पौत्र और उसकी पुत्रवधू यशकरी के पुत्र साढ्ढ ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वह प्रतिमा को नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से युक्त यह प्रतिमा सिर विहीन है। गले तक की अवगाहना २१ इच है। इसकी चौडाई २५ इच है। आसन की दायी ओर का अश खण्डित है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। एक पक्ति मे उपरोक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है जिसका आरम्भिक खण्डित हो गया है।

महिषणपुर

महिष का अर्थ भैसा होने से वर्तमान भैसा ग्राम अतीत मे इस नाम से प्रसिद्ध रहा ज्ञात होता है। इस नाम का ग्राम अन्वेषणीय है। वैसे यहाँ पास ही मे भैसाट नाम का ग्राम है। वर्तमान मे वहाँ जैनियो का निवास नही है।

(६)

लेख संख्या ११/२४६
आदिनाथ-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या ६७)

मूलपाठ

१ सवत् १२०० ॥ आषाढ वदि ८ जैसवाल अन्वय (ये) साहु षो (खो) ने भाया (भार्या) जाज (जी) सुत साढू तव्वा पाल्हा वील्हा

२ आल्हा पउमा---(दय) प्रणमती (न्ति)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे म का अनुस्वार के रूप मे और ष वर्ण का ख वर्ण के स्थान मे प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२०० आषाढ वदी अष्टमी तिथि मे जेसवाल अन्वय के शाह खोने और उनकी पत्नी जाजी के पुत्र साढू, तथा पाल्हा, वील्हा, आल्हा और पद्मा ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से युक्त इस प्रतिमा का सिर, बॉया हाथ और दोनो हाथों की हथेलियाँ खण्डित है। लाछन स्वरूप वृषभ है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इच है। आसन पर सस्कृत भाषा और नागरी लिपि मे पूर्वोल्लिखित दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(७)

लेख संख्या ११/२४७

मुनिसुव्रतनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५१)

मूलपाठ

१ सवत् (सम्वत्) १२०० महिषण -----------(पुरे पुरवाडा-) न्वये साधु श्री हारसेण (हरिषेण) भार्या रुद्री सुत सोमदेव माल्ह

२ साहुणि सिरि-------एते प्रणमती (मन्ति) नित्य (त्यम्)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श्री के लिए 'सिरि' शब्द का प्रयोग हुआ है। ष के स्थान मे 'स' का प्रयोग द्रष्टव्य है।

भावार्थ

सवत् १२०० मे महिषणपुर के निवासी सभवत पुरवाड अन्वय के शाह श्री हरिषेण और उनकी पत्नी रुद्री के पुत्र सोमदेव और माल्ह आदि ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से युक्त इस प्रतिमा का सिर और कधे से दॉया हाथ नही है। हथेलियॉ और बॉया पैर छिल गया है। आसन से गले तक इस प्रतिमा की अवगाहना ११ इच है। आसन की लम्बाई १३॥ इच है। लाछन स्वरूप कछुआ अकित प्रतीत होता है। आसन पर सस्कृत भाषा और नागरी लिपि से दो पक्ति का पूर्वोल्लिखित अभिलेख उत्कीर्ण है।

(८)

लेख संख्या ११/२४८

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १०५)

मूलपाठ

१ -----(सवत्) १२०० आषाढ वदि अष्टम्या सुक्रे (शुक्रे) ------

२ ---साहु आल्ह--(भार्या) जस (श)----(करी)

३ ----मे-----

भावार्थ

सम्वत् १२०० आषाढ वदि अष्टमी शुक्रवार के दिन शाह आल्ह और उनकी पत्नी यशकरी ने प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से युक्त यह प्रतिमा सिर विहीन है। हथेलियो मे कमल अकित है। नीचे चँमरवाही इन्द्र खडे है। गले तक की इस प्रतिमा की अवगाहना २१ इंच और शिलाफलक की चौडाई ८ इच है। आसन पर पूर्वोल्लिखित तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। चिन्ह स्थल पर वृषभ अकित है।

विशेष–लेख सख्या ५ से आल्हा जैसवाल ज्ञात होता है।

(६)

लेख संख्या ११/२४६

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८ ब)

मूलपाठ

१ स० (सवत्) १२०० परोत् (पौर) पाटान्वये साधु सोम साहुनी भार्या जसरा——प्रणमति सदा आषाढ सुक्ल (शुक्ल) पक्ष सुक्रे (शुक्रे) अष्टम्या प्रतिष्ठिता ॥

भावार्थ

सम्वत् १२०० के आषाढ शुक्ल पक्ष की अष्टमी शुक्रवार के दिन परोत्पाट (पौरपाट) अन्वय के शाह सोम और उसकी पत्नी साहुनी जसरा ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ७ इच है। इसकी आसन २२ इच लम्बी है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अकित है और एक पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है। सग्रहालय मे यह प्रतिमा कुडीला (टीकमगढ) ग्राम से आयी है। ३० किलोमीटर दूर है।

(१०)

लेख संख्या ११/२५०

सुमतिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १५)

मूलपाठ

१ ॥ सवतु (सम्वत्) १२०२ चैत्र सुदी (सुदि) १३ लमकचुक अन्वय साहु (कमल पुष्प) भाने -----(भार्य्या) पद्मा सुत हरसेल (ण) न (ना) यक कदलसिह पाल्हु उदय

२ साहू पतल प्रणमती (मन्ति) नीत्य (नित्यम्)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ये वर्ण के स्थान ए स्वर का प्रयोग उल्लेखनीय है। न अनुनासिक अनुस्वार के रूप मे प्रयुक्त हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२०२ चैत्र सुदी त्रयोदशी के दिन लमेचु अन्वय के शाह भाने और उनकी पत्नी पद्मा तथा पुत्र हरषेन, नायक, कदलसिह, पाल्हु, उदय तथा शाह पतल ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। इसके हाथ पैर खण्डित है। सिर नहीं है। आसन पर हथेलियॉ नहीं है। लाछन स्वरूप चक्रवाक पक्षी आसन पर अकित है। आसन पर अकित कमल पुष्प की दोनो ओर दो पक्ति मे पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है।

लेख संख्या ११/२५१
आदिनाथ-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या ३२)

मूलपाठ

॥ सवतु (सम्वत्) १२०२ चैत्र सुदि १३ गोलापर (पूर्व) अन्वय (ये) नायक तील्हे (चिह्न) सुते रतन तस्य सुत आल्हू जील्हू आमदेव-भामदेव प्रणमति नित्य।

भावार्थ

सम्वत् १२०२ चैत्र सुदी त्रयोदशी तिथि मे गोलापूर्व अन्वय मे नायक तील्ह की पुत्री रतन के पुत आल्हू, जील्हू, आमदेव, भामदेव ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निमित चमकदार काले पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर, हाथो के बाहुदण्ड और हथेलियॉ नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १३ इच और चौडाई १७ इच है। आसन के मध्य मे लांछन स्वरूप वृषभ अंकित है और वृषभ की दोनो ओर एक पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है।

(१२)

लेख संख्या ११/२५२

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८ स)

मूलपाठ

॥ सांवतु (सवत्) १२०२ चैत्र सुदी (दि) १३ परवर (परवार) अन्यए (अन्वये) सलु तीलु लेत· प्राज्यर्ज जाहीलि सुत व -------

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ये व्यजन के स्थान मे 'ए' स्वर का प्रयोग उल्लेखनीय है।

भावार्थ

सम्वत् १२०२ चैत्र सुदी त्रयोदशी तिथि मे परवार अन्वय के शाह सलु तीलु लेत प्राज्यर्ज जाहिल ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की मात्र आधी आसन शेष है। इस आधे भाग की अवगाहना ६॥ इच और लम्बाई एक फुट है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। पूर्वोल्लिखित एक पक्ति का लेख आसन पर उत्कीर्ण है। प्रतिमा कुडीला से आयी है।

(१३)

लेख संख्या ११/२५३

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६१)

मूलपाठ

१ सवत् १२०३ माघ सुदि १३
२. साधु जठावन् पुत्र सुएचद्र ।

भावार्थ

सम्वत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि मे शाह जठावन के पुत्र सुएचद्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा चिकने और काले पालिश से सहित है। यह नासिका, दाढी, उपस्थ और हाथ की अगुलियो से खण्डित है। हथेलियो मे पुष्पाकृति अकित है। हथेलियो के नीचे दोनो ओर चॅमरवाही मुकुटबद्ध अलकृत सेवरत देव खडे है। लाछन नहीं है। आसन से सिर तक की अवगाहना ५५ इच है। सिर के पीछे प्रभामण्डल भी अकित है। आसन

पर पूर्वोल्लिखित दो पक्ति का लेख अकित है।

(१४)

लेख संख्या ११/२५४

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८)

मूलपाठ

॥ सवत् १२०३ माघ सुदि १३ गोल्हेपर्व (गोल्लापूर्व) अत्रे साबु भावदेव भार्या जसमति तस्य पुत्र लपभावन प्रणमति नित्य (नित्यम्)।

भावार्थ

सवत् १२०३ माघ त्रयोदशी तिथि मे गोलापूर्व अन्वय के शाह भावदेव और उनकी पत्नी जसमति तथा उनके पुत्र लपभावन ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा सिर विहीन है। इसका सिर पुन जोडा गया हे। इसकी हथेलियॉ और पैरो की अगुलियॉ खण्डित है। ग्रीवा तक की अवगाहना १४॥ इच और चौडाई १६ इच है। आसन पर वृषभ का चिह्न है। एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(१५)

लेख संख्या ११/२५५

अजितनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६४)

मूलपाठ

ओ ॥ -----(गर्गराटान्वये) साहु स्री मल्हण तस्य सुत वाघु तस्य सुत लाले तस्य भार्या नाधर तयोर्सुता· (साहु) वील्हूराजू आमदेवा· अजितनाथ प्रणमन्ति नित्य ॥ सवत् १२०३ माघ सुदि १३।

भावार्थ

गर्गराट अन्वय के शाह श्री मल्हण के पौत्र और वाघु (वाछ) के पुत्र लाले और उसकी पत्नी नाधर (नायव्व) इन दोनो के पुत्र शाह वाल्हूराजू और आमदेव ने तीर्थकर अजितनाथ-प्रतिमा की सम्वत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि मे प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रतिमा की वन्दना करते है। इन्ही श्रावको ने सवत् ११९६ मे धर्मनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी (देखे लेख संख्या ११/२४२)।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। इसकी अगुलियॉ खण्डित है। आसन पर लाछन स्वरूप हाथी का अकन है। इस प्रतिमा की अवगाहना १६ इच और चौडाई २२ इच है। आसन पर एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह आरम्भ मे छिल गया है।

विशेष—यहा प्रणमन्ति मे अनुनासिक न का प्रयोग उल्लेखनीय है।

(१६)

लेख संख्या ११/२५६

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २)

मूलपाठ

आसन की दायी ओर का लेख।

१ ॥ सवत् १२०३ माघ सुदि १३
२ जैसवालान्वये साहु खोने ॥ भार्या ॥
३ जस (यश) करि (री) ॥ सुत नायक साहू ॥ त
४ स्य भातृ पाल्ल ॥ वील्ह ॥ जाल्ह ॥ पद
५ मा महिचद्र (चन्द्र) ॥ छ ॥ सुत वीने प्रणमति।

आसन की बायी ओर का लेख

१ सवतु १२०३ माघ सुदि १३ जेस
२ बालान्वये साहु बाहउ ॥ भार्या ति
३ नोवि ॥ सुत साहु सोमनी ॥ भ्राता
४ साह बाल्ह ॥ सुत जाहड ॥ लाखू ॥
५. लोह प्रणमति नित्य (नित्यम्)

भावार्थ

सवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि मे जैसवाल अन्वय के शाह खोने और उनकी पत्नी यशकरी के पुत्र नायक साहु और उसके भाई पाल्ह, वील्ह, जाल्ह परमे और महीचन्द्र के पुत्र वीने ने तथा शाह बाहड और उसकी पत्नी मिरोवि के पुत्र शाह सोमनी और उसके भाई शाह वाल्ह के पुत्र जाहड, लाखू और लोले ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये नित्य प्रणाम करते है। लेख से विदित होता है कि यह प्रतिष्ठा दो कुटुम्बियो ने मिलकर कराई थी।

प्रतिमा-परिचय

सग्रहालय के बाहर दहलान मे बायी ओर दीवाल के सहारे विराजमान इस प्रतिमा के केश घुघराले है। कान, नाक, मुख, दाढी, दाया हाथ, उपस्थ, अगूठो और घुटनो से भग्न है। काले-नीले देशी पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा मे निर्मित है। आसन सहित इसकी अवगाहना ७५ इच है। इस पाषाण फलक की चौडाई २५ इच है। आसन ११॥ इच लम्बी और ३ इच चौडी है। आसन दो भागो मे विभाजित है। प्रत्येक भाग मे पाच पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है। लाछन नहीं है। प्रतिमा की दायी-बायी दोनो ओर चँमरवाही देव खड़े है। इनके अलकार मन्दिर नम्बर एक की शान्तिनाथ प्रतिमा के चँमरवाही देवो के समान है।

(१७)

लेख संख्या ११/२५७

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८१)

मूलपाठ

सवत् १२०३ माघ सुदि १३ गुरौ वैस्या (श्या) न्वये साहु सुपट भार्या गागा (गगा) तस्य सुत साहु रासल पाल्ह रिसि (ऋषि) प्रणमति नित्य (नित्यम्) (इति) ॥

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे विसर्ग रूप मे दर्शाये गये दो बिन्दु इति शब्द के बोधक है। ऋ के स्थान मे रि और ष के स्थान मे स वर्ण का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

सवत् १२०३ माघ सुदि १३ गुरुवार के दिन वैश्य अन्वय के शाह सुपट और उसकी पत्नी गगा का पुत्र शाह राशल, पाल्ह और ऋषि ने प्रतिष्ठा कराई। ये नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे अकित यह प्रतिमा चिकने काले पालिश से सहित है। ग्रीवा और हथेलियो मे रहित गले तक इस प्रतिमा की अवगाहना १५ इच है। इसकी आसन २० इच लम्बी है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। एक पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है।

(१८)

लेख संख्या ११/२५८

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५२)

मूलपाठ

सवत् १२०३ सवु (साहु) सातन (शान्तन) तस्य पुत्र लछू (कमल पुष्प) तस्य भार्या मलगा प्रणमति

भावार्थ

सम्वत् १२०३ मे शाह शान्तन के पुत्र लद्दू और उसकी पत्नी मलगा ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। इसकी हाथो की हथेलियॉ और आसन मात्र शेष है। लाछन स्वरूप आसन पर हरिण अकित है। पूर्वोल्लिखित एक पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है। इसकी अवगाहना लगभग १॥ फुट है।

(१६)

लेख संख्या ११/२५६

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६२)

मूलपाठ

आसन की दायी ओर

१ सवत् १२०३ माघ
२ सुदि १३ जैसवालान्वये
३ साहु खोना। भार्या जस (यश) क
४ री॥ सुत नायक साहू॥
५ भ्राता पाल्हा। वील्ह। मा-
६. ल्हा -----

आसन की बायी ओर

१. सवत् १२०३ माघ सुदि
२ १३ जैसवालान्चये साहु
३ वाहड -----(भार्या सिव (शिव) देवि। सु
४. त----- (साहु सोमिनी)॥ ---त
५ त्पुत्र लाखू वाहड भार्या

६ सोहदे ॥ प्रणमंति (मन्ति) नित्य (नित्यम्) ॥

भावार्थ

सग्रहालय लेख सख्या २ से विदित होता है कि जैसवाल अन्वय के एक ही कुटुम्ब के दो परिवारो ने मिलकर दो प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित कराई थी। दोनो लेखो मे श्रावकों के नाम समान है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण खड्गासन मुद्रा मे अकित चिकने काले पान्शि से युक्त यह प्रतिमा तीन जगह से खण्डित है। तीनो भाग जोडे गये है। बाये स्कध से दायी जाघ तक का एक भाग है। दायी कुहनी नही है। उपस्थ भग्न है। हथेलियो मे पुष्पाकृति अकित है। नीचे दोनो ओर मुकुटबद्ध अलकृत चँमरवाही देव खडे है। आसन सहित इसकी अवगाहना ५५ इच है। ऑखो की पुतलियाँ और नाखूनो का अकन द्रष्टव्य है। आसन पर पूर्वोल्लिखित ६ पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(२०)

लेख संख्या ११/२६०

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६०)

मूलपाठ

आसन की दायी ओर

१ सवत् १२०३ माघ सुदि १३
२ जैसवालान्वये साधु खोने ॥ भा
३ र्या जसकरि (यशकरी)। सुत नायक साहु।
४ भ्रातृ पाल्हा। वील्ह। माल्हा। पर
५ मे ॥ महिणि ॥ छ ॥ सुत स्रीरा प्र
६ णमति नित्य (नित्यम्) ॥

आसन की बायी ओर

१ सवत् १२०३ माघ सुदि
२ १३ जैसवालान्वये साहु (धू)
३. वाहड ॥ भार्या सि देवि।
४ सुत साहु सोनेस्री। भ्रा
५ ता साहु माल्हू ॥ जन ॥
६ जाहड। लाखू। ---लाले
७. प्रणमति नित्य ॥

भावार्थ

सवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि मे जैसवाल अन्वय के शाह खोने और उनकी पत्नी यशकरी के पुत्र साहु नायक, पाल्हा, वील्हा, माल्हा और परमे तथा महिणि के पुत्र श्रीरा ने और दूसरे परिवार के साहु वाहड और उसकी पत्नी शिवदेवि के पुत्र सोमनी, साहु माल्हू, जनप्राहड, लाखू और लाले इन सब ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से युक्त यह प्रतिमा नाभि के नीचे से खण्डित है। दोनो भाग एक साथ रखे हुए है। कुहनी से नीचे के हाथ नहीं है। हथेलियो मे पुष्पाकन है। सिर के पीछे भामण्डल है। हाथो के नीचे दोनो ओर चॅमरवाही अलकृत देव खडे है। आसन सहित प्रतिमा की अवगाहना ५५ इच है। लेख ८॥ इच लम्बे और ४ इच चौडे शिलाफलक पर उत्कीर्ण है।

सग्रहालय सख्या २,६० और ६२ की प्रतिमाएं समान है। एक ही अन्वय के श्रावको द्वारा प्रतिष्ठापित है। लाछन न होने से प्रतीत होता है ये प्रतिमाएँ तीर्थकर पार्श्वनाथ की रही है। शिरोभाग के परिकर मे सप्तफण वाला सर्प अकित रहा है। जो अब नही है। सभवत इसीलिए लाछन स्वरूप सर्प आसन पर अकित नहीं है।

(२१)

लेख संख्या ११/२६१

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८६)

मूलपाठ

॥ सिरि (श्री) गोलापूर्व्वान्वये माधु श्री साहुल साधु कूके एतयो सुतो साधु स्त्री देव (चिह्न) चद नालू तस्य भ्राता आल्हु-------(एतौ) प्रणमती न्यत (नित्य) ॥ स (सवत्) १२०३।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह श्री साहुल साहुणी कूके के पुत्र शाह श्री देवचन्द्र और आल्ह ने सवत् १२०३ मे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित, सिर विहीन एव हाथो से खण्डित यह प्रतिमा आसन से गले तक २२

इच अवगाहना की है। आसन का शिलाफलक २८ इच लम्बा है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। एक पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है।

पाठ टिप्पणी

इस लेख मे श्री के लिए स्री और सिरि के प्रयोग उल्लेखनीय है।

(२२)

लेख संख्या ११/२६२

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १८)

मूलपाठ

१ प्रद्वा---------(अपठनीय)

२ --------श्रीमानि सुनु जित। स० (सवत्) १२०३ सुदि १३ ठावा (स्थापिता) मगल (मगलवार) मगश्री (मगसिर)

३ ----(श्री) माथुरान्वये श्री जसरस तस्य सुत श्री जसरा तस्यपुत्र नायक श्री जाल्हण---------(तत्सुत श्री जसोधर) एते प्रणमति नित्य॥

भावार्थ

सवत् १२०३ मगसिर सुदी त्रयोदशी मगलवार के दिन माथुर अन्वय के शाह जसरस के पुत्र जसरा पौत्र श्री नायक जाल्हण तथा प्रपौत्र यशोधर इन सबने प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई। वे सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चिकने पालिश से सहित है। आसन से गले तक इसकी अवगाहना १६ इच है। आसन का फलक २७ इच लम्बा है। गले से ऊपरी भाग एव कुहनी का ऊपरी अश नहीं है। हथेलियाँ और बॉया पैर खण्डित है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। तीन पंक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख आसन पर उत्कीर्ण है।

(२३)

लेख संख्या ११/२६३

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८८)

मूलपाठ

॥ ओं ॥ स्री ॥ कसीसामि। तस्य सुत पडित स्री गगवर तस्य भार्या जोगुल तयोर्सुता सामलदेवि तस्या पुत्री वीरना-(थं) प्रणमति (न्ति)। सवत् १२०३ माघ वु (सु) दी--- (१३)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख में श्री के लिए स्री और श्री का प्रयोग हुआ है। महावीर तीर्थंकर को वीरनाथ कहा गया है।

भावार्थ

पण्डित गगवर और उसकी पत्नी जागल की पुत्री सोमलदेवी तथा उसकी पुत्री ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी मे कराई। वे वीरनाथ को प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा काले चिकने पालिश से सहित है। सिर और अगुलियो से रहित है। इसकी आसन से गले तक की अवगाहना १९ इच है। आसन का फलक २२ इच लम्बा है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप सिह अकित है। आसन पर ही उक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(२४)

लेख संख्या ११/२६४

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४०)

मूलपाठ

सवत् १२०३ माघ बं (शुक्ला) ८ मडदेवालन्व-(ये) साधु सेठ दामामारु (कमल-पुष्प) तस्य सुत-(सु) नदमाल्ह केलाम सर्व्वे प्रतिमा कारापिता।

भावार्थ

मडदेवालान्वय के साहु दामा और सेठ मारू के पुत्र सुनद, माल्ह और केलाम इन सबने प्रतिमा निर्मित कराकर सवत् १२०३ माघ सुदी अष्टमी तिथि मे प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा की मात्र आसन शेष है। यह आसन २० इच लम्बी और ९॥ इच चौडी है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। लाछन के नीचे एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

विशेष–इस लेख मे शाह और सेठ ये दो सामाजिक पद है। बुन्देलभूमि में शाह पद जैनो का सामान्य पद है। इसके बाद एक रथोत्सव कराने वाले को सिघई, दो रथोत्सव करानेवाले को सवाई सिघई, तीन बार रथोत्सव करानेवाले को सेठ और चार बार रथोत्सव करानेवाले को सवाई सेठ और पाच रथोत्सव करानेवाले के परिजनो को श्रीमन्त सेठ के पद से विभूषित किया जाता है।

प्रस्तुत लेख मे कहा गया 'सेठ' एक ऐसा ही पद है। रथोत्सव मे पहले एक ही व्यक्ति समर्थ खर्च वहन करता था और तभी उसे समाज ऐसे पदो से विभूषित करता था।

(२५)

लेख संख्या ११/२६५

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५५)

मूलपाठ

स (सवत्) १२०७ माघ वदि गुरौ ८ ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु सवधउस्तद्भार्या महनी तत्पुत्र (कमल पुष्प) उदयचद्र प्रणमति (श्रे) यसे कारिता देवे महिद्रे इति ताम्या पुत्रम जत्था॥

पाठान्तर

प गोविन्ददास कोठिया ने कारिता से भक्त्या तक के पाठ का उल्लेख नहीं किया है।

भावार्थ

सम्वत् १२०७ माघ वदी अष्टमी गुरुवार के दिन गृहपत्यान्वय के शाह सवधउ और उनकी पत्नी महनी का पुत्र उदयचन्द्र इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर कल्याण हेतु वन्दना करता है। इस प्रतिमा का निर्माण उदयचन्द्र के दोनो पुत्र देव और महेद्र ने कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का आसन मात्र शेष है। हथेलियॉ भी नहीं है। आसन की लम्बाई २४ इच है। आसन पर आदि, मध्य और अत मे चार दल के कमल और लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अकित है। एक पक्ति का लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है।

(२६)

लेख संख्या ११/२६६

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २७)

मूलपाठ

(सवत्) १२०७ माघ वदि ८ ग्र(गृ) हपत्यन्वये साहु सोने तस्य भार्या होवा तत्सुत दिवचंद्र (चन्द्र) अष्ट कर्मारिजयनाय कारापितेय प्रतिमा॥

भावार्थ

सम्वत् १२०७ माघ वदी अष्टमी तिथि मे गृहपत्यन्वय के शाह सोने उनकी पत्नी होवा और उनके पुत्र दिवचन्द्र ने अष्टकर्म रूपी वैरियो को जीतने के लिए निर्माण कराकर इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर तथा हथेलियो से रहित है। आसन से गले तक प्रतिमा की अवगाहना १७ इच है। आसन फलक की लम्बाई २३ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर अर्द्ध चन्द्रमा अकित है। उपरोक्त एक पक्ति का लेख है।

(२७)

लेख संख्या ११/२६७

पुष्पदन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७)

मूलपाठ

१ ——(सवत्) १२०७ माघ वदि ८ जय सिवालान्वये

२ (सा) धू रतन तत्सुता सी (स्री) दव (देवी) --- पति

३. नित्य प्रणमति ॥

भावार्थ

जैसवाल वश के (साहु) रतन के पुत्र श्री देव आदि ने सम्वत् १२०७ माघ वदि अष्टमी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा मे है। इसकी अवगाहना २॥ फुट बताई गयी है। इसके दोनो ओर चॅमरवाही इन्द्र खडे अकित किये प्रतीत होते है। प० गोविन्ददास कोठिया ने चिह्न देखकर इसे पुष्पदन्त तीर्थकर की प्रतिमा बताया है।

(२८)

लेख संख्या ११/२६८

सुमतिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १४)

मूलपाठ

सवत् १२०७ माघ वदि ८ ष (ख) डिलवालान्वये सावु माहदस्ततसुत वा (कमल पुष्प)-घपतस्य भार्या साविति तत्सुत वीकउ नित्य प्रणमति।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ख को ष का प्रयोग उल्लेखनीय है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे चिकने काले पालिश से सहित है। सिर नहीं है। हाथ और पैरो की अगुलियॉ भी खण्डित्त है। प. गोविन्ददास कोठिया ने इसे पुष्पदन्त प्रतिमा बताया है किन्तु आसन पर अकित चकवा पक्षी से प्रतिमा सुमतिनाथ तीर्थकर की ज्ञात होती है। आसन पर पूर्वोल्लिखित एक पंक्ति का लेख है। लाछन आसन पर बायी ओर है।

(२६)

लेख संख्या ११/२६६

पद्मप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७१)

मूलपाठ

१ सवत् १२०७ माघ वदि ८ ग्र (गृ) हपत्यन्वये सावु

२ ---जदुल तस्य भार्या लष (ख) मा तत्सुत मातन------(पति)

३ तस्य भार्या सा--- (हणा)।

भावार्थ

सम्वत् १२०७ की माघ वदी अष्टमी के दिन गृहपत्यन्वय के शाह जदुल और उसकी पत्नी लखमा के पुत्र मातन और पुत्रवधू साहरणा ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा के मात्र चरण शेष है। उनकी अवगाहना ३ इंच है। शिला फलक की चौडाई ७॥ इच है। लेख की दूसरी पक्ति के बीच मे लाछन स्वरूप कमल पुष्प रेखाकित है। आसन पर पूर्वोल्लिखित तीन पक्ति का लेख है।

(३०)

लेख संख्या ११/२७०

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३१)

मूलपाठ

स० (सवत्) १२०७ माघ वदि ८ को (पुष्प) के वर्य स ग स्न प्रणमति - (नि) त्य।

भावार्थ

सम्वत् १२०७ माघ वदी अष्टमी को शाह कोके ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा कुहनी के ऊपरी भाग से रहित है। दायी आख के नीचे का भाग छिल गया है। अगूठे भी खण्डित है। आसन से गले तक की ऊचाई १५ इच और चौडाई १६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अंकित है। पूर्वोल्लिखित एक पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है।

(३१)
लेख संख्या ११/२७१
अर्हन्त-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या ५८)

मूलपाठ

१ सवत् १२०७ माघ वदि ८ वाणपुरे ग्र (गृ) हपत्यन्वये कोक्षिल गोत्रे साहु रुद्र --------यी -----(सिरिहा) तत्सुताभ्या जिणे माल्हे आत्या (मा) साहु राहवत्या वैभाल्हे पुत्र हरिसेन जिणे सु

२ तत्सुत----(पकै) कारापितेय प्रतिमा नित्य प्रणमति ॥

भावार्थ

सम्वत् १२०७ माघ वदि ८ के दिन वाणपुर के गृहपत्यन्वय के कोच्छल गोत्र मे हुए शाह रुद्र के पुत्र जिण और माल्ह तथा माल्ह के पुत्र हरिषेण और जिण के पुत्रो ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित इस प्रतिमा का नाभि से ऊपर का भाग नहीं है। हथेलियाँ और आसन खण्डित है। लाछन नही है। आसन का फलक २५ इच लम्बा है। आसन पर दो पक्ति मे पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है। चिह्न स्थल भग्न है।

विशेष

वानपुर—यहाँ गृहपत्यन्वय के श्रावक रहते थे। दे. शान्तिनाथ प्रतिमा लेख (स० १२३७) परिचय।

(३२)

लेख संख्या ११/२७२

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३६)

मूलपाठ

१ ----(संवत्) १२०७ आखा (षा) ढ वदि ६ सु (शु) क्रे श्री वीरवर्द्धमानस्वामि प्रतिष्ठापितो ग्र (ह) पत्यन्वये साधु श्री राल्ह (कमल-पुष्प) शाश्चतुर्विधदाने। म--पठल विमुक्त सुख शीतलजलकजा प्रवर्द्धितकीर्त्तिलताव गुण्ठित ब्रह्माड महि(हि)मोभूत्तत्सुत श्री

२ अल्हण मूधा तत्सुत साधु मातनेन॥ पौरपाटान्वये साधु वासलस्तस्य दुहितामातिणि॥ साधु श्री महीपति (कमल पुष्प) स्तत्सुत साधु रल्हण तत्सुत सीढ (ढू) एते नित्य प्रणमति॥ छ॥ मङ्गल महाश्री ॥ छ॥ ११॥

भावार्थ

गृहपत्यन्वय के शाह श्री राल्हण के चतुर्विध दान से शीतल जल के समान प्रवर्द्धित सुखकारी कीर्त्ति ब्रह्माण्ड मे आच्छादित होकर मडप रूप हो गयी थी। उन राल्हण के पुत्र श्री आल्हण और उनके पुत्र श्री मातन ने तथा पौटपाट अन्वय के शाह वासन, उसकी पुत्री मातिणी, शाह श्री महीपति, उनके पुत्र शाह रल्हण और रल्हण के पुत्र सीढ़ू इन सबने सम्वत् १२०७ आषाढ वदि नौवी तिथि मे श्री वीरवर्द्धमान स्वामी-प्रतिमा की मोक्षमलक्ष्मी रूपी मगल के लिए प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित इस प्रतिमा की आसन मात्र शेष उपलब्ध है। लाछन स्वरूप आसन पर पूँछ उठाये सिह अकित है। पूर्वोल्लिखित दो पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है।

विशेष–सम्वत् १२०७ मे यह प्रतिष्ठा महोत्सव दूसरी बार आयोजित हुआ ज्ञात होता है।

(३३)

लेख संख्या ११/२७३

नेमिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६२)

मूलपाठ

सवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुदि १३ श्री मदनसागरपुरे। मेडवालान्वये तावु (साहु) कोका। सुत सबु (साधु) जाल्लकन्या पतिमा (प्रतिमा) कारापिता॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ए स्वर की मात्रा के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा अकित की गयी है। श को स के स्थान मे ध वर्ण व्यवहृत हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन श्री मदनसागरपुर मे मेडतवाल अन्वय के साहु कोका के पुत्र शाह जाल्ल कन्या ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

काले देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित, काले चिकने पालिश से सहित, सिर विहीन, अगुलियो से खण्डित इस प्रतिमा की गले तक की अवगाहना १४ इच और आसन की लम्बाई १६ इच है। लाछन स्वरूप आसन के मध्य मे शख और उसके नीचे एक पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख उत्कीर्ण है।

(३४)

लेख संख्या ११/२७४

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६५)

मूलपाठ

सवत् १२०६ वैसाख सुदि १३ ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु आल्हस्य पुत्र मातनस्तस्य भगिनी जाल्ही एते नित्य प्रणमति।

भावार्थ

सम्वत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि मे गृहपत्यन्वय के शाह आल्ह के पुत्र मातन और उनकी बहिन जाल्ही ये नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित चिकने काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १३॥ इंच है। लाछन नहीं है। पूर्वोल्लिखित लेख आसन पर ही एक पक्ति मे उत्कीर्ण है। यह प्रतिष्ठा बहिन भाई के धार्मिक स्नेह की प्रतीत है।

(३५)

लेख संख्या ११/२७५

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७६)

मूलपाठ

१ (सवत्) १२०६ आखा (षा) ढ वदि ४ गुरौ जससिवालान्वये साहु श्री

वाहड तत्सुतौ सोमपति मल्हणौ। तक्षता पुत्री नेमिचद्रस्तत्सुनौ माहिल पडित देल्हणौ।

२ तथा साहु श्री रत तस्य सुता सीढ (ढू) सवू कल्हणा एते नित्य प्रणमन्ति ॥

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सवत् १२०६ अषाढ वदी अष्टमी गुरुवार के दिन आयोजित की गयी थी। आयोजक जैसवाल अन्वय के तीन परिवार थे—

१ शाह वाहड और उनके दोनो पुत्र—सोमपति और मल्हण तथा पुत्री तक्षता

२ शाह नेमिचन्द्र और उनके दोनो पुत्र माहिल और पण्डित देल्हण तथा

३ शाह श्री रत और उसके पुत्र—सीढू, सावू और कल्हण।

ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। अगुलियाँ खण्डित हैं। आसन के आदि, मध्य और अत मे पुष्पाकृतियाँ अकित है। लाछन नहीं है।

विशेष—सम्वत् १२०७ के समान सम्वत् १२०६ मे भी प्रतिमा प्रतिष्ठा महोत्सव दूसरी बार आयोजित हुआ ज्ञात होता है। इसमे एक ही अन्वय के विभिन्न तीन परिवारो का सहयोग रहा है।

(३६)

लेख संख्या ११/२७६

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८३)

मूलपाठ

सवत् १२०६ आसा (षा) ढ वदि ४ गुरौ जयसवालान्वये नायक स्री साहु कसस प्रतिमा गोठिता ',' (इति) ॥

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ के अत मे दी गयी त्रि विन्दु 'इति' शब्द की बोधक है। लेख सख्या एक शान्तिनाथ प्रतिमालेख में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२०६ आषाढ़ वदी चतुर्थी गुरुवार के दिन जैसवाल अन्वय के नायक शाह कसस ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चिकने पालिश से सहित है। इसका सिर खण्डित हो गया है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इच है। आसन का फलक २२ इच लम्बा है। अगुलियॉ छिल गयी है। लाछन स्वरूप आसन पर सिह अकित है। पूर्वोक्त एक पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण किया गया है। गोठिता मे त पहले और ठ उसके बाद अकित है।

(३७)

लेख संख्या ११/२७७

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १०१)

मूलपाठ

सवत् १२०६ वैसा (शा)ख सुदि १३ माथुरान्वये साधु यस (श) देवस्य पुत्री। साहु यसहड तस्य भार्या माहिणितयो: पुत्र स्यामदेव (श्यामदेव) एते नित्य प्रणमति ॥

भावार्थ

सवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन माथुर अन्वय के शाह यशदेव की पुत्री, शाह जसहर और उनकी पत्नी माहिणी और पुत्र श्यामदेव ये इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित एव काले चिकने पालिश से सहित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा का सिर तथा कुहनी से हाथो का ऊपरी भाग खण्डित है। गले तक की अवगाहना १८॥ इच है। आसन जिस पर एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है, २२॥ इच लम्बी है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप सिह अकित है।

(३८)

लेख संख्या ११/२७८

अरहनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८६)

मूलपाठ

१. समत् (सवत्) १२०६ गोलपुव्वन्वए सा
२ धु सुपट वकपापे अल्हु तस्य पुत्र सा
३. ति पुत्र देल्हण स्री अरुहनाथ प्रणाम
४ ति नित्य (इति) ॥

पाठ टिप्पणी

इस लेख के सम्वत् का चौथा अक ऐसा लगता है जैसे सुधारा गया है और ६ के स्थान मे ७ अक बनाये गये हो। अन्त मे लगे विसर्ग 'इति' सूचक है।

भावार्थ

सम्वत् १२०६ में गोलापूर्व अन्वय के शाह सुपट बकपापे, अल्हु और अल्हु का पुत्र शान्ति पौत्र देल्हण अरहनाथ प्रतिमा को नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। इस प्रतिमा का घुटनो के नीचे का भाग ही अब शेष है। इस भाग की अवगाहना १० इच है। आसन १० इच लम्बी और ३ इच चौडी है। दोनो ओर चॅमरधारी इन्द्र है। लाछन नहीं है। चार पक्ति का पूर्वोक्त लेख आसन पर उत्कीर्ण है। लेख से प्रतिमा अरहनाथ की प्रमाणित होती है।

(३६)

लेख संख्या ११/२७६

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७८)

मूलपाठ

१ 	स० (सवत्) १२०६ गोला पुर्व्वन्वए सा
२ 	धु महिदीत (चिह्र) स्य पुत्र सुप–
३. 	ट सुत साति (शान्ति) भार्ज्जा (भार्य्या) अर्हमामक प्रणम्य ॥

भावार्थ

सम्वत् १२०६ मे गोलापूर्व अन्वय के शाह महिदीत के पौत्र और सुपट के पुत्र शान्ति और उसकी पत्नी अर्हमामक (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित खड्गासन मुद्रा मे काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा खण्डित है। इसके मात्र घुटनों तक के पैर शेष रह गये है। दोनो ओर चॅमरवाही अलकृत सेवारत इन्द्र प्रतिमाएँ खडी हैं। आसन से बचे हुए इस भाग तक की अवगाहना १५ इच है। लेख का अश ८ इच लम्बा है। आसन पर आमने-सामने मुख किये लाछन स्वरूप दो हरिण अकित है। पूर्वोल्लिखित तीन पंक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है। यह लेख लाछन की दोनो ओर अकित है।

विशेष

इस परिवार के अरहनाथ प्रतिमा बनवाने से कुन्थुनाथ प्रतिमा के बनवाये जाने का भी बोध होता है। सग्र० स० ८६ के प्रतिमालेख में अरहनाथ प्रतिमा का और सग्रहालय सख्या ३० के प्रतिमालेख में कुथुनाथ प्रतिमा का उल्लेख हुआ भी है। ये तीनो प्रतिमाएँ एक ही काल मे प्रतिष्ठित कराई गयी प्रतीत होती है। शान्तिनाथ और अरहनाथ प्रतिमाओ का प्रतिष्ठा काल सम्वत् १२०६ है। अत कुन्थुनाथ प्रतिमा का प्रतिष्ठाकाल भी यही ज्ञात होता है। प० गोविन्ददास कोठिया ने सभवत भ्रान्तिवश ही सग्रहालय सख्या ३० के प्रतिमालेख का सम्वत् १२०३ पढा है वह निश्चित ही सम्वत् १२०६ होना चाहिये क्योंकि ये तीनो प्रतिमाएँ एक साथ प्रतिष्ठित होती है और एक साथ विराजमान होती है।

(४०)

लेख संख्या ११/२८०

कुन्थुनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३०)

मूलपाठ

१. समत् (सवत्) १२०६ गो(चिह्न)लापुर्व्वन्वाए (ये) साहु
२ सुपट तस्य पुत्र सा (शा) (चिह्न) ति तस्य पुत्र पा
३ ----कुथुनाथ (कुन्थुनाथं) प्रणमति मित्य (नित्यं) ॥ (इति) ॥
४ ------साहु पाप वधू आल्हु प्रणाम -(ति)।

भावार्थ

सम्वत् १२०३ मे गोलापूर्व अन्वय के शाह सुपट के पौत्र और शान्ति के पुत्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वह इस कुन्थुनाथ प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित खड्गासन मे निर्मित चमकदार काले पालिश से युक्त यह प्रतिमा सिर विहीन है। आसन से गले तक की अवगाहना २७ इच और शिलाफलक की चौडाई ११ इच है। हाथो के नीचे सौधर्म और ईशान स्वर्ग के चँमरवाही इन्द्र अंकित है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप बकरे की आकृति अकित है। आसन पर पूर्वोल्लिखित चार पक्ति का लेख है। यह ७॥ इंच लम्बाई और २ इंच चौडाई मे उत्कीर्ण है।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ये के स्थान मे 'ए' स्वर का प्रयोग द्रष्टव्य है। श के स्थान

में स तथा न अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार व्यवहृत हुआ है। नित्य के पश्चात दी गयी विसर्ग 'इति' बोधक है।

विशेष–सवत् १२०६ मे इसी अन्वय के इन्ही श्रावको द्वारा शान्तिनाथ (ले स ११/२७८) और अरहनाथ (ले० स० ११/२७७) की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित कराई गयी हैं। अत यह प्रतिमा भी उसी सवत् मे प्रतिष्ठापित हुई ज्ञात होती है। प० गोविन्ददास जी ने इस लेख का सवत् १२०३ पढा है जो तर्कसगत प्रतीत नहीं होता।

(४१)

लेख संख्या ११/२८१

धर्मनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १०३)

मूलपाठ

१ सवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुद (दि) १३ पौरापाटा

२ न्वये (पौरपाटान्वये) मा(सा)धु कोके तद् भार्या मातिणि एतौ

३ साधु सीढस्य भार्या सलषा (खा) तयो ॥

पाठ-टिप्पणी

इसमे मात्राओ के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा का प्रयोग हुआ है। श को स और ख वर्ण के लिए ष का व्यवहार भी द्रष्टव्य है।

भावार्थ

सम्वत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन पौरपाट अन्वय के शाह कोका और उनकी पत्नी मातिणी इन दोनो ने और शाह सीढू और उसकी पत्नी सलखा इन दोनो ने प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। दोनों ओर चँमरवाही मुकुटबद्ध देव सेवारत अंकित है। इसकी अवगाहना २३ इच है। फलक की चौडाई ८॥ इंच है। आसन पर लांछन स्वरूप वज्रदण्ड अकित है। पूर्वोक्त तीन पंक्ति का लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है।

(४२)

लेख संख्या ११/२८२

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४३)

मूलपाठ

१ सवत् १२०६ वैसा (शा) ख सदि १३------

२ न पडित विक्रमादित्येन। ठक्कुर देद सुतेन पद्मसिहे व (ण) पुण्याय कारि-----(ता)

भावार्थ

सम्वत् १२०६ वैशाख सुदी १३ के दिन पण्डित विक्रमादित्य और ठक्कुर वेद के पुत्र पद्मासिह के द्वारा इस प्रतिमा की पुण्य कामना से प्रतिष्ठा कराई गयी।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का सिर और दायॉ हाथ नहीं है। आसन का अर्धभाग खण्डित है। प्रतिमा की गले तक की अवगाहना १३ इच और आसन फलक की चौडाई ६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ तथा उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(४३)

लेख संख्या ११/२८३

नेमिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६३)

मूलपाठ

१ सवत् १२०६ वैसा (शा) ख सदि १३ ग्र (गृ) पत्यवये (गृहपत्यन्वये)

२ साधु मातनस्य पुत्री आल्ही पुत्र पापे एतौ

३ नित्य प्रणमत: ॥

भावार्थ

सम्वत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन गृहपत्यन्वय के शाह मातन की पुत्री आल्ही और पुत्र पापे ये दोनो इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर उसकी नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित यह प्रतिमा काले चिकने पालिश से सहित है। घुटनों का ऊपरी भाग नहीं है। दोनो ओर अलंकृत चँमरवाही देव प्रतिमाएँ सेवारत खड़ी है। इन देवों के भी सिर नहीं है। इस अश

की ऊँचाई ६ इंच और चौडाई भी ६ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर शख अंकित है। पूर्वोक्त तीन पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है।

(४४)

लेख संख्या ११/२८४

अभिनन्दननाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६)

मूलपाठ

सवत् १२१० वैसा (शा) ख शुदि (सुदि) १३ पौरपाटान्वये साधु टूदु भार्या जसकरि तत्पुत साढू भार्या देल्हीजेलछि (लच्छि) तत्सुत पोपति एते प्रणमति नित्य स्रे (श्रे) यसे ॥ स्री (श्री) ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे सुदि मे स के स्थान मे श का प्रयोग हुआ है। श्री स्री श्री ये तीनो प्रयुक्त है। य के स्थान मे 'ज' का प्रयोग है।

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन पौरपाठ अन्वय के शाह टूदू और उनकी पत्नी यशकरी इनका पुत्र साढू और इसकी पत्नी देल्हीजेलच्छी और इनका पुत्र पोपति इन सबने कल्याण एव लक्ष्मी की कामना से इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पत्थर से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। हाथ भी खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इच है। जिस फलक पर निर्मित है वह २० इच चौडा है। आसन पर लांछन स्वरूप बन्दर अकित है। लाछन के नीचे पूर्वोल्लिखित एक पक्ति का लेख लाञ्छन के नीचे उत्कीर्ण है।

(४५)

लेख संख्या ११/२८५

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ११०)

मूलपाठ

१. सवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ लमेचुकान्वये साधु क्षते तद् भार्या वप्रा तयो (:) सुत नायक कमलसिंह तत् भार्या जाल्ही सुत लघुदेव एते प्रणमति नित (नित्य)

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन लमेचुकान्वय के शाह क्षते उनकी पत्नी वप्रा, पुत्र नायक कमलसिह और पुत्रवधू जाल्ही तथा पौत्र लघुदेव इन सभी ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित, सिर तथा हथेलियो से रहित इस प्रतिमा की आसन से गले तक की अवगाहना २३॥ इच है। लेख का फलक अश २७ इच लम्बा है। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र अकित है। लाछन के नीचे एक पक्ति मे पूर्वोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(४६)

लेख संख्या ११/२८६

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५४)

मूलपाठ

सवत् १२१० मइडतवालान्वये साधु स्री सेठो भार्या महिव तयो पुत्रास्रील्हा वर्द्धमान, माल्हा, एते स्रे (श्रे) यसे प्रणमति नित्य॥ वैसाख सुदि १३॥ श्री (श्री)॥

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन मइडितवालान्वय के शाह श्री सेठो उनकी पत्नी महिव, इन दोनो के पुत्र श्रील्हा, वर्द्धमान, माल्हा इन सबने प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब कल्याण-कामना से इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

(४७)

लेख संख्या ११/२८७

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५३)

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ पंडित श्री श्री विसा (शा) लकीर्त्ति अर्यिका त्रिभुवनस्री, तयोः शिष्यणी पूर्णश्री (श्री) तथा धन श्री (श्री) एताः प्रणमति नित्यम॥

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी मे हुई इस प्रतिमा प्रतिष्ठा मे

विराजमान विद्वान मुनि विशालकीर्त्ति आर्यिका त्रिभुवनश्री इन दोनो की शिष्याएँ पूर्णश्री और धनश्री ये सब इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। इस प्रतिमा की आसन मात्र शेष है। लांछन स्वरूप आसन पर सिंह रेखांकित है। लाछन के नीचे पूर्वोक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(४८)

लेख संख्या ११/२८८

लाञ्छनविहीन-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १३)

मूलपाठ

सवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ मेडतवालवसे (शे) साधु पयणरवा तत्सुत हरसू एतौ नित्य प्रणमत ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे वेसाख मे व वर्ण के पहले और एतो के तो वर्ण के पहले एक खडी रेखा देकर आगे लगनेवाली मात्रा मे एक मात्रा और बढाने का सकेत किया गया है।

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन मेडतवाल वश के शाह पयणरवा और उनका पुत्र हरसू दोनो इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। इसकी आसन से गले तक की अवगाहना १२ इंच है। शिलाफलक १८ इच चौडा है। पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। इसकी अगुलियाँ खण्डित है।

(४९)

लेख संख्या ११/२८९

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३८)

मूलपाठ

सवत् १२१० वैसाख (वैशाख) सुदि १३ ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु कुलधरस्य सुत——

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन गृहपत्यन्वय के शाह कुलधर के पुत्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले-चिकने पालिश से सहित है। इस प्रतिमा की आसन का दायॉ भाग शेष है बाकी हिस्सा नहीं है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है तथा उसके नीचे उपरोक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। आसन टूट जाने से लेख अपूर्ण है। यह आसन दूसरी से जोडी गयी है।

(५०)

लेख संख्या ११/२६०

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४२)

मूलपाठ

१ ----(सवत्) (१) २१० ॥ पौरपाटान्वये साधु स्री (श्री) म्रीठायधर भार्या गगे सुत सोढू माहव एते सर्व्वे से (श्रे) यसे प्रणमति नित्य।

२ ---- (वैसा)ख सुदि १३ बुध दिने।

पाठ-टिप्पणी

इसी तिथि तथा इसी अन्वय की एक प्रतिमा सग्र० सख्या ६ से सग्रहालय में सग्रहीत है। इस प्रतिमा के आसन लेख मे सम्वत् १२१० का उल्लेख हुआ है। प्रस्तुत लेख मे सम्वत् का प्रथम अक नहीं है अत यह लेख सम्वत् २१० का पढा जाता है। निश्चय से यह प्रथम अक एक है और पूर्ण सम्वत् १२१० है।

इस लेख मे गाग शब्द मे भ्रान्ति से वर्ण विपर्यय हुआ प्रतीत होता है। लिपिकार ने हो सकता है आ स्वर की मात्रा इस शब्द के प्रथम ग वर्ण मे सयोजित कर दी है जो दूसरे ग वर्ण मे सयोजित होनी थी।

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी बुधवार के दिन पौरपाट अन्वय के शाह श्री म्रीठायधर उनकी पत्नी गगे और पुत्र सोढू और माहव ये सब कल्याण (मोक्ष) की कामना से इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित और काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। इसके दाये हाथ की कुहनी के

ऊपर का अश नहीं है। काख के नीचे का भाग छिला हुआ है। दाये हाथ की अगुलियाँ भी खण्डित है। लेख का सम्वत् सूचक प्रथम अक टूट गया है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अंकित है और दो पक्ति का पूर्वोल्लिखित लेख भी उत्कीर्ण है। आसन से गले तक की प्रतिमा की अवगाहना १४ इच और आसन फलक की लम्बाई १६ इच है।

(५१)

लेख संख्या ११/२६१
अजितनाथ-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या २०)

मूलपाठ

सवत् १२१० वे (वै) सा (शा) ख शु (सु) दि १३ जायसवालान्वये साधु देल्हण भार्या पाल्ही तत्सुत पडित राल्ह भा (चिह) र्या धुहणि तत्सुत वर्द्धमान आमदेव एते श्रे (श्रे) यसे प्रणमति (मन्ति) नित्यम् ॥ मगल महा श्री (श्री) ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ए स्वर की मात्रा के लिए आमदेव मे द, एते मे त और श्रेयसे मे स वर्णो के पूर्व एक खडी रेखा दी गयी है। श के स्थान मे स और न अनुनासिक का अनुस्वार हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन जैसवाल अन्वय के शाह देल्हण और उसकी पत्नी पाल्ही पुत्र पण्डित राल्ह और पुत्रवधू धुहणि तथा पौत्र वर्द्धमान और आमदेव ये सब कल्याण (मोक्ष) की कामना से नित्य वन्दना करते है। इनका मगल हो।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा के नाभि का ऊपरी भाग नहीं है। आसन से नाभि भाग तक की ऊचाई १० इच और चौडाई २६ इच है। कुहनी के नीचे के दोंनो हाथ है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप हाथी अकित है और लांछन की दोनो ओर एक ही पक्ति मे पूर्वोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(५२)

लेख संख्या ११/२६२

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४७)

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा(शा)ख शु(सु)दि १३ बुधे ग्र(गृ)हपत्यन्वये साधु स्री (श्री) सढे (ढू) भार्वी गना तयो सुत साधु सी(शी)ले भार्या रूपा तयो सुत देवचद्र (चन्द्र) एते प्रणमति ॥ श्री ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे वैशाख शब्द मे व वर्ण के पूर्व ए स्वर की मात्रा के लिए एक खडी रेखा दी गयी है। श के स्थान मे स और स के स्थान मे श दोनो प्रयोग इस लेख मे द्रष्टव्य है।

भावार्थ

सम्वत् १२१० वैशाख सुदि त्रयोदशी बुधवार के दिन गृहपत्यन्वय के शाह श्री साढू उसकी पत्नी णना, उन दोनो का पुत्र शाह शीले पुत्रवधू रूपा और पौत्र देवचन्द्र ये सब प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित और चिकने काले पालिश से सहित पद्मासन मुद्रा मे स्थित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। कुहनी से नीचे के हाथ है किन्तु उनकी हथेलियॉ नहीं है। आसन पर आदि और अत मे कमल पुष्प तथा मध्य मे लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। आसन पर पूर्वोक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। आसन १७ इच लम्बी है।

(५३)

लेख संख्या ११/२६३

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४४)

मूलपाठ

१. ——(संवत् १२११ फालु) गुन सुदि ८ अद्येह श्री मदन सा (कमल पुष्प)-(ग) र पुरे ॥
जैसवालान्वये साबु चाद ॥ स ——————
२. ——तृ कैल ॥ हरिश्चद्रः ॥ तथा जि (कमल पुष्प) णचद्र ॥ प्रणम्यति (प्रणमंति) नित्य ॥ मग——(ल महाश्री. ॥)

पाठ-टिप्पणी

इस लेख का सम्वत् सूचक स्थल टूट गया है। गुन फाल्गुन शब्द का उत्तर पद है। फाल्गुन सुदि अष्टमी तिथि मे सम्वत् १२११ मे इस क्षेत्र मे प्रतिष्ठाएँ हुई है। अत इस लेख का सम्वत् १२११ रहा प्रतीत होता है।

भावार्थ

सम्वत् १२११ फाल्गुन सुदि अष्टमी के दिन श्री मदनसागरपुर मे जैसवाल अन्वय के शाह चाद के पौत्र कैल, हरिचन्द्र, और जिनचन्द्र प्रतिष्ठा कराकर मगल प्रदायिनी मोक्षलक्ष्मी की कामना से नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का सिर तथा स्कन्ध भाग से कुहनी तक के हाथ नहीं है। आसन भी बीच से खण्डित हो गयी है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। दो पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है। यह लेख आदि, मध्य और अत मे खण्डित है।

मदनसागरपुर

यह एक ऐतिहासिक नगर रहा है। अनेक जैन जातियो का यहाँ आवास था। यह वही स्थान है जहाँ ये प्रतिमाएँ आज भी विराजमान है। सम्वत् १२११ मे अहार इस नाम से विश्रुत था।

(५४)

लेख संख्या ११/२६४

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७२)

मूलपाठ

सवत् १२११ फाल---भार्या पापा सुत साधु सी (शी) लण भार्या पाल्हा नित्य प्रणमन्ति ॥

भावार्थ

सम्वत् १२११ के फाल्गुन मास मे शाह शीलण और उसकी पत्नी पाल्हा इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर और बाँया हाथ नहीं है। हथेलियाँ भग्न है। आसन सहित गले तक की अवगाहना १६ इच और आसन फलक की चौडाई २० इच है। आसन पर चिह्न नहीं है। सिर पर सप्त फणावलि के होने की सम्भावना है। आसन पर एक पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। लाछन और लेख का कुछ

भाग छिल गया है।

विशेष–इसी सवत् का एक लेख सग्र० सख्या १२ की प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है जिससे इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्वत् १२११ फाल्गुन सुदी अष्टमी के दिन माथुरान्वय के श्रावको द्वारा कराई गयी प्रमाणित होती है। प्रतिमा लेख नीचे द्रष्टव्य है।

(५५)

लेख संख्या ११/२६५

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२)

मूलपाठ

सवत् १२११ फालग्र (फाल्गुन) सुदि ८ सु (शु) क्रे। श्री माथुरान्वये साबु जिणदेव सुत (चिह्न) सावु त्रजित भार्या जिणवठे (ती) सुत सावु वीठु नित्य प्रणमन्ति लाहिलि मामी।

भावार्थ

सम्वत् १२११ फाल्गुन सुदी अष्टमी शुक्रवार के दिन माथुरान्वय के शाह जिनदेव, उनका पुत्र त्रजित पुत्रवधू जिणवती और पौत्र वीठू लाभार्थ इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। सिर नहीं है। हाथ भी खण्डित है। हथेलियो और तलवो मे शुभ लक्षण अकित है। आसन से गले तक की अवगाहना २१ इच और चौडाई २६ इच है। आसन पर मध्य मे लाछन स्वरूप सिह अकित है। लाछन की दोनो ओर एक पक्ति मे उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(५६)

लेख संख्या ११/२६६

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १८६)

मूलपाठ

सवत् १२१२-------

प्रतिमा-परिचय

देशी मठमैले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना ६॥ इच है। शिलाफलक १३ इच चौडा है। आसन पर लाछन नहीं है। एक पक्ति का लेख अवश्य उत्कीर्ण है।

यह बहुत घिस गया है केवल सम्वत् सूचक अक ही कठिनाई से पठनीय है।

(५७)

लेख संख्या ११/२६७

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४६०)

मूलपाठ

सवत् १२१२-------(अपठनीय)

प्रतिमा-परिचय

प्रतिमा सिर रहित है। श्रीवत्स चिन्ह यथास्थान अकित है। लाछन भी नहीं है। लेख भाग छिल गया है केवल सवत् सूचक अक पठनीय रह गये है।

(५८)

लेख संख्या ११/२६८

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४६)

मूलपाठ

१ ------३ (सवत् १२१३) जषाढ (अषाढ) सुदि २ सोमे उता (त्रा) (कमलपुष्प) भे साहु सेल्हे भार्या सहना तस्य पुत्र उद

२ (य) ---- पाल्हण राल्हण माधव नित्य प्र (कमल पुष्प) णमति (मन्ति) (इति) ॥

पाठान्तर

सवत् सूचक टूटे हुए अश मे प० गोविन्ददास कोठिया ने सवत् १२०३ पढा है। मास तिथि के उल्लेख से सवत् १२१३ ज्ञात होता है। प्रणमति के बाद अकित दो बिन्दु 'इति' के प्रतीक है।

भावार्थ

सवत् १२१३ अषाढ सुदि २ सोमवार उत्तराषाढ नक्षत्र मे शाह सेल्ह उनकी पत्नी सहना, पुत्र उदय तथा सभवत· पौत्र पाल्हण, राल्हण और माधव नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का नाभि से नीचे का भाग मात्र शेष है। हथेलियाँ नहीं है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। दो पक्ति मे उक्त लेख भी उत्कीर्ण है। सवत् सूचक स्थल छिल गया है। आसन की चौडाई १६॥ इच है।

(५६)

लेख संख्या ११/२६६
अर्हन्त-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या ५०७)

मूलपाठ

१ सवत् १२१३ अषढ (अषाढ) सुदी (दि) २ साहु नागचद-------
२ प्रतष्ठीति (प्रतिष्ठापितमिति)।

प्रतिमा-परिचय

इस फलक पर चरण चिह्नो से पॉच प्रतिमाएँ निमित की गई ज्ञात होती है। ये प्रतिमाएँ सभवत पच बाल यतियो की होगी। इन प्रतिमाओ मे मूलनायक प्रतिमा पद्मासनस्थ है। उसकी दोनो ओर दो-दो खड्गासनस्थ प्रतिमाएँ अकित है। आसन पर उक्त लेख उत्कीर्ण है किन्तु किसी भी प्रतिमा का लाछन अकित नहीं है। अलकरण स्वरूप सामने की ओर मुख किये दो सिंह दर्शाये गये है।

(६०)

लेख संख्या ११/३००
आदिनाथ-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या १११)

मूलपाठ

१ सवत् १२१३ (इति)। स्री माधुन्वए (ये) साधु स्री (श्री) जसकर सुत साधु स्री जसरा (यशरा) तस्य पुत्र्यैना (इति) कजाल्क (किजल्क) जसोधरौ दार्य्या राजू
२ एते प्रणमन्ति नित्य (॥)

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ऊपर दो और दोनो के नीचे मध्य मे एक बिन्दु को इति शब्द का बोधक माना गया है। ये वर्ण के स्थान मे ए स्वर का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१३ मे श्री माधुन्वय के शाह श्री जशकर के पुत्र श्री जशरा की पुत्री और किजल्क, यशोधरी पत्नियॉ राजू प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

काले देशी पाषाण से निर्मित चिकने पालिश से सहित पद्मासन मुद्रा मे इस प्रतिमा की आसन से गले तक की अवगाहना १८ इच है। शिलाफलक की

चौडाई २५ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। एक पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है।

(६१)

लेख संख्या ११/३०१

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २५)

मूलपाठ

१. कुटकान्वये पडित (पण्डित) स्री (श्री) लक्ष्मणदेवस्त स्य (पुष्पाकृति) सिष्य (शिष्य) स्री (श्री) मदार्यदेवस्तथा कतिका ज्ञानस्री (श्री)

२ सहेल्लिका जाजमामातिवि येतयोर्ज्जिन (पुष्पाकृति) विव प्रतिष्ठापितमिति ॥ सवत् १२१३ ॥

भावार्थ

कुटकान्वय के पण्डित श्री लक्ष्मणदेव के शिष्य श्रीमान् आर्यदेव की आर्यिका ज्ञानश्री और उसकी सहेली जाजमामातिणि इन दोनो सेलिकाओ ने सम्वत् १२१३ मे इस जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निमित चमकदार काले पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। इसकी आसन से गले तक की अवगाहना १३ इच और शिलाफलक की चौडाई १८ इच है। लाछन स्वरूप आसन के मध्य मे पूँछ उठाये सिह अकित है। दो पक्ति का उक्त लेख भी आसन पर अकित पुष्पाकृति की दोनो ओर उत्कीर्ण है।

(६२)

लेख संख्या ११/३०२

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६०)

मूलपाठ

म (सं) वत् १२१३ गोल्लापूर्व्वान्वये साधु गाल्ह भार्या मलषा (खा) तया (तयो·) सुत पोष (ख) न वामे प्रणमंति आषढ (आषाढ) सुदि २ (।)

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ख के लिए ष वर्ण का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१३ आषाढ सुदी द्वितीया के दिन गोलापूर्व अन्वय के शाह गरल्ह और उनकी पत्नी यलखा इन दोनो का पुत्र पोखन और कामे ये सब

प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चिकने पालिश से सहित, सिर और हथेलियो से रहित यह प्रतिमा आसन से गले तक १४ इच ऊँची है। आसन की चौडाई २० इच है। लाछन स्वरूप आसन पर सिह और एक पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६३)

लेख संख्या ११/३०३

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७४)

मूलपाठ

१ गोल्लापूर्व्वन्वये सावु रासल तस्य सुत सावु मामे प्रणमति ग्र (गृ) हपत्यन्वये सावु केसव (केशव) भार्या सातिणि (शान्तिणि) सावु वावण सुत माल्हे प्रणमति ॥

२ सवत् १२१३ गोल्लापूर्व्वान्वये साधु जाल्हू तस्य भार्या पल्हा तयो पुत्र वछराजदेव राजजस वेवल प्रणमति आषढ सुदि २ सोमे (।)

पाठान्तर

इस लेख का सम्वत् पढने मे १२०३ आता है। प गोविन्ददास कोठिया ने भी इसे सम्वत् १२०३ ही पढा है किन्तु १२०३ मे हुई प्रतिष्ठा प्रतिमालेखो मे माघसुदी त्रयोदशी तिथि बताई गयी है। आषाढ सुदी द्वितीया सोमवार प्रतिष्ठा तिथि सम्वत् १२१३ के प्रतिमालेखो मे प्राप्त होती है अत इस लेख का सम्वत् १२१३ अधिक शुद्ध प्रतीत होता है।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह रासल के पुत्र शाह मामे और गृहपत्यन्वय के शाह केशव और उनकी पत्नी शान्तिणि तथा शाह वावण का माल्हे एव गोलापूर्वान्वय के शाह जाल्हू और उनकी पत्नी पल्हा इन दोनो के पुत्र वछरा (ज) देव, राजजस और वेवल इन सबने सम्वत १२१३ के आषाढ मास की द्वितीया सोमवार के दिन प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रतिमा को प्रणाम करते है।

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा दो गोलापूर्व और दो गृहपत्यन्वय परिवारो ने मिलकर कराई थी।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। कुहनी तक के दोनो हाथ भी नहीं है।

आसन से गले तक की अवगाहना २२ इच है। शिलाफलक २७ इच चौडा है। नाभि के नीचे से खण्डित होकर इसके दो भाग हो गये है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अंकित है। लेख के आदि, मध्य और अन्त मे पुष्पाकृतियॉ है। आसन पर दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(६४)

लेख संख्या ११/३०४

सुमतिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १००)

मूलपाठ

सम्वत (सवत्) १२१३ आषाढ सुदि २ सोमे। ग्र (गृ) ह-पत्यन्वये साधु जसकरस्तस्य भार्या रा (शे) हिणिए(त)यो पुत्र वासलस्तस्य लघुभ्राता साधु नाने तस्य भार्या पल्हा तथा अल्हा नित्य प्रणमन्ति ॥

पाठान्तर

पं० गोविन्ददास कोठिया ने सम्वत् १२०३ आषाढ सुदी द्वितीया तिथि के साथ प्राचीन शिलालेख रचना के लेख न० ४१ मे दिन सोमवार बताया है। इसी प्रकार लेख सख्या ८६ मे भी सोमवार ही पढा है किन्तु प्रस्तुत ले० स० ५३ मे उन्होने भौमे पढा है जो तर्कसगत प्रतीत नहीं होता। मागलिक कार्यो मे शनि, भौम, रवि इन दिनो का आज भी विचार किया जाता है। यद्यपि वह सामान्यत भौमे ही पढने मे आता है किन्तु बारीकी से देखने समझने पर उसे सोमे भी पढा जा सकता है। प्रस्तुत लेख मे 'सोमे' पाठ को ही शुद्ध माना गया है और इसी लक्ष्य से उसे यहाँ दिया गया है।

भावार्थ

सम्वत् १२१३ आषाढ सुदी द्वितीया सोमवार के दिन गृहपत्यन्वय के शाह यशकर और उनकी पत्नी रोहिणी इन दोनो के पुत्र वासल के छोटे भाई शाह नाने और उसकी पल्हा तथा अल्हा पत्नियॉ इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करती हैं।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर तथा कुहनी के ऊपरी हाथो से रहित है। आसन से गले तक की अवगाहना २०॥ इच और आसन की चौडाई २८ इच है। लाछन स्वरूप चकवा पक्षी अकित है। आसन पर एक पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। प० गोविन्ददास कोठिया ने इस प्रतिमा के लाछन को मगर समझा है।

(६५)

लेख संख्या ११/३०५

संभवनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३७)

मूलपाठ

(स)वत् १२१३ गोलापूर्व्वा (कमल पुष्प) न्वये साधु पद्मे साल्हु वाल्हु-------

भावार्थ

सम्वत् १२१३ मे गोलापूर्वान्वय के शाह पद्मे, साल्हु और वाल्हु ने प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित इस प्रतिमा के कुहनी के नीचे हाथ तथा पैर और आसन मात्र शेष है। आसन की लम्बाई ११ इच और चोडाई एक इच है। एक पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है। प० गोविन्ददास कोठिया ने इसका चिन्ह घोडा बताया है जबकि वह सिह समझ मे आता है।

(६६)

लेख संख्या ११/३०६

सुमतिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २१९)

मूलपाठ

१ सवत् १२१३ भट्टारक स्री (श्री) माणिक्यदेव
२ गुण्यदेवौ प्रण (चिह्न) मति (मत) नित्यम् ॥

भावार्थ

सम्वत् १२१३ मे भट्टारक माणिक्यदेव और गुण्यदेव ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। दोनो इसे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा के घुटनो से ऊपर का भाग नहीं है। दोनो ओर चॅमरवाही इन्द्र अंकित है। दायी ओर के इन्द्र के पार्श्व मे मालाधारी देव का अकन किया गया है। आसन पर लाछन स्वरूप चकवा तथा दोनो ओर दो पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६७)

लेख संख्या ११/३०७

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३६)

मूलपाठ

सवत् १२१३ पडित (पण्डित) स्री (श्री) म—वर्म्म भग्नी (पुष्पाकृति) अज्जिका श्रामिणि सिद्धिणी लला। प्रणमति वित्त (नित्य) ॥

पाठान्तर

श्री प० गोविन्ददास कोठिया ने श्रामिणि को श्रीमती पढा है। महवर्म्म के पश्चात् भग्नी नहीं पढा है।

भावार्थ

सम्वत् १२१३ मे पण्डित महवर्म्म की बहिन आर्यिका श्रमणी सिद्धणीलला नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की आसन और कुहनी के नीचे के दोनो हाथ तथा पैर मात्र शेष है। इसकी आसन १६ इच लम्बी और एक इच चौडी है। लाछन अस्पष्ट है। सिह समझ मे आता है। पूर्वोक्त एक पक्ति का लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है। प० गोविन्ददास कोठिया ने इस प्रतिमा का लाछन कमलपुष्प बताया है।

(६८)

लेख संख्या ११/३०८

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १७३)

मूलपाठ

॥ समतु (सवत्) १२१३ ॥ सिद्धातदेव स्री सा------

भावार्थ

सम्वत् १२१३ मे शाह सिद्धान्तदेवश्री ने प्रतिष्ठा कराई। अभिलेख अपूर्ण है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले और चिकने पालिश से सहित है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना ८ इंच है। लेखफलक ७॥ इच लम्बा है। आसन पर लांछन स्वरूप वृषभ और उक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है। बायाँ हाथ छिला हुआ है।

(६६)

लेख संख्या ११/३०६

वेदिका लेख

मूलपाठ

१ सवत् १२१३ आषाढ सुदि २ सोम दिने ठा (ग) हपत्यान्वये कोछिल

२ गोत्र वाणपुरवास्तव्य साधु ऊद सुत माहव। पुत्र साहु माले ॥

३ श्र (श्री) (श्री) हरसे (षे) ण। विजयसेण। उद्दु। सलखू। विजदू पुत्र हसणल।

४ गिसन (किशन) ॥ मदन। एतान् प्रणमति नित्य ॥

इस लेख की दायीं ओर

१ हरसेण (हरषेण) पुत्र ए प

२ ॥ रुदेव ॥

प्रथम लेख की बायीं ओर

१ सप्तस्तु पुत्र मही

२ पाल ॥ केसव (केशव) ॥

ऊपरी भाग में

१ कवचद्र (कृष्णचन्द्र) ॥ लोहदेव ॥ महिथन ॥

२ सहदेव एतान् प्रणमति नित्य ॥

पाठान्तर

(प० गोविन्ददास कोठिया द्वारा पठित)

नीचे–स० १२१३ आषाढ २ सुदी सोमदिन गृहपत्यन्वये कोच्छल्लगोत्रे वाणपुरवास्तव्य तव सुमाहवा पुत्र हरिषेण उदइजलखू विअदू प्रणमन्ति नित्यम्।

ऊपर–हरषेण पुत्र हाडदेव पुत्र महीपाल गसवचन्द्र लाहदेव माहिश्चन्द्र सहदेव एते प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थ

सम्वत् १२१३ के आषाढ मास के सुदी पक्ष की द्वितीया सोमवार के दिन गृहपत्यन्वय के कोछल गोत्र में उत्पन्न वाणपुर नगर के निवासी शाह ऊदे के पौत्र और गाहव के पुत्र शाह माले, श्री हरषेण, विजयषेण, उद्दु, सलखू, रिजदू और रिजदू का पुत्र हसन तथा किशन और मदन ये सब तथा हरषेण के पुत्र महीपाल, केशव, कवचन्द्र, लोहदेव, महिथन, सहदेव तथा सातवाँ णणऊदेव ये सब इस वेदिका की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते है।

वेदिका परिचय

यह वेदिका १४ दल का एक कमल-पुष्प है। देशी पाषाण से निर्मित यह

वेदिका तीन कटनियो मे विभाजित है कटनियॉ कलाकृति पूर्ण है। चार पंक्ति का लेख ऊपरी पर पूर्व दिशाभिमुख उत्कीर्ण है। शेष तीनो लेख दूसरे खण्ड मे उत्कीर्ण है।

इसे वेदिका कहा जाता है किन्तु इसके ऊपरी भाग की रचना से यह पाण्डुक शिला प्रतीत होती है। इसके ऊपरी भाग मे पानी निकलने के बने हुए दो रास्ते इस बात के प्रतीक है कि इसके ऊपर जिन प्रतिमा का अभिषेक किया जाता था। द्वार-गन्धोदक-द्वार है। इस समय इस कमल पुष्पाकार पाण्डुकशिला पर एक सवत् १२०३ की जिन खड्गासन प्रतिमा विराजमान है।

(७०)

लेख संख्या ११/३१०

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १६)

मूलपाठ

१ *अवधपुरान्वये ठक्कुर स्री नन्भे सुत ठक्कुर नीनेक्स्य भार्या पाल्हणि नित्य* प्रणमति कर्मक्षयाय।

२ स० (सवत्) १२१४ फाल्गुण वदि ४ सोमे ॥

भावार्थ

अवधपुरान्वय के ठाकुर श्री नन्भे पुत्र ठाकुर नीनेक की पत्नी पाल्हणी ने कर्मक्षय हेतु सम्वत् १२१४ फाल्गुन वदि चतुर्थी सोमवार के दिन इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा मे देशी काले पाषाण से निर्मित है। काले चमकदार पालिश से सहित है। सिर, हाथ और पैर खण्डित है। आसन से सिर तक की अवगाहना १५ इच और फलक की चौडाई १६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। दो पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है।

(७१)

लेख संख्या ११/३११

नेमिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४)

मूलपाठ

सवतु (सवत्) १२१६ माघ सुदि १३ ष (ख) डिलवालान्वये साहु सुल्हण तस्य भार्या मामतेन कर्म्म ख (क्ष) यार्थ प्रतिमा कारापिता तस्य सुत महिपति प्रणमति नित्यं (नित्यम्)।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ के माघ मास मे शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन खण्डेलवाल अन्वय के शाह सुल्हण और उसकी पत्नी माम तथा पुत्र महीपति के द्वारा इस प्रतिमा का निर्माण कराया गया। वे प्रतिमा की प्रतिदिन वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर विहीन है। हाथ और बाये पैर का अँगूठा खण्डित है। श्रीवत्स यथा स्थान अकित है। आसन से गले तक की अवगाहना १७ इच और फलक की चौडाई २२ इच है। आसन की बायी ओर लाछन स्वरूप शख और लाछन के नीचे उक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(७२)

लेख संख्या ११/३१२

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३)

मूलपाठ

१ ॥ सवत् १२१६ माघ सुदि १३ सुक्रे (शुक्रे) जैसवालान्वये

२. सावु श्रीधर ॥ सत्यू--- भार्या सलखा तस्य पुत्र सावु

३ आत्रदेव ॥ तथा कमदेव ॥ सुत लखमदेव ॥ ता

४ ग्गेय देवचद्र ॥ वाल्हू ॥ साति (शान्ति) ॥ हालू ॥ प्रभृतय ( ) प्रण

५ मति नित्य ॥ मगल महाश्री · ॥ भार्या लेखमा (I)

भावार्थ

सम्वत् १२१६ के माघ मास मे शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी शुक्रवार के दिन जैसवाल अन्वय के शाह श्रीधर और उसकी सलखा तथा पुत्र शाह आमदेव तथा कामदेव और उसकी पत्नी लखमा के पुत्र लखमदेव और उसके बडे भाई देवचन्द्र, वाल्हू, शान्ति और हालू आदि मगल और महालक्ष्मी हेतु नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की आँखे, नाक, मुख, उपस्थ और दाये हाथ की अगुलियाँ खण्डित है। हाथो के नीचे चँमरवाही देव अकित है। इसकी अवगाहना ३३ इच और फलक की चौडाई १२ इच है। आसन २॥ इंच चौडी और एक फुट लम्बी है। मध्यवर्ती ७ इच स्थान मे ५ पक्ति का लेख और लेख की दोनो ओर आमने-सामने मुख किये लाछन

स्वरूप हरिण अंकित है। पालिश काला और चमकदार है।

(७३)

लेख संख्या ११/३१३

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १)

मूलपाठ

१ सम्वत् (सवत्) १२१६ माघ

२ सुदि १३ सु (शु) क्र दिने श्री

३ मत् कुटकान्वये पडित (पण्डित)

४ श्री मगलदेव तस्य सि (शि) स्य (ष्य)

५. भट्टारक पद्मदेव---यदे

६ वस तस्य----

७ ------

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श और ष के स्थान मे स तथा अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वारो के प्रयोग हुए है। श्री के स्थान मे स्री का व्यवहार उल्लेखनीय है।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ मे माघ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी शुक्रवार के दिन श्रीमद् कुटकान्वय के पण्डित श्री मगलदेव के शिष्य भट्टारक पद्मदेव की परम्परा के----श्रावक ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी नीले-काले पाषाण की ७० इच ऊँची और २८ इच चौडी शिला पर उत्कीर्ण की गयी है। खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा की नासिका, मुख, दाढी, हाथ और पैर की अगुलियाँ खण्डित है। प्रतिमा के पीछे भामण्डल है। केश घुँघराले है। दोनो ओर चँमरवाही देवो का अकन है। देव अलकृत है। आसन पर बायी ओर उपासक श्रावक की प्रतिमा का अकन है। दायी ओर भी उपासक प्रतिमा के होने का अनुमान होता है। आसन के ऊपरी भाग मे आमने-सामने मुख किये दो हरिण लाछन स्वरूप अकित है। इनके नीचे सात पक्ति मे लेख उत्कीर्ण है। इस लेख की अंतिम दोनो पंक्तियाँ अपठनीय है। यह अंश पूर्णत· घिस गया है। सम्प्रति प्रतिमा संग्रहालय की दहलान मे दीवाल के सहारे टिकी है।

(७४)

लेख संख्या ११/३१४

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४६)

मूलपाठ

१. संवत् १२१६ फालुगुण वदि ८ सोम दिने॥ सिद्धाती स्री सागरसेण (कमल पुष्प) अर्ज्जिका जयसिरि (जयश्री) सिषिणी रतनसिरि (श्री)। पूनसिरि (पूर्णश्री) प्रणमति नित्य।

२ जैसवालान्वये साधु वाहड। भार्या सिवदे। पुत्री साविति (सावित्रि)। गाविति (गायत्री)। पद्मा। मदना। प्रणमति नित्य॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श्री के लिए स्री और सिरि का, त्र के लिए त का और अनुनासिक न् और म् अनुस्वार के रूप मे व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ मे फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी सोमवार के दिन जैसवाल अन्वय के शाह वाहड उसकी पत्नी शिवदे और पुत्रियाँ सावित्री, गायत्री, पद्मा, मदना ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब और सिद्धान्ती श्री सागरसेन तथा आर्यिका जयश्री, सिषिणी रतनश्री और पूर्णश्री प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर और स्कन्ध से कुहनी तक के हाथ नहीं है। अगुलियॉ खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना १५॥ इच और आसन की लम्बाई १६ इच है। आसन के आदि मध्य और अत मे अष्ट दल कमल और इसकी दोनो ओर दो पक्ति मे पूर्वोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(७५)

लेख संख्या ११/३१५

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २१)

मूलपाठ

१ सवत् १२१६ माह (घ) सुदि १३ स्री (श्री) मत्कुटकान्वये पं (चिह्न) डित लष्मण (लक्ष्मण) देवस्तत्सिष्या (शिष्या) र्यदेव अर्ज्जिका लष्म (लक्ष्म)-

२. स्री (श्री) तव्वेल्लिका (सहेल्लिका) चारित्र स्री (श्री) तद् भ्राता लिवदेव ए

(चिह्न) ते स्रीमद्वर्द्धमानस्वामिनमहर्निसं (शं) प्रणमति (मन्ति) ॥

पाठ-टिप्पणी

दूसरी पंक्ति मे तवेल्लिका पढने में आता है किन्तु यह सहेल्लिका होना अधिक तर्कसगत प्रतीत होता है। सग्र० सख्या २५ के प्रतिमा लेख मे सहेल्लिका शब्द का ही व्यवहार हुआ है। इस लेख मे घ के लिए ह, श्री के स्थान मे स्री, क्ष को ष, श को स और न अनुनासिक को अनुस्वार के रूप मे लिखा गया है।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ माघ सुदि त्रयोदशी के दिन कुटक अन्वय के पंडित लक्ष्मणदेव (मुनि) के शिष्य आर्यदेव (मुनि) तथा आर्यिका लक्ष्मश्री उसकी सहेली चारित्र सेलिका श्री और उसका भाई लिम्वदेव ये श्रीमान वर्द्धमान स्वामी की अहर्निश वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। प्रतिमा का सिर नहीं है। अगुलियाँ भी खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना ३५ इच और आसन फलक की चौडाई ४५ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर सिह अकित है। दो पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है।

(७६)

लेख संख्या ११/३१६

अभिनन्दननाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३३)

मूलपाठ

१ सिद्धाती स्री सागरसेन। अर्ज्रिका जयसिरि तस्य चेल्ली रत्नसिरि

२ (सवत्) १२१६ माघ सुदि १३ सुक्रे जायसवालान्व (चिह्न) येसावु वाहड भार्या स्रि (श्री) देवि पुत्री साध्विति

३ पद्मा प्रणमति ॥

भावार्थ

सिद्धान्त के मर्मज्ञ (मुनि) सागरसेन आर्यिका जयश्री उसकी शिष्या रत्नश्री की उपस्थिति मे सम्वत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन जायसवाल अन्वय के शाह वाहड उनकी पत्नी श्रीदेवी और पुत्री साध्वी पद्मा प्रतिमा-प्रतिष्ठा कराकर प्रतिमा की वन्दना करते है। इन्ही सबके नामोल्लेख सग्र० सख्या ४६ के प्रतिमालेख मे भी हुए है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा की मात्र आसन शेष है। आसन पर लाछन स्वरूप बन्दर अकित है। तीन पक्ति का उक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है। अभिलेख फलक (आसन) १६ इच लम्बा और २ इंच चौडा है।

(७७)

लेख संख्या ११/३१७

विमलनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १०४)

मूलपाठ

१. ॥ सवतु १२१६ माघ सुदि
२. ---(१) ३ सुक्र दिने ॥ साधु आम्र
३ देव ॥ (चिह्न) ----
४. देवचद्र ॥ प्रणमति नित्य ॥

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ मे श के स्थान मे स और न् म् अनुनासिको के स्थान मे अनुस्वार का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन शाह आमदेव के एक पुत्र देवचन्द्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वह इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है। यह श्रावक जैसवाल था। इस सम्बन्ध मे द्रष्टव्य है सग्र० स० ३ का प्रतिमा लेख।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। सिर नहीं है। घुटनो से भी खण्डित है। हथेलियो में कमल पुष्प अंकित है। हाथों के नीचे दोनो ओर चँमरवाही देव सेवारत खड़े है। गले तक की अवगाहना २३ इच है। आसन की लम्बाई १० इच है। लाछन स्वरूप आसन पर सूकर और लाछन की दोनो ओर चार पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(७८)

लेख संख्या ११/३१८
अर्हन्त-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या १०२)

मूलपाठ

१ ------सवत् १२---(१६) माघ सुदि १३ सुक्रे ग्र (गृ) पत्यन्वये

२. लषल सुत साहु मामदे (व) ------(प्र)

३ णमति नी (नि) त्य ॥

पाठ-टिप्पणी

माघ सुदी १३ शुक्रवार का उल्लेख सम्वत् १२१६ के प्रतिमालेखो मे हुआ है। इस लेख के सम्वत् सूचक आरम्भिक दो अक १२ होने से तथा तिथि उल्लेख के आलोक मे इस लेख का सम्वत् १२१६ प्रमाणित होता है। इसमे श के स्थान मे स का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन आमदेव के किसी पुत्र ने प्रतिष्ठा कराई। वह नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित चिकने काले पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर तथा स्कन्ध भाग नहीं है। बॉया हाथ छिला हुआ है। हथेलियो मे कमल पुष्प का अकन है। हथेलियो के नीचे दोनो ओर चॅमरवाही देव सेवारत खडे है। आसन पर तीन पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह जगह-जगह से भग्न है। सम्वत् सूचक अतिम दो अक भी टूटे हुए है। लेख का अधिक भाग टूटा है।

(७६)

लेख संख्या ११/३१६
जैन शासनदेवी-लेख
(संग्रहालय संख्या ३१८)

मूलपाठ

१. अवधपुरान्वये साधु सीतल

२ ---भार्या गागा (गागी) एते नित्य प्रणमंति।

३ सवत् १२१६ आ-(षा) ढ सुदि ८ सोमे।

प्रतिमा-परिचय

देशी पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा के अवशिष्ट अश की ऊँचाई ८ इच

१०

और आसन की लम्बाई ६ इच है। इस देवी की दोनो ओर एक-एक उपासक प्रतिमा अकित है। प० गोविन्ददास कोठिया ने इस प्रतिमा को पद्मावती देवी की प्रतिमा होने का अनुमान लगाया है।

पाठ-टिप्पणी

सवत् १२१६ के अन्य अभिलेखो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस वर्ष यहॉ माघ मास, फाल्गुण मास और आषाढ मास मे प्रतिमा प्रतिष्ठाएँ कराई गई थी।

(८०)

लेख संख्या ११/३२०

चन्द्रप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १७)

मूलपाठ

१ सवत् १२२२ आषाढ वदि २ लल्हपहु---सुत

२ स्य पह-------(चिह्न) भार्या-----इति।

भावार्थ

सम्वत् १२२२ आषाढ वदी द्वितीया के दिन लल्हपहु के परिवार ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। काला चमकदार पालिश है। प्रतिमा का सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १२ इच और फलक की चौडाई १५ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप अर्द्धचन्द्र तथा पूर्वोक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(८१)

लेख संख्या ११/३२१

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २६)

मूलपाठ

ष (खं) डिलान्वये साधु धामदेव भार्या पल्हा पुत्र सालू भार्या (चिह्न) वस्ता ॥ सवत् १२२३ वैसाष (वैशाख) सुदि ८ प्रणमति न्यत्य (नित्यम्) ॥

भावार्थ

खण्डेलवालान्वय के शाह धामदेव उनकी पत्नी पल्हा पुत्र सालू और पुत्रवधू वस्ता इन सबने सम्वत् १२२३ वैशाख सुदी अष्टमी के दिन इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे स के स्थान मे श तथा ख के स्थान मे ष का व्यवहार हुआ है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मिन तथा काले चमकदार पालिश से सहित यह प्रतिमा सिर एव बाये हाथ की कुहनी के ऊपरी भाग से रहित है। दायीं काख का निचला भाग छिला है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। आसन से गले तक की अवगाहना १७ इच और फलक की चौडाई २३ इच है। एक पक्ति का आसन पर उपरोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(८२)

लेख संख्या ११/३२२

अर्हत-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८३७)

मूलपाठ

सवत् १२२५ --------

प्रतिमा-परिचय

काले चिकने पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा का केवल आसन शेष है। आसन पर केवल सवत् सूचक अक रह गये है।

(८३)

लेख संख्या ११/३२३

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ३५)

मूलपाठ

१ वरढ़ (सवत्) १२२५ जेष्ठ सुदि १५ गुरु दिने पडीत् श्री (पण्डित श्री) सी (शी)लदिवाकरनी असकेलिरेलि पद्मसिरि-------(रतनसिरि) ॥ प्रण

२. मति नित्य ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ज्येष्ठ के स्थान मे जेष्ठ, श्री के स्थान मे श्री, श के स्थान मे स और अनुनासिक वर्णो के स्थान मे अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२२५ ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार के दिन शील रूपी सूर्य से केलि करनेवाली विदुषी पद्मश्री और रतनश्री इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करती है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित चमकदार काले पालिश से सहित इस प्रतिमा की आसन तथा कुहनियो तक के मात्र हाथ शेष है। आसन पर पूछ उठाये लाछन स्वरूप सिह अकित है। उपरोक्त दो पक्ति का लेख भी उत्कीर्ण है।

(८४)
लेख संख्या ११/३२४
आदिनाथ-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या १६)

मूलपाठ

१ सवत् १२२८ फलग्र (फाल्गुन) सुदि ११ सोमे गोलापूर्व्वन्वे साहु पापे भार्या मल्हा सुत वील्हे छीलु साल्हु

२ स---सल भार्या मलम (मा) पुत्र माल्हु वालु (षालु) प्रणमति नित्य (नित्यम्) ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे ख के स्थान मे ष तथा न् अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२२८ फाल्गुन सुदि ११ सोमवार के दिन गोलापूर्वान्वय के शाह पापे उसकी पत्नी मल्हा, पुत्र वील्हे और पुत्रवधू तथा असिल और उसकी पत्नी मलमा तथा पुत्र माल्हु और खालु इन सबने यह प्रतिष्ठा कराई। ये सब इस प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। दाया हाथ और दोनो हाथों की हथेलियॉ खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इच और फलक की चौडाई २३ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। दो पंक्ति का पूर्वोक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है।

(८५)

लेख संख्या ११/३२५

नेमिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७७)

मूलपाठ

१ सवत् १२२८ फालुग्न (फाल्गुन) सुदि ११ जैसवालान्वये सावु देदू भ्राता पल्हू सुत वाल्ह स्सुत कुल्हाव्वी कलोहट

२ वाल्ह सुत असव प्रणमति (मन्ति) नित्य (नित्यम्) ॥

भावार्थ

सम्वत् १२२८ फाल्गुन सुदी एकादशी के दिन जैसवाल अन्वय के शाह देदू के भाई पन्हू के पौत्र और वाल्ह के पुत्र कुल्हा वाकलोहट और आसन ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य वन्दना करते है।

पाठान्तर

इस पाठ मे प० गोविन्ददास कोठिया ने तिथि मे द्वादशी का उल्लेख किया है। एकादशी होने की अधिक सभावना है। मुझे एकादशी ही समझ मे आयी है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित यह प्रतिमा सिर विहीन है। अगुलियाँ खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना २१ इच तथा फलक की चौडाई २३ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप शख तथा उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(८६)

लेख संख्या ११/३२६

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२३२)

मूलपाठ

१ सवत १२२८ फाल्गुन सुदि ११ सोमवासरे वलार्ग्गणान्वये पडित स्री जिनचद्र शिष्य भामचद्र अ—

२. र्ज्जिका गौरसी चेल्ली ललितसी तस्या चेल्लिकाग्रण स्रीपते सर्व्वपि प्रणमति नित्य (नित्यम्) ॥

भावार्थ

संवत् १२२८ फाल्गुन सुदी ११ सोमवार को वलार्गण अन्वय के पण्डित श्री जिनचंद्र के शिष्य भामचद्र और आर्यिका गौरसी की शिष्या ललितसी की

अग्रणी शिष्या सभी जिनेन्द्रो को नित्य प्रणाम करती हैं।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा खण्डित है। शेष अश की ऊँचाई ५ इच तथा फलक की चौडाई १६ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप सिह तथा उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(८७)

लेख संख्या ११/३२७

पंच अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १७८)

मूलपाठ

१ सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु

२ क्रे साधु वाल्हण------प्र-

३ णमती (नित्य)।

पाठ-टिप्पणी

लेख मे सरेफ वर्ण द्वित्व रूप मे और श के स्थान मे स का व्यवहार हुआ है।

प्रतिमा-परिचय

देशी मठमैले पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा खण्डित है। इस फलक मे ५ प्रतिमाएँ अकित की गयी थी। तीन प्रतिमाएँ खड्गासन मुद्रा मे और दो पद्मासन मुद्रा मे। मूलनायक प्रतिमा का सिर नहीं है। इसकी दोनो ओर एक-एक प्रतिमा अकित है। पद्मासनस्थ एक-एक प्रतिमा ऊपरी भाग मे अकित रही ज्ञात होती है। खण्डित अवस्था मे शेष इस फलक की अवगाहना ६ ७ इच और आसन की लम्बाई ७ इच है। ये प्रतिमाएँ पच बाल यत्रियो की ज्ञात होती है।

(८८)

लेख संख्या ११/३२८

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २३६/८७६)

मूलपाठ

१ समत् (सवत्) १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे)

२ गोल्लापूर्व्वान्वये-------(साहु राल्हण तस्य भार्या------प्रणमति)।

प्रतिमा-परिचय

देशी लाल पाषाण से यह प्रतिमा खड्गासन मुद्रा मे निर्मित है। कटि

प्रदेश से नीचे का भाग ही शेष है ऊपर का भाग नहीं है। शेष भाग की अवगाहना २७ इच और आसन की लम्बाई १३ इच है। दोनो ओर एक-एक चवरवाही देव सेवारत खडे हुए अकित है। आसन पर उक्त दो पक्ति का लेख और लाछन स्वरूप हरिण उत्कीर्ण है।

(८६)

लेख संख्या ११/३२६

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४१)

मूलपाठ

॥ सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे गोलाराडान्वये साधु स्री देवचद्र सुत दामर भार्या त्रिपिली प्रणमति नित्य (नित्यम्) ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श के स्थान मे स तथा न् अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तृतीया शुक्रवार के दिन गोलाराड अन्वय के शाह श्री देवचन्द्र के पुत्र दामर की पत्नी त्रिपिली (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से निमित पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा काले चमकदार पालिश से सहित है। इस प्रतिमा का सिर और हाथो की अगुलियॉ खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना १४॥ इंच और फलक की चौडाई १७ इच है। आसन पर एक पक्ति मे उक्त लेख उत्कीर्ण है। लाछन नहीं है।

(६०)

लेख संख्या ११/३३०

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ४५)

मूलपाठ

सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे गोलापूर्व्वान्वये साधु जसर्ह (यशाह) पुत्र ऊदे तथा वील्हण रतनाधर एते श्री नेमिनाथ नित्य प्रणमति ॥ मगल महाश्री ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे श के स्थान में स का, सरेफ वर्ण मे द्वित्व वर्ण का और म् अनुनासिक का अनुस्वार के रूप मे प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन गोलापूर्व शाह यशाई के पुत्र ऊदे, वील्हण और रतनाधर ने नेमिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चिकने पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर तथा स्कन्ध भाग से कुहनी के नीचे तक दोनो हाथ नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १८॥ इच और फलक की चौडाई २३ इच है। लाछन अस्पष्ट है। आसन पर उपरोक्त एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(६१)

लेख संख्या ११/३३१

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५०)

मूलपाठ

॥ संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे ॥ गोलापूर्व्वान्वये साधु वाल्हे भार्या मदना वेटी रतना श्री रिषभनाथ प्रणमति नित्य ॥ कारापक पदराजण (इति)।

पाठ टिप्पणी

इसमे सरेफ वर्ण द्वित्व, श के स्थान मे स, अनुनासिक का अनुस्वार और ऋ को रि का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन गोलापूर्व अन्वय के शाह वाल्हे उनकी पत्नी मदना और बेटी रतना इन सबने ऋषभनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई तथा ये सब प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है इस प्रतिमा का निर्माता पहराजन शिल्पी था।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर और कुहनी तक का हाथो का भाग नहीं है। अगुलियाँ छिल गयी है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इच और फलक की चौडाई १६॥ इच है। आसन के मध्य में लाछन स्वरूप वृषभ तथा एक पक्ति मे उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६२)

लेख सख्या ११/३३२

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १०)

मूलपाठ

१ सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु) क्रे श्री वीरदेव इत्यासीत् खदिन्वान्वय (खण्डेलान्वय) - भास्कर । प्रतिष्ठाचार्य (व) (चिह्न) र्यो (ऽ) भूत्तत्पुत्रो उपमक्षम · ॥ कमलानिवासवसति· कमलदलाक्ष: प्रस-

२ न्न मुखकमल :। बुध-कमल-कमलवधुर्व्विकलक कमलदेव, (इ) ति ॥ श्री (श्री) वीरवर्द्धमानस्य विव (बिम्बं) तत्पुण्यवृद्धये। कारित-

३ केशवेनेद तत्पुत्रेणातिनिर्म्मलम् ॥ साधु श्री मामटस्यापि (ऽपि) पुत्रो देघहराभिध·। तेनापि कारित चैत्य तर्वदिणन्न वेतसा ॥

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे सरेफ वर्ण द्वित्व, श के स्थान मे 'स', और अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार के प्रयोग हुए है। अवग्रह का प्रयोग नहीं हुआ है।

छन्द परिचय

इस पाठ के प्रथम श्लोक मे अनुष्टुप, दूसरे श्लोक मे आर्या, तीसरे और चौथे श्लोको मे अनुष्टुप छन्द है।

भावार्थ

खण्डेलवालान्वय मे सूर्य स्वरूप श्री वीरदेव थे। उनके एक कमलदेव नामक पुत्र अनुपमेय प्रतिष्ठाचार्य हुआ। वह लक्ष्मी का निवास था, उसकी आँखे कमल पत्र के समान थी, मुख खिले हुए कमल के समान प्रसन्न था, पण्डित रूपी कमलो को विकसित करने के लिए वह सूर्य स्वरूप था, वह कलक रहित था।

उसके पुत्र का नाम केशव था। इसने पुण्य वृद्धि के लिए श्री वीरवर्द्धमान की अति निर्मल प्रतिमा का निर्माण कराया।

शाह श्री मामट के धर्मात्मा पुत्र देघहर ने भी बेत या नरसल वृक्ष के निकट इन्ही देव की प्रतिमा बनवाई। यह प्रतिष्ठा सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन हुई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले २ फुट चौडे शिलाफलक पर निर्मित पद्मासन मुद्रा मे यह प्रतिमा सिर विहीन है। आसन से ग्रीवा तक की अवगाहना १६॥ इच है। हथेलियों और तलवो पर कमल पुष्प अकित है। आसन पर लाछन स्वरूप सिंह

तथा तीन पक्ति का उपरोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६३)

लेख संख्या ११/३३३

सुमतिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६८)

मूलपाठ

१ सवत् १२३७ आग्रहण सुदि ३ सुक्रे ष (खं) डिल्लवालान्वये साहु वाल्हण भार्यावस्ता

२ सुत लाषू विव्वू आसवन साढू प्रणमति नित्य

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ मे ख के स्थान मे ष तथा श के स्थान मे स का तथा अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन खण्डेलवाल अन्वय के शाह वाल्हण उसकी पत्नी वस्ता पुत्र लाखू, पित्तू, आसवन और सादू इन सबने प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। हथेलियाँ छिल गयी है। आसन पर लाछन स्वरूप चक्रवाक पक्षी तथा दो पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६४)

लेख संख्या ११/३३४

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २३)

मूलपाठ

१. ॥ संवत् १२३७ मार्गसिरु सुदि ३ सु (शु) क्रे म (अ) वध (चिह्न) पुरे (रा) न्वए (ये) साधु ताल्हण। साधु सी (शी) ले उल्के साधु

२. जाल्लू सि (शि) वराज कीतू वाल्हे ॥ सर्व्व श्रेष्ठी (श्रेष्ठी) (चिह्न) प्रसाद भवतु कसित (कारित) जयतपुरे (जैतपुरे) प्रणमति नित (नित्यम्)।

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ में श के स्थान में स, श्री के स्थान श्री और अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन अवधपुरान्वय के शाह ताल्हण शाह शीले और उल्के, शाह जाल्लू, शिवराज, कीतू और वाल्हे जैतपुर निवासियो ने सभी श्रेष्ठियो की प्रसन्नता के लिए इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रतिमा की नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का सिर एव कुहनी के ऊपर का हाथ नहीं है। पद्मासन मुद्रा मे आसन से ग्रीवा तक की अवगाहना १४ इच और फलक की चौडाई १८ इंच है। आसन पर लाछन स्वरूप वृषभ तथा दो पक्ति का उपरोक्त लेख उत्कीर्ण है।

नगर-जैतपुर

इस नगर के निवासियो द्वारा अहार क्षेत्र मे प्रतिमा प्रतिष्ठा कराया जाना इस तथ्य का प्रमाण है कि यह अहार क्षेत्र का निकटवर्ती कोई नगर है। सम्वत् १२३७ मे यहाँ समृद्ध अवधपुरान्वयी जैनो का आवास था।

(९५)

लेख संख्या ११/३३५

अभिनन्दननाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ८७९)

मूलपाठ

१ साहु भीमदेव भार्या (प० गोविन्ददास कोठिया द्वारा पठित)

२ श्री चद्र---- (वती) सवत् १२३७

३ मार्ग्गसिर सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे)।

पाठ-टिप्पणी

इस पाठ मे अनुनासिक के स्थान मे अनुस्वार, सरेफ वर्ण द्वित्व रूप मे और श के स्थान मे स के प्रयोग हुए है।

भावार्थ

शाह भीमदेव और उनकी पत्नी चन्द्रवती ने सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी मठमैले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित्त इस प्रतिमा के केवल चरण शेष है। दोनो ओर उपासको की करबद्ध प्रतिमाएँ है। लाछन स्वरूप आसन पर बन्दर तथा तीन पंक्ति का उपरोक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६६)

लेख संख्या ११/३३६

अर्हन्त-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २०७)

मूलपाठ

१. --------

२ श्री चद्रवान्----सवत् १२३७

३. मार्ग्गसिर सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे)।

भावार्थ

इस प्रतिमा की सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तृतीया शुक्रवार के दिन प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिमा-परिचय

देशी मटियाले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा के मात्र चरण शेष है। यह अवशेष ६ इच ऊँचा और १० इच चौडा है। आसन पर उपरोक्त तीन पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(६७)

लेख संख्या ११/३३७

शान्तिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८)

मूलपाठ

१ सवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे) ग्रह-(गृह)-(प)

२ त्यान्वये साधु देऊ भार्या लखमि------

३. नित्य प्रणमति ॥

भावार्थ

सम्वत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार के दिन गृहपत्यान्वय के शाह देऊ और उसकी पत्नी लखमी ने प्रतिष्ठा कराई। ये उसे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी लाल पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा के चरण मात्र शेष है। लांछन स्वरूप हरिण अंकित है। इनके नीचे आसन पर तीन पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(६८)

लेख संख्या ११/३३८
मुनिसुव्रत-प्रतिमालेख
(संग्रहालय संख्या ४८)

मूलपाठ

१ स (सवत्) १२८८ माघ सुदि १३ गुरौ पुष्य नक्षत्रे

२ गोलापूर्व्वम साधु रासल सुत साढु (चिह्न) ग(गृ) हपति वशे (वशे) साधु भामदेव तींगरमल ॥ सुत प० (पण्डित) स्री (श्री)

३ मालधन भार्या कपा सतु (सुत) बिकत सुत सावु (चिह्न) सीलण हाणरस्तत्पुत्र जनपति लाल चाहड

४ वामदेव तथा पाल्हू पुत्र नागदेव पलपति (चिह्न) चाहड प्रणमति नेत्य (नित्यं) मदन सागरतिलक

५ नित्य मदनसागर तिलक।

पाठान्तर

चौथी पक्ति के अत मे प० गोविन्ददास कोठिया ने नित्य मदनसागरतिलक के स्थान मे नटे मदनसागरनिर्मलम् पढा है।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह रासल के पुत्र साढ़ु, गृहपति वश के शाह भामदेव, हीगरमल के पुत्र पडित श्री मालधन उनकी पत्नी कम्पा पुत्र निकता और पौत्र शाह शीलण, तथा हाणर और उसके पुत्र जनपति, ज्ञानचाहड, वामदेव एवं पाल्हू का पुत्र नागदेव ये चारो मदनसागरपुर मे तिलक स्वरूप इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा का धड़ नहीं है। हथेलियो से रहित कुहनियो के नीचे के हाथ शेष है। बाया पैर भी खण्डित है। आसन १६ इच लम्बी है। आसन पर लाछन स्वरूप कछुआ तथा ५ पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

विशेष—श्री प० बलभद्र जैन ने 'मदनसागरतिलक' पद भगवान शान्तिनाथ के लिए प्रयुक्त बताया है। उनका यह कहना क्षेत्र की दृष्टि से तो तर्कसंगत है किन्तु प्रस्तुत लेख मे मदनसागरतिलक सज्ञा उसी प्रतिमा को दी गयी है जिस प्रतिमा की आसन पर यह लेख अकित है।

श्री जैन ने लिपि के आधार से इस लेख के सम्वत् को १५८८ बताया है।[1] लेख में सरेफ वर्ण को हुआ द्वित्व रूप, स्त्री का व्यवहार अनुनासिको के अनुस्वार के रूप मे प्रयोग लिपि की प्राचीनता प्रकट करते है। लेख गहराई से देखने पर सम्वत् स्पष्ट रूप से १२८८ पढने मे आता है सम्वत् ५८८ नही। श्री जैन को यह शंका सम्वत् के प्रथम दो अको के मिले हुए होने से उदित हुई है। यह सम्वत् १२८८ है। श्री प० गोविन्ददास कोठिया ने भी इसे सम्वत् १२८८ ही पढा है।

(९९)

लेख संख्या ११/३३९

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५२१/१९३)

मूलपाठ

१ सवत् १३२० फाल्गुण सुदि ---- (१३) सोमवासरे मलयर्कति
२ ------त्ये साधु मदन्ह (मदन) भार्या रोहिणि सुत धू- (ने)
३. भार्या देव सुत माधेव मावेव भार्या वाछिणि प्रणमति
४ नित्य : (इति) ॥

प्रतिमा-परिचय

देशी पाषाण की पद्मासनस्थ इस प्रतिमा का टेहुनी से नीचे का भाग मात्र शेष है। आसन पर उक्त चार पक्ति का लेख तथा लाछन स्वरूप वृषभ अकित है। प० गोविन्ददास कोठिया ने हरिण अकित बताया है।

(१००)

लेख संख्या ११/३४०

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ५६)

मूलपाठ

१. सवत् १३२० फाल्गुण सुदि १२ गरौ (गुरौ) स्री वार्य -----स्रेष्ठि महेस तत्सुत----सातिणि------गगे----(देव) भार्या देवा
२ सोमदेव उद----(य) प्रणमति (मन्ति) ॥

पाठान्तर

संवत् १३२० फागुन सुदी १२ सनौ------सुत षडगण भार्या शान्तिणी सुत गांगदेव-सोमदेव-उदय-गोरद प्रणमन्ति।

---

१. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग ३, वही, पृ० २१७।

भावार्थ

सम्वत् १३२० फाल्गुन सुदि १२ रविवार के दिन श्रेष्ठी महेश की पुत्रवधू शान्तिणी और पौत्र गगिदेव तथा उसकी पत्नी देवा और सोमदेव, उदय आदि प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का नाभि से ऊपर का भाग नहीं है। हाथ, कुहनी से नीचे के है। आसन २३ इच लम्बी है। लाछन स्वरूप आसन पर वृषभ अकित है। दो पंक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है।

(१०१)

लेख संख्या ११/३४१

पद्मप्रभ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८क)

मूलपाठ

१ सवत् १५४८ वैसष सुदि ३

२ प्रणमति नित्य।

प्रतिमा-परिचय

सगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का धड नहीं है। इस अवशेष की ऊँचाई १॥ इच और आसन की लम्बाई ३॥ इच है। आसन पर लाछन स्वरूप कमल तथा २ पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

तिथि विहीन प्रतिमालेख

(१०२)

लेख संख्या ११/३४२

अजितनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २१७)

मूलपाठ

सावु देवचद्र प्रणमति नित्य (नित्यम्)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख मे अनुनासिक म् अनुस्वार के रूप मे प्रयुक्त है।

भावार्थ

शाह देवचद्र प्रतिमा प्रतिष्ठा करा करके नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा के घुटनो से

ऊपर का अंश नहीं है। दोनो ओर चँमरवाही इन्द्र सेवारत खडे है। आसन पर लाछन स्वरूप हाथी अकित है। एक पंक्ति का उक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है।

(१०३)

लेख संख्या ११/३४३

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या २२)

मूलपाठ

१ ठक्कुर स्री (श्री) देद पु (चिह्न) त (त्र) ठक्कुर पद्मसिह तस्य

२ भार्या-(अ) सके (चिह्न) लि एते नित्य प्रणाम

३ ति

भावार्थ

ठक्कुर श्री देव उनके पुत्र ठक्कुर पद्मसिंह और पुत्रवधू असकेली ये नित्य वन्दना करते है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले ६ इच चौड़े पाषाण पर निर्मित इन तीन प्रतिमाओ के चरण मात्र शेष है। आसन के मध्य मे लाछन स्वरूप सिह अकित है। तीन पक्ति का उक्त लेख भी आसन पर उत्कीर्ण है।

(१०४)

लेख संख्या ११/३४४

महावीर-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ७६)

मूलपाठ

१ ग्र- (गृह) पत्यन्वये साधु कुल ---------- (धर भार्या)

२. शुद्ध दित्रा कर्मक्षयाय।

भावार्थ

गृहपत्यन्चय के शाह कुलधर और उनकी पत्नी शुद्धदिता ने कर्मक्षय हेतु प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित काले चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा का एक चरण मात्र शेष है। लांछन स्वरूप आसन पर पूछ उठाये सिंह अकित है। उक्त लेख भी उत्कीर्ण है। लेख अपूर्ण है।

(१०५)

लेख संख्या ११/३४५

अजितनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या ६८)

मूलपाठ

१ साधु लेने पगे

२ नित्य प्रणमति।

भावार्थ

शाह लेने पगे प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा मे निर्मित इस प्रतिमा का सिर और मुख छिला हुआ है। बाये हाथ की हथेली नहीं है। दाये हाथ मे पुष्प का अकन है। हाथो के नीचे दोनो ओर अलकृत चँमरवाही देव सेवारत खडे है। आसन पर लाछन स्वरूप हाथी तथा उक्त दो पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(१०६)

लेख संख्या ११/३४६

आदिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १७०)

मूलपाठ

----- परवाडान्वये साधु पानस तार्क जूविणि सुत राढ रिसभार्या जमकलि-----

भावार्थ

शाह पानस और पत्नी गर्क पुत्र राढ ऋषि तथा आर्या जमकली ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से निर्मित चिकने काले पालिश से सहित इस प्रतिमा की मात्र आसन शेष है। अवशिष्ट अश ४ इच ऊँचा है। लेख फलक ८॥ इच लम्बा है। आसन पर लाछन स्वरूप बैल तथा एक पक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

(१०७)

लेख संख्या ११/३४७

नेमिनाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८ ब)

मूलपाठ

सावु देवराज

भावार्थ

शाह देवराज ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा-परिचय

देशी काले पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा की शेष आसन की लम्बाई १८ इंच तथा ऊँचाई ६ इच है। लाछन स्वरूप आसन पर शख तथा एक पक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

(१०८)

लेख संख्या ११/३४८

अभिनन्दननाथ-प्रतिमालेख

(संग्रहालय संख्या १२२८ द)

मूलपाठ

सवत् ------(१२०३) माघ वदी १३ सोमे गोल्लापूर्व्वान्वये साधु सी आल्ह विल्हण प्रणमति नीत्य (नित्यम्)।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख का पक्ष लगता है अशुद्ध पढा गया है। वह वदी न होकर सुदी होना चाहिए। सम्वत् १२०३ मे माघ सुदी त्रयोदशी के दिन ही प्रतिष्ठा हुई थी, अत· इस लेख का सम्वत् १२०३ निश्चित होता है।

भावार्थ

सम्वत् १२०३ माघ सुदी १३ सोमवार के दिन गोलापूर्वान्वय के शाह श्री आल्ह और विल्हण ने प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा परिचय

देशी काले-नीले पाषाण से निर्मित इस प्रतिमा की आसन मात्र शेष है। इस अश की अवगाहना १३ इच और चौडाई २२ इच है। लाञ्छन स्वरूप आसन घोडा तथा एक पक्ति का उक्त लेख भी उत्कीर्ण है।

चरण-लेख

अहार क्षेत्र मे मात्र दो स्थल है जहाँ चरण स्थापित है। प्रथम स्थली है पच पहाड़ी और दूसरी है भोंयरा। सर्वप्रथम यहाँ 'पच पहाड़ी' पर स्थापित

चरणो का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

पंच-पहाड़ी

अहार क्षेत्र की दक्षिण दिशा मे समीप ही पहाड विद्यमान है। यहाँ पॉच पहाडियाँ पास-पास होने के कारण इसे 'पच पहाडी' नाम से जाना जाता है। इन पहाडियों से अनेक खण्डित मूर्तियाँ प्राप्त हुई है जो सम्प्रति स्थानीय सग्रहालय मे सग्रहीत है। इन खण्डित प्रतिमाओ के साक्ष्य मे कहा जा सकता है कि अतीत मे यहाँ अनेक जैन मन्दिर थे जो कालान्तर मे ध्वस्त हो गये तथा मन्दिरों की सामग्री अन्यत्र ले जायी गयी। अपने आराध्य न होने से इन प्रतिमाओ को यही छोड दिया गया। इस पहाडी के पत्थर मठमैले है। ज्ञात होता है कि अतीत मे यहाँ के पत्थर से प्रतिमाओ का निर्माण किया जाता था। अहार सग्रहालय की प्रतिमाएँ इसी पहाड के पत्थर से निर्मित ज्ञात होती है।

इस पहाडी तक पहुँचने के लिए क्षेत्र के पास से एक कच्चा रास्ता है। बीच मे एक नाला मिलता है जिसे 'लिडा' नाला कहा जाता है। बताया जाता है कि अतीत मे 'लडिया'-परिवार (मूर्ति निर्माता) यहा रहते थे। नाले का लिडा नाम लडिया का अपभ्रश नाम होना भी सभावित है।

पच पहाडियो के पास ही हाथी पडाव के नाम से प्रसिद्ध हथनूपुर, कोटो-भाटो, टाडे की टोरिया, सिद्धो की टोरिया और खनवारा पहाड आदि नाम बताये जाते है। सभवत यहाँ कोई पत्थर खदान थी जिसका पत्थर मूर्ति-निर्माण के काम आता रहा है। इस पहाड के इस नाम से विश्रुत होने मे यही कारण ज्ञात होता है। सिद्धो की टोरिया साधको द्वारा सिद्ध पद प्राप्त किये जाने का प्रतीक है। यहाँ एक गुफा भी है जिसे सिद्धो की गुफा कहा जाता है। हो सकता है साधक इसी गुफा मे साधनारत रहे हो। हथनूपुर के पूर्व मे झालर टोरिया नाम से प्रसिद्ध एक पहाडी है जहॉ प्राचीन एक गुफा और दो कुण्ड बने हुए है। पहाडी के नीचे एक चार खम्भो की मढिया है जिसे सिद्धो की मढिया कहा जाता है।

इस पहाडी पर भिन्न-भिन्न महापुरुषो के छह चरण स्थापित किये गये है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

लेख संख्या १२/३४६

श्री मदनकुमार केवली-चरण

१ श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्। जीयात्

२. त्रैलोक्य नाथस्य, शासन जिनशासनम्॥

३. श्री वीर निर्वाणाब्दे २४६४ विक्रम सवत् २०२४ मार्गशीर्ष

४. शुक्ल पौर्णिमा शनिवासरे रोहिणी नक्षत्रे मूलसघे-बलात्कारगणे

५ सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये श्री १०८ मुनि नेमिसागर
६ जी उपदेशात् श्रीमान् दि० जैनधर्म प्रतिपालक गुलाबचद्रात्मज
७. पन्नालालस्य धर्मभार्य्या सौभाग्यवती ब्र० प० रेशमबाई जी जैसवा-
८ ल पिडावा (राजस्थान) वासि इन्दौर (मध्यप्रदेश) टीकमगढ
९. मण्डलान्तर्गते श्री सिद्ध क्षेत्र अहार पर्वतोपरि श्री मदन-
१० कुमार केवलिन· निर्वाणस्थले गुमिटी चरणपादुकाप्रतिष्ठा--
११. पिता नित्य प्रणमति।

प० बारेलाल जैन राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

देशी पाषाण से निर्मित ये चरण २१ इच आयताकार एक चौकी पर स्थापित किये गये है। चरणो की लम्बाई १० इच है तथा चरणो का अग्रभाग ४ इच एव पृष्ठ भाग ३ इच चौडा है।

मढिया-परिचय

जिस मढिया मे ये चरण विराजमान है वह मढिया चबूतरे पर निर्मित की गयी है। चबूतरे की ऊँचाई १ १० सेटीमीटर है। इस चबूतरे से छाजा तक मढिया की ऊँचाई २ ८ सेटीमीटर तथा छाजा से गुमटी तक की ऊँचाई २ ७० सेटीमीटर है। मढिया की बाह्य चौडाई १ ८४ सेटीमीटर तथा लम्बाई १ ८७ सेंटीमीटर है।

मार्ग

इस मढिया तक पहुँचने के लिए सीढियॉ बनाई गयी है। ये सीढियॉ २ २० सेटीमीटर चौडी है। सीढियो की दोनो ओर ४४ सेटीमीटर चौडी पत्थरो की दीवाल है। इस मढिया के लिए ४५ सीढियॉ चढनी पडती है।

लेख संख्या १२/३५०

विष्कम्बल-केवली-चरण-लेख

१ श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
२ जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिनशासनम्॥
३ श्री वीर निर्वाणाब्दे २४६४ विक्रम सवत् २०२४ मार्ग--
४ शीर्ष शुक्ल पौर्णिमाया शनिवासरे रोहिणी नक्षत्रे श्री--
५ मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुदकु--
६ दाचार्याम्नाये श्री १०८ मुनि नेमिसागरजी धर्मोपदे--
७ शात् दि० जैनधर्म प्रतिपालक . श्रीमान् गुलाबचद्रा--
८ त्मज गेदानाल सौगानी (खण्डेलवाल जैन) निवासी
९ असावदा (वडनगर) उज्जैन (मध्यप्रदेश) टीकमगढ

१०. मण्डलान्तर्गते श्री सिद्ध क्षेत्र अहार पर्वतोपरि
११. श्री विष्कवल केवलिन निर्वाणस्थले गुमटी चरण—
१२. पादुका प्रतिष्ठापिता नित्य प्रणमति।

प० बारेलाल राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

देशी पाषाण से निर्मित ये चरण १० इच लम्बे, सामने ४॥ इच और पीछे से ३ इच चौडे है। जिस चौकी पर ये चरण विराजमान है वह चौकी २३ इच लम्बी और २० इच चौडी है।

मढिया परिचय

ये चरण जिस मढिया मे विराजमान है वह १८८ सेटीमीटर चौडी और १८५ सेटीमीटर लम्बी है। यह ७० सेटीमीटर ऊँचे एक चबूतरे पर बनी है। चबूतरे से छाजा तक की ऊँचाई २६ सेटीमीटर तथा छाजा से गुमटी तक की ऊँचाई २२७ सेटीमीटर है।

मार्ग

प्रथम मढिया से यहॉ पहुॅचने के लिए छह सीढियॉ बनाई गई है। इन सीढियो से नीचे उतरने के पश्चात् तीन सीढियॉ चढकर यहॉ पहुॅचते है।

लेख संख्या १२/३५१

श्री शान्तिनाथ-जिन-चरण-लेख

१ इस मढिया का निर्माण
२ श्री सि० पन्नालाल जी के सुपुत्र
३ श्री फूलचन्द्र हुकमचन्द्र जी जतारा
४ (टीकमगढ) ने १००१ रुपया देकर निर्माण
५. कराया। श्री पच पहाडी सिद्धक्षेत्र
६ अहार (टीकमगढ) स० २०२५ (२०२४)
७ म० प्र०

प० बारेलाल राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

ये चरण ६॥ इच लम्बे और सामने से २॥ इच तथा पृष्ठ भाग में १॥ इच चौड़े है। चरण चौकी आयताकार १२ इंच है।

मढिया परिचय

यह मढिया १६० सेंटीमीटर लम्बी और १.८७ सेंटीमीटर चौडी है। जिस चबूतरे पर निर्मित है उसकी ऊँचाई १४२ सेटीमीटर है। चबूतरे से छाजा तक

की ऊँचाई २ १५ सेटीमीटर तथा छाजा से गुमटी तक की ऊँचाई २.८५ सेटीमीटर है।

मार्ग

दूसरी मढिया से ५ सीढिया उतर कर यहाँ पहुंचते है।

लेख संख्या १२/३५२

श्री मल्लिनाथ-चरण-लेख

मूलपाठ

१ श्री वीर निर्वाणाब्दे २४६४ विक्रम सवत् २०२५ (२०२४) मार्ग—
२ शीर्ष शुक्ला पौर्णिमाया शनिवासरे मूलसघे सरस्वती—
३ गच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्याम्नाये श्री १०८ मुनि—
४ नेमिसागर जी उपदेशात् दि० जैनधर्मप्रतिपालक गोला—
५ पूर्वान्वये श्रीमान् सेठ हीरालालात्मज नाथूराम अनदी—
६ लाल हटा (टीकमगढ म० प्र०) श्री अहार सिद्धक्षेत्र पर्वतोपरि
७ गुमटी चरणपादुका प्रतिष्ठापिता नित्य प्रणमति।
पं० बारेलाल राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित ये चरण ७ इच लम्ब, सामने से ३ इच और पीछे से १॥ इच चौडे है। चरण चौकी आयतकार १२ इच है।

मढिया परिचय

यह मढिया बाह्य भाग से १ ८४ सेटीमीटर चौडी और १ ८७ सेटीमीटर लम्बी है। जिस चबूतरे पर निर्मित है उसकी ऊँचाई १ ०४ सेटीमीटर है। इस चबूतरे से छाजा तक की ऊँचाई २ ०८ सेटीमीटर तथा छाजा से गुमटी तक की ऊँचाई ३ ०५ सेटीमीटर है।

मार्ग

तीसरी मढिया से छह सीढियाँ चढकर तथा तीन सीढियाँ उतरकर यहाँ पहुँचते है। इस मढिया के पीछे चार सीढिया नीचे उतरने के लिए निर्मित है।

लेख संख्या १२/३५३

आदिनाथ जिन-चरण-लेख

मूलपाठ

१ श्री वीर निर्वाणाब्दे २४६४ विक्रम सवत् २०२५ (२०२४) मार्ग—
२ शीर्ष शुक्ल पक्षे पौर्णिमाया शनिवासरे मूलसघे
३ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदाचार्याम्नाये
४ श्री १०८ मुनि नेमिसागर जी उपदेशात् दि० जैनधर्मप्रति—

५ पालक गोलापूर्वान्वये श्रीमान् स० सि० मोतीला—
६ लात्मज हरिप्रसाद मौजीलाल लार बुजरक (टीकमगढ)
७. (म० प्र०) अहार सिद्धक्षेत्र पर्वतोपरि गुमटीचरणपादुका
८ प्रतिष्ठापिता नित्य प्रणमति।
पं० बारेलाल राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

ये चरण सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित है। इनकी लम्बाई ७ इच तथा चौडाई सामने की २॥ इच एव पीछे की १॥ इच है। चरण चौकी आयताकार १२ इच है।

मढिया परिचय

मढिया की बाह्य लम्बाई १ ८५ सेटीमीटर तथा चौडाई १ ८७ सेटीमीटर है। जिस चबूतरे पर मढिया निर्मित है उसकी ऊँचाई ८५ सेटीमीटर है। इस चबूतरे से छाजा तक मढिया की ऊँचाई २ १७ सेटीमीटर तथा छाजा से गुमटी तक की ऊँचाई २ ८० सेटीमीटर है।

मार्ग

चौथी मढिया से उतर कर आने के पश्चात् यहाँ पहुँचने के लिए तीन सीढियाँ चढनी पडती है। पीछे नीचे उतरने के लिए छह सीढियाँ बनी है।

लेख संख्या १२/३५४
महावीर जिन-चरण-लेख

मूलपाठ

१ श्री वीर निर्वाणाब्दे २४६४ विक्रम सवत् २०२५ (२०२४) मार्ग-
२. शीर्ष शुक्ला पौर्णिमाया शनिवासरे मूलसघे सरस्वतीगच्छे
३ वलात्कारगणे कुदकुदाचार्याम्नाये श्री १०८ मुनि नेमिसा-
४ गर जी उपदेशात् दि० जैनधर्मप्रतिपालक गोलापूर्वान्वये
५. श्रीमती सवाई सेठानी ललिताबाई जी तस्य दत्तकपुत्र श्री
६ धनप्रसाद जी जैन वैसा (टीकमगढ म० प्र०) श्री अहार सिद्धक्षेत्र
७ पर्वतोपरि गुमटी चरणपादुका प्रतिष्ठापिता नित्य प्रणमति।
पं० बारेलाल जैन राजवैद्य मत्री प्र० का० स० अहार क्षेत्र

चरण-परिचय

ये चरण सफेद सगमरमर पाषाण से निर्मित है। इनकी लम्बाई ७ इच तथा चौड़ाई सामने की २॥ इच तथा एडियो की १॥ इंच है। चरण चौकी आयताकार १२ इच है।

मढिया परिचय

यह मढिया एक चबूतरे पर निर्मित है। चबूतरे की ऊँचाई ७० सेंटीमीटर है। यहाँ से मढिया का छार्जा २ १२ सेटीमीटर और छाजा से गुमटी २.८७ सेटीमीटर ऊँची है।

मार्ग

पाचवी मढिया से आकर यहाँ पहुँचने के लिए तीन सीढियाँ चढ़नी पडती है।

काल परिचय

इन छहो चरण लेखो मे विक्रम सम्वत् केवल आरम्भिक दो लेखो का शुद्ध है। शेष लेखो मे विक्रम सम्वत् २०२५ दिया गया है। अभिलेखो मे दिये गये मास, पक्ष, तिथि और दिन से तथा वीर निर्वाण सम्वत् और विक्रम सम्वत् के ४७० वर्ष के अन्तराल को ध्यान मे रखने से ज्ञात होता है कि अतिम चारो लेख किसी एक ही व्यक्ति ने उत्कीर्ण किये है और भ्रान्ति से उसी के द्वारा २०२४ के स्थान मे स० २०२५ उत्कीर्ण किया गया है। सभी चरण विक्रम संवत् २०२४ मे प्रतिष्ठापित हुए थे।

परिशिष्ट-१

कालक्रमानुसार अभिलेख संख्या-१४

क्रमांक	समय विक्रम संवत्	अभिलेख संख्या	योग
१	१०११	६/२३६, १०/२४०	२
२	११०६	२/१५६,	१
३	११३१	२/१००	१
४	११६३	११/२४१	१
५	११६६	११/२४२	१
६	११६६	११/२४३, ११/२४४, ११/२४५	३
७	१२००	११/२४६, ११/२४७, ११/२४८, ११/२४६	४
८	१२०२	११/२५०, ११/२५१, ११/२५२	३
६	१२०३	११/२५३ से ११/२६४ तक	१२
१०	१२०७	११/२६५ से ११/२७२ तक	८
११	१२०६	११/२७३ से ११/२८३ तक	११
१२	१२१०	११/२८४ से ११/२६२ तक	६
१३	१२११	११/२६३ से ११/२६५ तक	३
१४	१२१२	११/२६६ से ११/२६७ तक	२
१५	१२१३	११/२६८ से ११/३०६ तक	१२
१६	१२१४	११/३१०	१
१७	१२१६	११/३११ से ११/३१६	६
१८	१२२२	११/३२०	१
१६	१२२३	११/३२१	१
२०	१२२५	११/३२२, ११/३२३	२
२१	१२२८	११/३२४, ११/३२५, ११/३२६	३
२२	१२३७	१/१, ११/३२७ से ११/३३७ तक	१२
२३	१२४१	२/१०३	१
२४	१२८८	११/३३८	१
२५	१३२०	११/३३६, ११/३४०	२
२६	१३५२	२/१३०	१
२७	१५०२	२/११७, ६/२२६, ६/२३२, ७/२३५, ७/२३६	५
२८	१५२७	२/२६०	१

क्रमांक	समय विक्रम संवत्	अभिलेख संख्या	योग
२९	१५४८	२/१०२, २/१०४, २/१०६, २/११२, २/११४, २/११६, ३/२२०, ५/२२५, ११/३४१	९
३०	१६४२	२/२१५	१
३१	१६६९	२/१५७	१
३२	१६७१	२/१५६	१
३३	१६७६	२/१३८	१
३४	१६८३	२/२११	१
३५	१६८४	२/१६१	१
३६	१६८८	२/१४९	१
३७	१६९१	२/१३५	१
३८	१६९३	२/१२६	१
३९	१७११	२/१२८	१
४०	१७१३	६/२३३	१
४१	१७२०	२/२१२	१
४२	१७२५	२/१२७	१
४३	१७४२	२/२१०	१
४४	१७५१	२/१६९	१
४५	१७६१	२/१९५	१
४६	१७९१	२/१२५, २/१३१	२
४७	१८२६	५/२२६, ५/२२७	२
४८	१८३९	३/२२१	१
४९	१८५९	२/१३३, २/१३४, २/१८७, २/२०४, २/२०६, २/२०७	६
५०	१८६१	२/१५०, २/१७०, २/१७१	३
५१	१८६९	६/२३४	१
५२	१८८१	२/१८५	१
५३	१८९६	२/११६, २/१८४	२
५४	१९०३	२/१८६	१
५५	१९५८	२/१६२	१
५६	१९६६	२/१९४, २/२०५, २/२०८	३
५७	१९६७	२/१४४, २/१८८	२

क्रमांक	समय विक्रम संवत्	अभिलेख संख्या	योग
५८	१९८१	२/२०६	१
५९	१९९८	२/१५८	१
६०	२०११	२/१८०	१
६१	२०१४	१/३, २/१३६, २/१४३, २/१४६, २/१७२, २/१७४, २/१७७, २/१७६, २/१८१, २/१८३, २/१९२, २/१९३, २/१९७, २/१९८, २/१९९, २/२००, २/२०१, २/२०२, ३/२२२, ८/२३८	२०
६२	२०१७	२/१४८	१
६३	२०२१	२/१३७, २/२१३	२
६४	२०२३	५/२२८	१
६५	२०२४	१२/३४६, १२/३५०	२
६६	२०२५	२/२०३, १२/३५१, १२/३५२, १२/३५३, १२/३५४	५
६७	२०२६	२/१९१	१
६८	२०२७	१/७, १/९, १/१६, १/२१, १/२३, १/२६, १/३०, १/३२, १/३४, १/४१, १/४३, १/८१, १/८२, १/८४, १/८५, १/८६, १/८७, १/८९, १/९०, १/९७, १/९९, २/१७५, २/१७६	२३
६९	२०३०	१/४, १/५, १/६, १/८, १/१०, १/११ १/१२, १/१३, १/१४, १/१५, १/१७, १/१८, १/१९, १/२०, १/२२, १/२४, १/२५, १/२६, १/२७, १/२८, १/३१, १/३३, १/३५, १/३६, १/३७, १/३८, १/३९, १/४०, १/४२, १/४४ से १/८० तक, १/८३, १/८८, १/९१, १/९२, १/९३, १/९४, १/९५, १/९६, १/९८, २/१०६, २/११०, २/१३९, २/१४०, २/१४५, २/१४७, २/१७८, २/१८२, ७/२३७	८४
७०	२०३१	२/१४१, २/१७३	२
७१	२०३२	२/१०८	१
७२	२०३३	२/१४२	१
७३	२०३७	२/१०७	१
७४	२०४४	२/१६३, २/१६४	२
			३१२

क्रमांक	समय विक्रम संवत्	अभिलेख संख्या	योग
		काल रहित अभिलेख-क्रमांक	
		१/२, २/१०१, २/१०५, २/१११, २/११३, २/११५, २/११७, २/११८, २/१२०, २/१२१, २/१२२, २/१२३, २/१२४, २/१२६, २/१३२, २/१५१, २/१५२, २/१५३, २/१५४, २/१५५, २/१६५, २/१६६, २/१६७, २/१६८, २/१८६, २/१९०, २/१९९, २/२१४, २/२१६, २/२१८, २/२१९, ४/२२३, ५/२२४, ६/२३०, ६/२३१, ११/३४२, ११/३४३, ११/३४४, ११/३४५, ११/३४६, ११/३४७, ११/३४८	४२
		कुल अभिलेख	३५४

परिशिष्ट-२

अभिलेखाधार-सूची

क्र	नाम अभिलेखाधार	अभिलेख संख्या	योग
१	आदिनाथ-प्रतिमा	१/५, १/३२, २/१०२, २/१४१, २/१४४, २/१६४, २/१७६, २/१८१, २/१८७, ११/२४२, ११/२४५, ११/२४६, ११/२४८, ११/२५१, ११/२५२, ११/२५४, ११/२५७, ११/२६१, ११/२६२, ११/२६३, ११/२९८, ११/३००, ११/३०३, ११/३०८, ११/३१०, ११/३२१, ११/३२४, ११/३३१, ११/३३४, ११/३३९, ११/३४०, ११/३४६	३८
२	अजितनाथ-प्रतिमा	१/३३, ११/२५५, ११/२९१, ११/३४२, ११/३४५	५
३	संभवनाथ-प्रतिमा	१/३४	१
४	अभिनन्दननाथ-प्रतिमा	१/३५, २/१८६, ११/२८४, ११/३१६, ११/३३५ ११/३४८	६
५	सुमितनाथ-प्रतिमा	१/३६, २/१२१, ११/२५०, ११/२६८, ११/३०४, ११/३०६, ११/३३३	७
६	पद्मप्रभ-प्रतिमा	१/३७, ५/२२५, ११/२६६, ११/३४१	४
७	सुपार्श्वनाथ-प्रतिमा	१/३८, २/११६, ३/२२१	३
८	चन्द्रप्रभ-प्रतिमा	१/४, १/३९, २/१०५, २/१०८, २/१०९, २/१२२, २/१२५, २/१७१, ३/२२०, ५/२२६, ५/२२८, ११/२४९, ११/२६५, ११/२६६, ११/२८५, ११/३२०	१६

क्र	नाम अभिलेखाधार	अभिलेख संख्या	योग
९	पुष्पदन्त-प्रतिमा	१/४०, ११/२६७	२
१०	शीतलनाथ-प्रतिमा	१/४१, २/१७०	२
११	श्रेयासनाथ-प्रतिमा	१/४२	१
१२	वासुपूज्य-प्रतिमा	१/४३	१
१३	विमलनाथ-प्रतिमा	१/४४, ११/३१७	२
१४	अनन्तनाथ-प्रतिमा	१/४५	१
१५	धर्मनाथ-प्रतिमा	१/४६, ११/२४३, ११/२४४, ११/२८१	४
१६	शान्तिनाथ-प्रतिमा	१/१, १/६, १/४७, २/१०६, २/११०, २/११६, २/१७२, २/१७५, २/१७७, २/१७८, २/१७६, २/१८०, २/१८२, २/१८३, ५/२२७, ११/२४१, ११/२५८, ११/२७६, ११/३१२, ११/३१३, ११/३१८, ११/३३७	२२
१७	कुन्थुनाथ-प्रतिमा	१/२, १/४८, २/१७४, ११/२८०	४
१८	अरनाथ-प्रतिमा	१/३, १/४६, २/११४, ११/२७८	४
१९	मल्लिनाथ-प्रतिमा	१/५०	१
२०	मुनिसुव्रतनाथ-प्रतिमा	१/५१, ११/२४७, ११/३३८	३
२१	नमिनाथ-प्रतिमा	१/५२	१
२२	नेमिनाथ-प्रतिमा	१/७, १/५३ ११/२७३, ११/२८३, ११/३११, ११/३२५, ११/३३०, ११/३४७	८
२३	पार्श्वनाथ-प्रतिमा	१/५४, २/१०४, २/११२, २/११९, २/१२६, २/१२७, २/१२८, २/१३०, २/१३१, २/१४५, २/१४६, २/१५०, २/१५१, २/१८४, २/१८५, ६/२२६, ६/२३०, ६/२३१, ६/२३२, ६/२३३, ६/२३४, ७/२३५, ७/२३६	२३
२४	महावीर प्रतिमा	१/५५, २/१००, २/१०७, २/१२०, २/१२३, २/१२६, २/१३७, २/१३८, २/१३६, २/१४०, २/१४२, २/१४३, २/१७३, ३/२२२, ७/२३७, ११/२६३, ११/२७२, ११/२७६, ११/२७७, ११/२८६, ११/२८७, ११/२६५, ११/३०१, ११/३०२, ११/३०५, ११/३०७, ११/३१५, ११/३२३, ११/३२६, ११/३३२, ११/३४३, ११/३४४	३२
	उत्तरी मानस्तम्भ	२/२३६	१

क्र.	नाम अभिलेखाधार	अभिलेख संख्या	योग
	दक्षिणी मानस्तम्भ	१०/२४०	१
	चौबीसी	२/१३३	१
	त्रिमूर्ति (रत्नत्रय)	२/१३४,२/१५८,२/१५९,२/१६५,२/१६७,२/१६८	६
	सिद्ध-प्रतिमा	२/१४६, २/१४७, २/१४८	३
	पच वालयति-प्रतिमा	२/१६०, २/१६६	२
	मेरु	२/१६१, २/१६२, २/१८८	३
	बाहुबली-प्रतिमा	८/२३८	१
	वेदिका	११/३०९	१
	शासनदेवी-प्रतिमा	११/३१९	१
	मदन केवली चरण	१२/३४९	१
	विष्कम्वल केवली चरण	१२/३५०	१
	शान्तिनाथ तीर्थकर चरण	१२/३५१	१
	मल्लिनाथ तीर्थकर चरण	१२/३५२	१
	आदिनाथ तीर्थकर चरण	१२/३५३	१
	महावीर-तीर्थकर चरण	१२/३५४	१

परिशिष्ट-३

अन्वय अभिलेख सूची

क्रमांक	अन्वय नाम	सन्दर्भ				कुल
		विक्रम संवत्	लेख संख्या	विक्रम संवत्	लेख संख्या	
१	अग्रोत्कान्वय	१५०२	२/२१७	२०३०	१/८०	५
	(अग्रवाल)	२०२७	१/९, ३०, ८७			
२	अवधपुरान्वय	१२१४	११/३१०	१२३७	११/३३४	३
		१२१६	११/३१९			
३	कुटकान्वय	१२१३	११/३०१	१२१६	११/३१३,	
					११/३१५	३
४	खडिलवा-	१२०७	११/२६८	१७५१	२/१६९	
	लान्वय	१२१६	११/३११	२०३०	१/४९,८८, ९३	९
		१२२३	११/३२१			
		१२३७	११/३३२, ३३३			
५	गर्गराटान्वय	११९९	११/२४३, २४४			२
६	गोलापूर्वान्वय	१२०२	११/२५१	२०१४	२/१४६, १७२,	
					१७४, १७९,	

क्र मा क	अन्वय नाम	सन्दर्भ				कुल
		विक्रम संवत्	लेख संख्या	विक्रम संवत्	लेख संख्या	
		१२०३	११/२५४, २६१		१८१, १८३	
		१२०९	११/२७८, २७९,		८/२३८,	
			२८०	२०१७	२/१४८	
		१२१३	११/३०२, ३०३,	२०२३	५/२२८	
			३०५	२०२७	१/२९, ३२, ४३	
		१२२८	११/३२४		८६, ९७	
		१२३७	११/३२८, ३३०,		२/१७५, १७६	
			३३१	२०३०	१/४, ५, ६, ८,	
		१२८८	११/३३८		१०, ११, १२, १३,	
		तिथिरहित	११/३४८		१४, १५, १७, १८,	
		१६९१	२/१३५		१९, २०, २२, ३३,	
		१७२०	२/२१२		३६, ३७, ४६, ५०	
		१८३९	३/२२१		५३, ५४, ५५, ५६,	
		१८५९	२/१३३, १३४,		५७, ५८, ५९, ६०,	
			२०४, २०६, २०७		६१, ६२, ६३, ६४,	
		१८६१	२/१७०		६६, ६७, ६८, ७१	
		१८९६	२/११६		७३, ७५, ७८, ७९,	
		१९०३	२/१८६		८३, ९४, ९८,	
		२०११	२/१८०		२/१४०, १४७, १८२	
		२०३२	२/१०८		७/२३७	
		२०३७	२/१०७	२०३१	२/१७३	
		२०४४	२/१६३	२०३३	२/१४२	९६
		२५०१	२/१४१			
७	गोलाराडान्वय	१२३७	११/३२९	२०३०	१/३५, ४०, ७०,	
		२०२७			९५, ९६	८
				२०३७	१/३४, ९९	
८	गृहपत्यन्वय	१२०७	११/२६५, २६६	१२१३	११/३०४, ३०९	
			२६९, २७१,	१२१६	११/३१८	
			२७२	१२३७	१/१, ११/३३७	
		१२०९	११/२७४, २८३	तिथि	११/३४४	१५
		१२१०	११/२८९, २९२	रहित		

क्रमांक	अन्वय नाम	सन्दर्भ				कुल
		विक्रम संवत्	लेख संख्या	विक्रम संवत्	लेख संख्या	
९	जयसवालान्वय	१२०९	११/२७६	१२०३	११/२५६,२५९,	
					२६०	
	जयसिवालान्वय	१२०७	११/२६७	१२११	११/२९३	
		१२०९	११/२७५	१२१६	११/३१२, ३१४	
	जायसवालान्वय	१२१०	११/२९१	१२२८	११/३२५	
	जैसवालान्वय	१२००	११/२४६	२०२७	१/७	१४
१०	परवरान्वय	१२०२	११/२५२			
	परवडान्वय	११९६	११/२४२,			
		तिथि रहित	११/३४६,			
	परवार	१६८३	२/२११ यत्र लेख	२०३०	१/२४, २५, २६,	
		१८६१	२/१७१		२७, २८, ३१	
		१९९८	२/१५८		३८, ३९, ४२,	
		२०१४	२/१७७, ३/२२२		४४, ४५, ४७	
		२०२७	१/१६, २१, २३,		४८, ५१, ६५	
			८१,८२, ८४,		६९, ७२, ७४	
			८५, ८९, ९०,		७६, ७७, ९१, ९२	
	पुरवाडान्वय	११९९	११/२४५	२/१०६	११०, १४५,	४३
११	पौरपाटान्वय	१२००	११/२४९	१२१०	११/२८४,	५
		१२०७	११/२७२		२९०,	
		१२०९	११/२८१			
१२	मडदेवालन्वय	१२०३	११/२६४			
	मेडत्वालान्वय	१२०९	११/२७३			
	मइडतवलान्वय	१२१०	११/२८६			
	मेडतवाल वंश	१२१०	११/२८७			४
१३	माथुरान्वय	१२०३	११/२६२	१२११	११/२६५	
		१२०९	११/२७७	१२१३	११/३००	४
१४	लवकचुकान्वय	१२०२	११/२५०	१७६१	२/१६५	३
		१२१०	११/२८५			
१५	वलार्गणान्वय	१२२८	११/३२६			१
१६	वैश्यान्वय	१२०३	११/२५७			१

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारजी
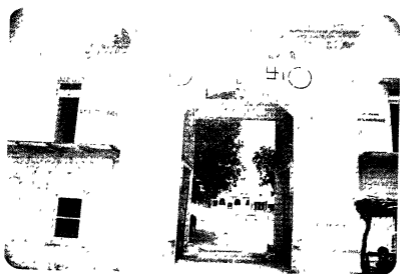
मुख्यपूर्व दरवाजा

श्री शान्तिनाथ मादर
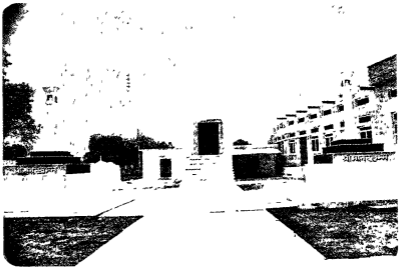
श्री बाहुबली मदिर एव मानस्तभ
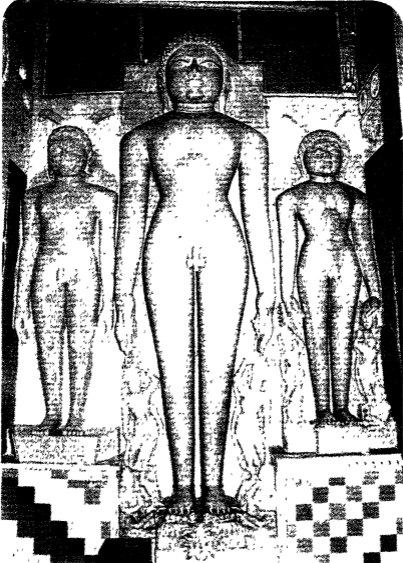
श्री भगवान शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ

सग्रहालय एव मेरू मदिर

पच पहाडी

चन्द्रप्रभ मंदिर नं० ५

पार्श्वनाथ मंदिर नं० ६

महावीर मंदिर नं० ३

प्राचीन वेदिका
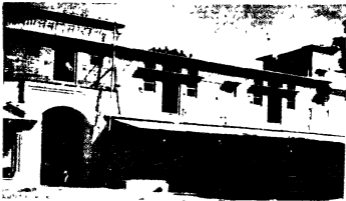
सरस्वतीसदन एवं रथघर
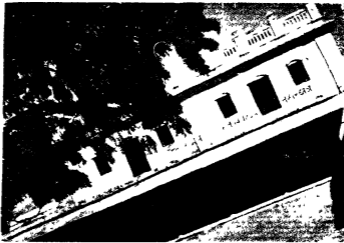
शान्तिनाथ विद्यालय

भगवान् बाहुबली

मदनसागर सरोवर

प्राचीन मूर्ति
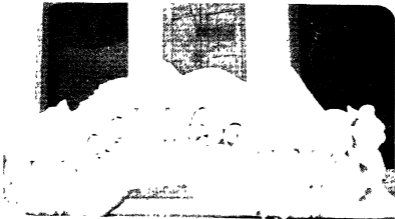
प्राचीन मूर्ति

विद्यालय एव छात्रावास के कमरे

पूर्व के दरवाजे के पास के कमरे तथा दक्षिण दरवाजे के पास के कमरे

धर्मशाला कुएँ के पास

धर्मशाला के कमरे गेट के पास

श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन विद्यापीठ

निर्माणाधीन प्रवचन हाल